शुक्रिया! शायरी

(रमेश 'कँवल' के काव्य सौन्दर्य पर कला पारखी विद्वानों की कृपा वृष्टि)

कुमार अभिषेक

श्वेतवर्णा प्रकाशन

नई दिल्ली

Published by Shwetwarna Prakashan in Hindi in Paperback as *Shukriya! Shayari (Commentaries on the Poetry of Ramesh 'Kanwal' by Laurets)* (First Edition) Authored by *Kumar Abhishek* in the year 2026.

Shwetwarna Prakashan
212 A, Express View Apartment
Super MIG, Sector 93, Noida-201304, INDIA
Mobile: +91 8447540078
Email: shwetwarna@gmail.com
Website: www.shwetwarna.com

Copyright © *Kumar Abhishek*

ISBN: 978-93-49947-**-*

Views and opinions expressed in this work are author's own and the facts are reported by the author and the publisher is in no way liable for the same.

All rights reserved.

Book Design by *Sharda Suman*

No part of this book may be reproduced, or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without express written permission of the author.

मेरी भतीजी **आश्वी व्याहुत** (जन्म 10 जनवरी, 2025) के नाम

सभ्यता द्वार, पटना

राम मंदिर अयोध्या में 25 नवंबर, 2025 को
यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा ध्वजारोहण

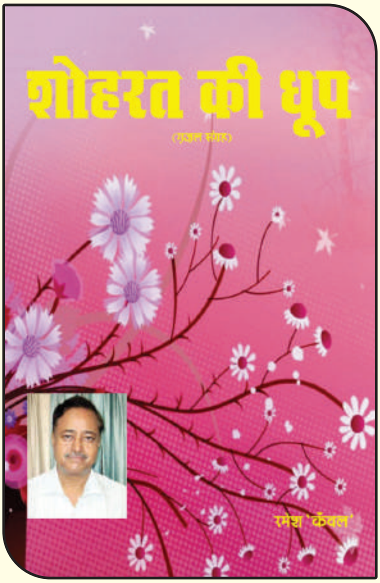
शोहरत की धूप
रमेश 'कंवल'

सावन का कंवल
रमेश 'कंवल'

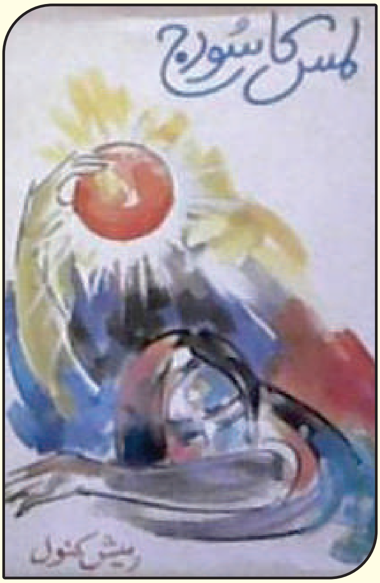
لمس کا سورج
رمیش کنول

स्पर्श की चाँदनी
रमेश कँवल

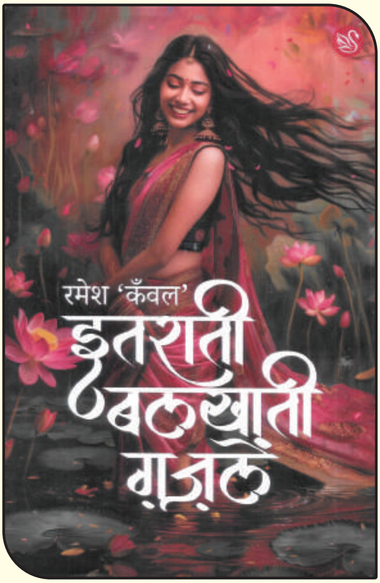
रमेश 'कँवल'
इतराती बलखाती ग़ज़लें

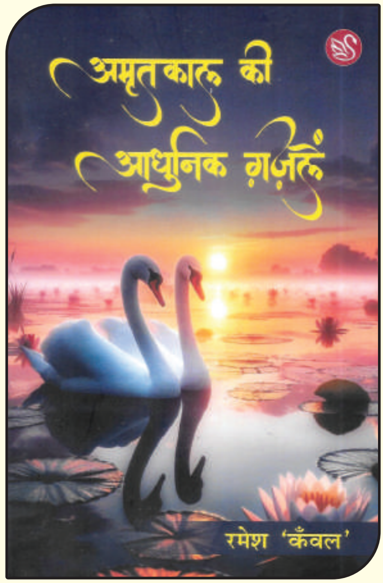
अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें
रमेश 'कँवल'

एक रुक्नी
अनूठी ग़ज़लें
संकलन, संपादन एवं प्रस्तुति
रमेश 'कँवल'

2020
की नुमाइंदा ग़ज़लें
संकलन, संपादन एवं प्रस्तुति
रमेश 'कँवल'

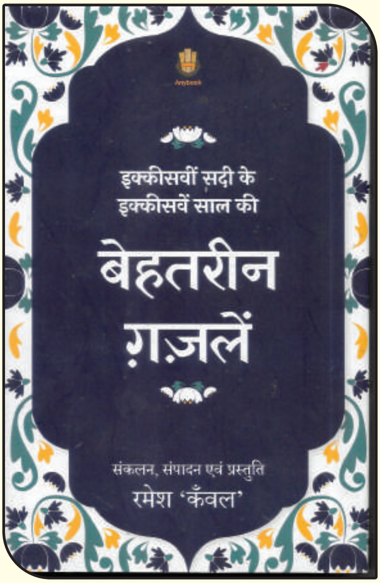
Anybook
इक्कीसवीं सदी के
इक्कीसवें साल की
बेहतरीन
ग़ज़लें
संकलन, संपादन एवं प्रस्तुति
रमेश 'कँवल'

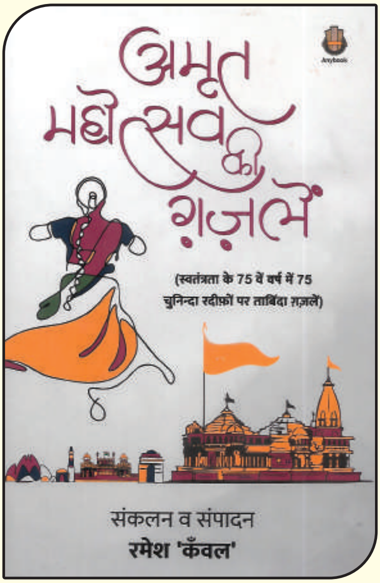
Anybook
अमृत महोत्सव की ग़ज़लें
(स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष में 75
चुनिन्दा रदीफ़ों पर ताबिंदा ग़ज़लें)
संकलन व संपादन
रमेश 'कँवल'

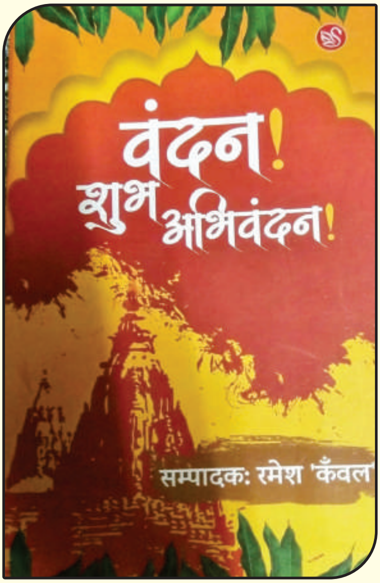
वंदन!
शुभ अभिवंदन!
सम्पादक: रमेश 'कँवल'

2024
की
दिलकश
ग़ज़लें
संपादक:
रमेश 'कँवल'

कुमार अभिषेक

रमेश 'कँवल'

नीरज गोस्वामी

अनवारे इस्लाम

विजेन्द्र शर्मा

डॉ. अमरेन्द्र

डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगान

सागर सियालकोटी

अनिरुद्ध सिन्हा

डॉ. दरवेश भारती

अरुण कुमार आर्य

विज्ञान व्रत

देवेन्द्र मांझी

डॉ. भावना

शुचि 'भवि'

डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'

हिमकर श्याम

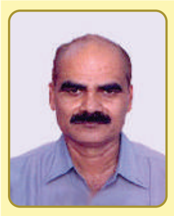
ऋषिपाल धीमान ऋषि

विजय स्वर्णकार

राजमूर्ति 'सौरभ'

डॉ. सीमा विजयवर्गीय

भगवती प्रसाद द्विवेदी

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

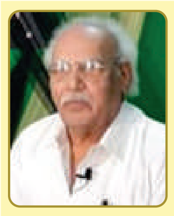
डॉ. कृष्ण कुमार 'बेदिल'

भूपेंद्र सिंह 'होश'

शरद तैलंग

द्विजेन्द्र द्विज

कृष्ण कुमार प्रजापति

आमुख

रमेश 'कँवल' ग़ज़ल व्योम के देदीप्यमान सितारे हैं। वे भावनाओं की शस्य श्यामला वसुंधरा से जुड़े रहकर अपनी चमक बिखेरने में विश्वास करते हैं। उनकी ग़ज़लों के 6 खूबसूरत ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने देश के विभिन्न राज्यों के प्रतिष्ठित ग़जलकारों के 6 ग़ज़ल संग्रह का सम्पादन भी किया है। जहाँ 'एक रुकनी अनूठी ग़ज़लें' ग़ज़ल के क्षेत्र में उनकी प्रयोगधर्मिता का दस्तावेज़ है वहीं 'वंदन! शुभ अभिवंदन !' सनातन आस्थाओं में उनके दृढ़ संकल्प को उजागर करता विभिन्न देव शक्तियों को निवेदित भक्ति भावनाओं अल्बम है।

रमेश 'कँवल' की प्रकाशित किताबों में विभिन्न कला पारखी विद्वानों ने उनके काव्य सौन्दर्य पर अपनी कृपा वृष्टि की है। उनके काव्य सौष्ठव की प्रशंसा में लिखी गई कमनीय विवेचना एवं क्रमबद्ध आलोचनात्मक आलेख ग़ज़लों के प्रगति मानक परिवर्तनशील संसार में रमेश 'कँवल' के स्थान का निर्धारण और उनकी ग़ज़लीयत श्रेष्ठता का पता देते हैं। यही आलेख इस पुस्तक में शामिल हैं।

कुमार अभिषेक

A-1601, कुमार प्रोस्पेरा,

मगरपट्टा रोड, हडपसर, पुणे-411028

मोबाईल 70456 58003

निवेदन

मेरे काव्य-सृजन पर विद्वानों की कृपा दृष्टि ने मुझे सदैव उत्साहित किया है। उनकी समीक्षाओं और विचारों ने मेरी रचनात्मकता को नई ऊर्जा दी है। इस पुस्तक में उन्हीं विद्वानों की लेखनी से प्राप्त मूल्यवान टिप्पणियों और समीक्षाओं का संकलन प्रस्तुत है। मेरा उद्देश्य है कि पाठक मेरे काव्य सौन्दर्य को केवल मेरी दृष्टि से ही नहीं, बल्कि विद्वानों की दृष्टि से भी देखें और समझें।

मैं मानता हूँ कि शायरी एक सतत साधना है और मुझे अभी बहुत कुछ सीखना और निखारना है। यह पुस्तक उसी यात्रा का एक पड़ाव है, जिसमें मेरे काव्य सौन्दर्य के साथ-साथ विद्वानों की रंगीन छवियाँ और मेरी पुस्तकों के कवर पृष्ठ भी सम्मिलित हैं।

आशा है कि यह संकलन पाठकों को आनंद और प्रेरणा देगा।"

इति शुभम्

पटना — **रमेश 'कँवल'**

कार्तिक शुक्ल 11, संवत 2082, — मोबाईल: 878 976 1287

देवोत्थान एकादशी, — e-mail: rameshkanwal78@gmail.com

दिनांक: 1 नवंबर, 2025 — website: www.rameshkanwal.com

अनुक्रम

❖ आमुख 11

❖ निवेदन 12

शोहरत की धूप

1. गौहरे-नायाब है-रमेश कँवल की शायरी: नीरज गोस्वामी 18
2. फ़नो-फ़िक्र की पाकीज़गी का शाइर-रमेश कँवल: अनवारे इस्लाम 25
3. रूमानियत की ख़ुशबू से लबरेज़ है शोहरत की धूप: विजेन्द्र शर्मा 29
4. शोहरत की धूप में मसरूफ़ियत का सफ़र: रमेश 'कँवल' 32

सावन का कँवल

5. 'कँवल' शख़्सियत और शायरी: डॉ. अमरेन्द्र 36
6. लम्स की ख़ुशबू सावन का कँवल: डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी 47

लम्स का सूरज

7. पेश लफ़्ज़: डॉ. लुत्फ़-उर-रहमान 68
8. दुख की मीठी आँच का शायर-रमेश 'कँवल': प्रो. (डॉ) मनाज़िर आशिक़ हरगानवी 74

स्पर्श की चाँदनी

9. स्पर्श की चाँदनी में रमेश 'कँवल' की शख़्सीयत और उनका कमाले-फ़न: सागर सियालकोटी 81
10. रमेश कँवल की ग़ज़लों की थपकियाँ सुला देने वाली नहीं होतीं: अनिरुद्ध सिन्हा 84

11. स्पर्श की चाँदनी-अरूज़ की कसौटी पर कसी हुई ग़ज़लें:
डॉ. दरवेश भारती 87
12. यारों के यार हैं रमेश कँवल-अरुण कुमार आर्य: रमेश कँवल की नज़्र 88
13. स्पर्श की चाँदनी का इसरार: रमेश कँवल 90

इतराती बल खाती ग़ज़लें

14. ग़ज़लगोई मात्र लफ़्फ़ाज़ी या तुकबंदी नहीं है: विज्ञान व्रत 96
15. लुभाती और गुदगुदाती ग़ज़लें: देवेन्द्र मांझी 103
16. सहज, सरल और नायाब ग़ज़लों का गुलदस्ता है
"इतराती बलखाती ग़ज़लें": डॉ. भावना 106
17. क़ाफ़ियों के पहरे में शे'रियत बरसती है ग़ज़ल संग्रह-
"इतराती बलखाती ग़ज़लें" दिबाचा: शुचि 'भवि' 111
18. जो भी देखा वो ही लिक्खा: डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़' 115
19. लुभाती हैं रमेश कँवल की 'इतराती बलखाती ग़ज़लें':
हिमकर श्याम 116
20. 'इतराती बलखाती ग़ज़लें'-परिचय: ऋषिपाल धीमान ऋषि 120
21. फ़ोन पर खैरियत पूछ ली: रमेश 'कँवल' 127

अमृत काल की आधुनिक ग़ज़लें

22. अमृतकाल के सत्य की साक्षी ग़ज़लें: विजय स्वर्णकार 130
23. आधुनिक भावबोध की ग़ज़लें, नज़्में और गीत: राजमूर्ति 'सौरभ' 136
24. सामाजिक सरोकारों की पहरेदारी: डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़' 140
25. बुनियाद पड़ रही है प्राचीन सभ्यता की: रमेश कँवल 145
26. अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें-समीक्षा: डॉ. सीमा विजयवर्गीय 148

27. दृष्टिसम्पन्नता व सकारात्मक सोच की द्योतक ग़ज़लें:
भगवती प्रसाद द्विवेदी 158

एक रुकनी अनूठी ग़ज़लें

28. एक रुक्नी अनूठी ग़ज़लें: डॉ. ब्रह्मजीत गौतम 160

2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें

29. '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' यानी हमने तो दिल जलाकर
सरेआम रख दिया: नीरज गोस्वामी 165

30. '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें': डॉ. ब्रह्मजीत गौतम 168

31. 21वीं सदी के 21वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें मनोयोग से
परिपूर्ण ग़ज़लों का संकलन: डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़' 174

अमृत महोत्सव की ग़ज़लें

32. कुछ नया कर दिखाने का सफल प्रयास: डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़' 179

33. अमृत महोत्सव का ऐतिहासिक दस्तावेज़: डॉ. कृष्ण कुमार 'बेदिल' 182

34. शायरी के फ़न पर मुहब्बत के बूटे: अनिरुद्ध सिन्हा 185

35. अमृत महोत्सव की ग़ज़लें: भूपेंद्र सिंह 'होश' 188

36. एक संग्रहणीय दस्तावेज़: शरद तैलंग 190

वंदन! शुभ आभिवंदन!

37. सनातन संस्कृति के आधार देवी-देवताओं को नमन:
डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़' 193

38. अटल अविचल आस्था की अनन्य अभिव्यक्तियाँ: द्विजेन्द्र द्विज 196

39. एक अनोखा अद्भुत कार्य: कृष्ण कुमार प्रजापति 199

40. वंदन! शुभ अभिवंदन!! प्राक्कथन 200

2024 की दिलकश ग़ज़लें

41. दिलकश ग़ज़लों का अनुपम संकलन: हिमकर श्याम 204

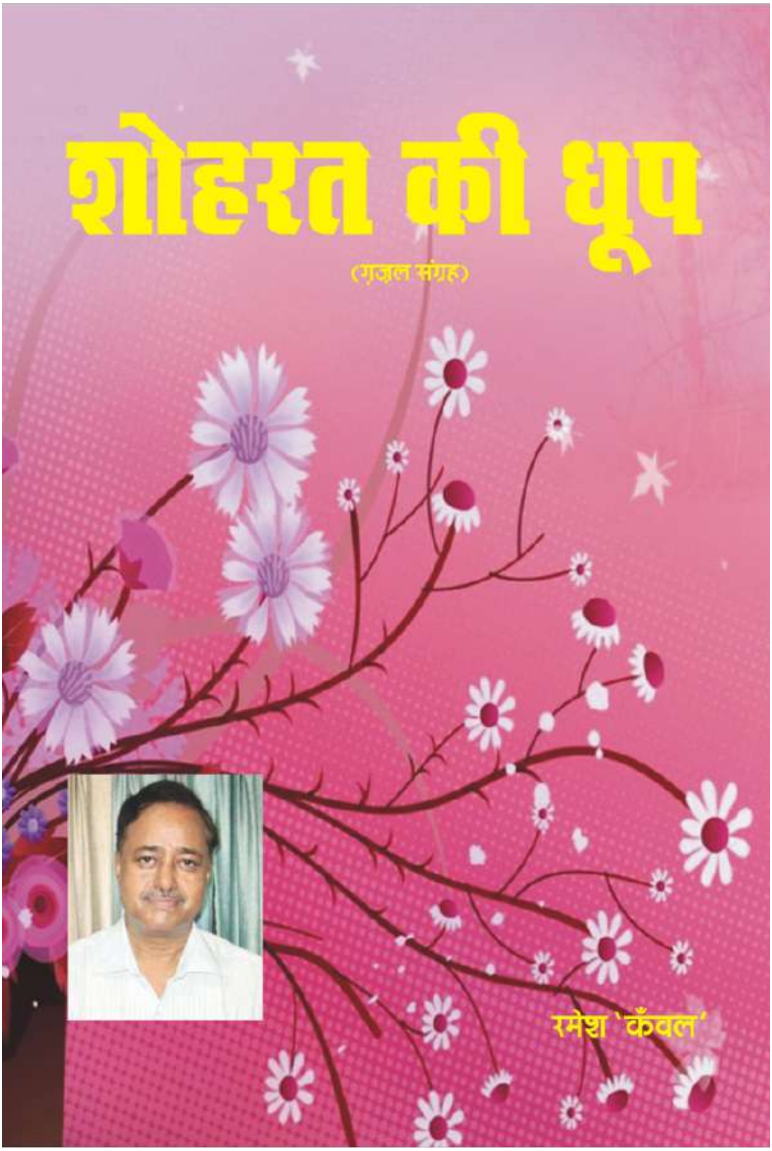
शोहरत की धूप
(ग़ज़ल संग्रह)
रमेश 'कँवल'

गौहरे-नायाब है-रमेश कँवल की शायरी: नीरज गोस्वामी

मैं समंदर हूँ मुझको नदी चाहिए
ज़िन्दगी में मुझे भी ख़ुशी चाहिए

तेरी ख़ुशबू, तेरे जिस्म का नूर हो
बंद कमरे में बस तीरगी चाहिए

आशना थे जो उनका करम यूँ हुआ
दिल कहे अब तो बस अजनबी चाहिए

मेरे होंटों की नैया मचलने लगे
तेरे गालों की ऐसी नदी चाहिए

बहुत कम किताबें ऐसी होती हैं जो रुमानियत की ख़ुशबू से लबरेज़ हों और जिन्हें बार बार पढ़ने को जी करे। आज "किताबों की दुनिया" श्रृंखला की इस कड़ी में हम एक ऐसी ही किताब का ज़िक्र करेंगे जिसमें रवायती और जदीद ग़ज़ल के बीच का फ़ासला बहुत हद तक कम करने की कामयाब कोशिश की गयी है। ये किताब है "शोहरत की धूप" और जिसके हुनरमंद शायर हैं जनाब "रमेश कँवल"।

इक नशा सा ज़हन पर छाने लगा
आपका चेहरा मुझे भाने लगा

चांदनी बिस्तर पे इतराने लगी
चाँद बाँहों में नज़र आने लगा

रूह पर मदहोशियाँ छाने लगीं
जिस्म ग़ज़लें वस्ल की गाने लगा

रफ़्ता रफ़्ता यासमीं खिलने लगी
मौसमे-गुल इश्क़ फ़रमाने लगा

25 अगस्त 1953 को जितौरा, पीरो, आरा, बिहार में जन्मे जनाब रमेश कँवल को ग़ज़ल कहने का शौक बचपन से है, फ़िल्मी गानों से प्रभावित हो कर उनमें गीत लिखने की इच्छा हुई जो ग़ज़ल लिख कर पूरी हुई। बेरोज़गारी के दिनों में, लोक सेवा आयोग के इंटरव्यू के दौरान एक मेंबर ने जब उनसे उनका शग़ल पूछा तो जवाब में उन्होंने अपना ये शे'र पढ़ दिया:-

अब तक न मिली नौकरी कोई भी कँवल को
हाथों की लकीरों के अजब ठाट रहे हैं

इस शे'र की बदौलत मेम्बर्स ने वाह वाही के साथ साथ उनकी हाथों की वो लकीरें भी बदल दीं जिनमें नौकरी मिलना नहीं लिखा था। शायरी की बदौलत नौकरी पाने वाले विरले लोगों में से एक हैं रमेश कँवल साहब। प्रखंड विकास पदाधिकारी से शुरू डिप्टी कलक्टर का उनका सफ़र अपर जिला दंडाधिकारी की बुलंदियों तक जा पहुँचा। समस्त प्रशाशनिक ज़िम्मेवारियाँ निभाते हुए भी उनका शायरी प्रेम यथावत रहा।

रूठ जाने का कोई वक़्त नहीं
पर मनाने में वक़्त लगता है

ज़िद का बिस्तर समेटिये दिलबर
घर बसाने में वक्त लगता है

आज़मा मत भरोसा कर मुझ पर
आज़माने में वक्त लगता है

जनाब 'अनवारे इस्लाम' साहब ने किताब की भूमिका में कँवल साहब की शायरी के बारे में बहुत सटीक बात की है वो कहते हैं कि "कँवल के यहाँ ऐसा क़त'ई नहीं लगता कि उन्होंने शौक़िया ग़ज़लें कही हैं बल्कि उनके यहाँ एक फ़िक्र है और उसे व्यक्त करने का उनका अपना तरीक़ा है जिसे वे शे'र के ढांचे में सलीक़े से ढाल देते हैं जो इस बात की अलामत है कि वे ग़ज़ल की न केवल समझ बल्कि अच्छी पकड़ भी रखते हैं।

गर तेरी बंदगी नहीं होती
ज़िन्दगी ज़िन्दगी नहीं होती

बात क्या है कि आजकल मुझको
तुझसे मिल कर ख़ुशी नहीं होती

हाय बेचारगी-ओ-मज़बूरी
जो करूँ बंदगी नहीं होती

कितना दुश्वार है ये फ़न यारो
शायरी दिल्लगी नहीं होती

"शोहरत की धूप "में रिवायती लबो लहजा से परहेज़ तो नहीं किया गया है, लेकिन जदीद अंदाज़ में नई उपमाओं और बिम्बों को पेश करने की कोशिश की गयी है, ऐसी उपमाएँ और बिम्ब जो आसानी से हमें कहीं और पढ़ने को नहीं मिलते मसलन "रिश्वत की अप्सरा", "क़हक़हों के ट्यूब", "ख़ुशबुओं की मंडी", "ज़िद का बिस्तर", "शोहरत की शहज़ादी", होटों की नैया", "जिस्म के अशआर", "बेबसी की धुंध", "बेरोज़गारी की सुलगती रेत", "यादों का टेप", अहसास की तितलियाँ", "लम्हों की दीवार", आदि आदि।

हर पल संवरने सजने की फ़ुर्सत नहीं रही
अब मुझको आईने की ज़रुरत नहीं रही

अब मुन्तज़िर नहीं हूँ मैं खिड़की से धूप का
अच्छा है मेरे सर पे कोई छत नहीं रही

उसके बदन की गंध मुझे भा गयी 'कँवल'
अब ख़ुशबुओं की मंडी की चाहत नहीं रही

रमेश कँवल साहब हिंदी के ऐसे शायर हैं जिनकी पहली ग़ज़लों की किताब उर्दू लिपि में 'लम्स का सूरज ''शीर्षक से सन 1997 में शाया हो कर बहुत मक़बूल हुई। उसके एक साल बाद हिंदी में उनकी दूसरी किताब ''सावन का कँवल ''प्रकाशित हुई। उर्दू और हिंदी जबान पर उनकी पकड़ क़ाबिले दाद है. उनकी शायरी को संवारने में उनके उस्ताद जनाब 'वफ़ा' सिकन्दरपुरी, जनाब प्रोफ़ेसर हफ़ीज़ बनारसी साहब मरहूम और प्रोफ़ेसर तल्हा रिज़वी बर्क़ दानापुरी साहब का बहुत बड़ा हाथ रहा। जनाब डाक्टर मनाज़िर आशिक़ हरगान्वी साहब की कोशिशों से ही उनकी दोनों किताबें मंज़रे-आम पर आ सकीं।

गौहरे-नायाब[1] है और कुछ नहीं
ज़िन्दगी इक ख़्वाब है और कुछ नहीं

मछलियों पर खिलखिलाती चाँदनी
हमनवा[2] तालाब है और कुछ नहीं

जिस्म की हर शाख पर अठखेलियाँ
जुर्रते-महताब[3] है और कुछ नहीं

---

1 दुर्लभ मोती
2 हमसफ़र, समान विचार वाला
3 चाँद की धृष्टता

तेरे मिलने का हसीं, मंज़र 'कँवल'
सुब्ह का इक ख्वाब है और कुछ नहीं

बिहार हिंदी साहित्य सम्मलेन, पटना से 'साहित्य भूषण', साहित्यकार संसद समस्तीपुर से 'फ़िराक गोरखपुरी राष्ट्रीय शिखर सम्मान, भागलपुर से दुष्यंत कुमार स्मृति पुरस्कार सहित अनेक संस्थानों से सम्मानित रमेश कँवल साहब की ग़ज़लें प्रकाश पंडित और मंसूर उस्मानी साहब द्वारा संपादित क्रमश: 'रंगारंग शायरी' और 'ग़ज़ल इंटरनेशनल' शीर्षक किताबों में सम्मिलित हैं। उनकी ग़ज़लें अनेक हिंदी उर्दू अख़बारों और रिसालों में भी शामिल होती रही हैं। आकशवाणी एवं दूरदर्शन पटना तथा भागलपुर से भी उनकी ग़ज़लें प्रसारित हुई हैं।

तुम्हारे जिस्म के अशआर मुझको भाते हैं
मेरी वफ़ा की ग़ज़ल तुम भी गुनगुनाया करो

बहुत अँधेरा है बिजली भी फ़ेल है दिल की
मुहब्बतों का दिया ले के छत पे आया करो

शरीफ़ज़ादों की बेजा ख़ताओं से मिलने
यतीमख़ानों के बच्चों बीच जाया करो

अपनी दूसरी किताब "सावन का कँवल" के लगभग सोलह साल बाद अपनी शरीके हयात को मंसूब की गयी "शोहरत की धूप" रमेश कँवल साहब की तीसरी किताब है जिसमें उन्होंने अपनी कुछ पुरानी ग़ज़लों के साथ साथ जो सावन का कँवल में शाया हुई थीं, नयी ग़ज़लों को भी शामिल किया है। इस संकलन में रमेश जी की 101 ग़ज़लों के अलावा उनके कुछ लाजवाब माहिए और गीत भी शामिल हैं जिन्हें पढ़ कर हमें उनकी बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभा का पता चलता है। पोस्ट की लम्बाई की सीमा आड़े आ रही है वरना इस किताब की लगभग सभी ग़ज़लें आप तक पहुँचाने का मन हो रहा है।

ज्वालामुखी क़हर ढाते रहे
नदी पर्वतों से निकलती रही

वरक़ दर वरक़ मैं ही रोशन रहा
वो अलबम पे अलबम बदलती रही

किसी दस्तख़त की करामात थी
मेरी ज़िन्दगी हाथ मलती रही

हवस की निगाहें ख़रीदार थीं
पकौड़ी वो मासूम तलती रही

'शोहरत की धूप' को 'पहले पहल प्रकाशन' 25 ए, प्रेस काम्प्लेक्स, भोपाल ने प्रकाशित किया है। किताब की प्राप्ति के लिए आप पहले पहल प्रकाशन से उनके फ़ोन न 0755-2555789 पर संपर्क कर सकते हैं। श्रेष्ठ तो ये रहेगा कि आप रमेश जी को उनके मोबाईल 09334111547 पर संपर्क कर इन लाजवाब ग़ज़लों के लिए बधाई दें और फिर किताब प्राप्ति का आसान रास्ता पूछें। किसी भी शायरी प्रेमी की लाइब्रेरी में रखी ये किताब अलग से जगमगाती हुई नज़र आएगी।

अगली किताब की तलाश में निकलने से पहले हम आईये आपको उनकी ग़ज़ल के चंद अशआर पढ़वाते हैं:-

मैं सियासत की बेईमान गली
और रिश्वत की अप्सरा तुम हो

गालियों में तलाशता हूँ शहद
राजनीति का ज़ायक़ा तुम हो

चौक पर की बहस चौके में
सेक्युलर मैं हूँ, भाजपा तुम हो

फ़स्ले-बेरोज़गारी हैं दोनों,
मैं हूँ स्कूल, शिक्षिका तुम हो

तुम से शौकत, तुम्हीं से है शोहरत
मैं ग़ज़ल हूँ, मुशायरा तुम हो

फ़नो-फ़िक्र की पाकीज़गी का शाइर-रमेश कँवल: अनवारे इस्लाम

एक अच्छा शे'र हमें बहतर दुनिया के ख़्वाब दिखाकर तामीरे-नौ (नव निर्माण) का जज्बा पैदा करता है और एक होशमंद शाइर अपने तख़्लीक़ी शऊर (रचनात्मक चेतना) से अपनी निजी फ़िक्र को विस्तार देकर शे'र को सामूहिक एहसास में बदल देता है। उसके शे'र हमें चौंकाते या हमारे ज़ेहन पर हमला नहीं करते बल्कि हमारे दिलो-दिमाग़ में उतरकर अपने ऐतिमाद में ले लेते हैं और ऐसे हालात में शाइर की फ़िक्र हमारे एहसास से हम आहंग होकर नई फ़िक्री तहरीक (आन्दोलन) को जनम देती है। दुनिया में आने वाली तब्दीलियों से शाइरी या कविता कभी अप्रभावित नहीं रही और न ही रह सकती है। हर संजीदा रचनाकार के यहाँ हर सतह पर उसकी सोच के साथ भाषा, लहजा, प्रतीक और इशारे सभी में वक़्त के अनुरूप तब्दीलियों का आना स्वाभाविक भी है। क्योंकि उसके यहाँ ज़िन्दगी की केन्द्रीय सच्चाईयाँ शे'र के साँचे में ढलकर जीवन की नदी को प्रवाहमान बनाती हैं। और ग़ज़ल की इस बहती हुई नदी में तैराक तो बहुत उतरे हुए हैं और अपनी कश्तियों को, नाहमवार मौसम के थपेड़ों का शानदार मुक़ाबिला करते हुए कामयाबी के साथ रवाँ-दवाँ किये हुए हैं। ऐसे ही लोगों की फ़ेहरिश्त में एक शानदार शाइर का नाम बड़ी आसानी से लिया जा सकता है जिसे हम रमेश 'कँवल' के नाम से सुनते और पढ़ते रहते हैं।

आपका नाम रमेश प्रसाद और साहित्यिक नाम रमेश 'कँवल' है। आपकी पैदाइश 25 अगस्त, 1953 को क़स्बा जितौरा जिला आरा (बिहार) में हुई। साहित्यिक रुचियाँ आमतौर पर बचपन में ही पैदा हो जाती हैं जिन पर माहौल और कहीं-कहीं विरासत का भी असर रहता है। यहीं से साहित्य के बीज प्रस्फ़ुटित होना शुरू हो जाते हैं। ऐसा ही श्री रमेश कँवल के साथ भी

हुआ। यही कारण है कि श्री कँवल ने अपनी ग़ज़लों, गीतों और माहियों के साथ एक लम्बा सफ़र तय करते हुए अनेक प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्थानों से सम्मान और पुरस्कार प्राप्त किये हैं जिनमें 'फ़िराक़ गोरखपुरी राष्ट्रीय शिखर सम्मान' और 'दुष्यन्त कुमार स्मृति पुरस्कार' प्रमुख हैं। दूसरी तरफ़ यह भी उल्लेखनीय है कि श्री कँवल ऐसे ग़ज़लकार हैं कि जिन्हें देश की तमाम और निश्चित ही प्रतिष्ठित उर्दू-हिन्दी की पत्रिकाओं ने समान रूप से ससम्मान प्रकाशित किया है। आज हिन्दी के साथ ही देश में उर्दू की कुछ ऐसी पत्रिकाएँ हैं जिनमें छपने के लिए शाइर तरसते हैं और इन पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले के लिए यह बात उसके अच्छे ख़ुशफ़िक्र शाइर होने की ज़मानत मानी जाती है। यहाँ सब तो नहीं लेकिन कुछ पत्रिकाओं के नाम लेना चाहूँगा कि ये वे पत्रिकाएँ हैं जो बहुत जाँचने-परखने के बाद ही शाइरों का नोटिस लेती हैं जिनमें शबख़ून (इलाहाबाद), परवाज़ (लुधियाना), अल्फ़ाज़ (अलीगढ़), तामीर (दिल्ली), गुलबाँगे-अदब (मुम्बई), सबरस (हैदराबाद), शीराज़ा (कश्मीर), पासबान (चन्डीगढ़), रगे-संग (कानपुर), ज़बानो-अदब (पटना) यह सूची तो और भी तवील है और इसके साथ हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की भी एक लम्बी फेहरिस्त है जहाँ आज भी श्री कँवल की ग़ज़लें अपनी ख़ुश्बू बिखेर रही हैं।

श्री कँवल के यहाँ हालाकि विशेष तरक़्क़ी पसंदी और जदीदियत (अत्याधुनिकता) का एहसास भी नुमाया तौर पर महसूस होता है। साथ ही साथ रिवायत की पासदारी के साथ अपने मज़मून को कुछ इस तरह से शे'र में पिरोते हैं कि ताज़गी के साथ-साथ ज़िन्दगी को बदलने और ख़ूबसूरत बनाने की प्रेरणा यक़ीनी तौर पर मिलती है-

ग़ल्तियों से सबक़ लीजिए रात-दिन,
कामयाबी की राहों में खो जाइए।

या

तरन्नुम, सलीक़ा, फ़नो-फ़िक्र भी,
ग़ज़ल में सुख़न बा अदब चाहिए।

श्री कँवल के यहाँ ऐसे अश्आर की काफ़ी तादाद मिलती है जिनमें फ़नो-फ़िक्र की पाकीज़गी के साथ एक पैग़ाम भी मिलता है। इसका सबब शायद यही है कि वे एक अदब दोस्त तो हैं ही, एक इन्सान दोस्त भी हैं जो आलमे-इन्सानियत की फ़लाह और बहबूद (कल्याण) का ख़्वाब पाले हुए हैं।

श्री कँवल ने ग़ज़लों के अलावा गीतों और माहियों में भी अपने फ़न का इज़्हार किया है लेकिन ग़ज़ल उनकी महबूब सिन्फ़े-सुख़न (प्रिय विधा) है और चूँकि वो ग़ज़ल की रिवायत और उसके मिज़ाज से पूरी तरह वाक़िफ़ हैं इसीलिए आसान से आसान ज़बान और बोलचाल वाली भाषा में अपनी बात कह जाते हैं और ऐसा करते हुए इस ख़ूबसूरती से हिन्दी-उर्दू और कहीं-कहीं देशज शब्दों का इस्तेमाल भी कर जाते हैं... कि हमारी मिली जुली गंगा-जमुनी तहज़ीब का मज़ा आ जाता है।

दिन को दिन लिखना, रात मत लिखना,
जो हो अनुचित वो बात मत लिखना।

बेलिबासी माप है सौन्दर्य का,
शील-लज्जा आज का ज़ेवर नहीं।

मुझको भी है वेदना सिद्धार्थ सी,
मुक्त, चिन्ता-भय से मेरा घर नहीं।

ऊपर के शे'रों में आए हुए शब्द-अनुचित, सौन्दर्य, सिद्धार्थ कुछ ऐसी आवाजें हैं जिन्हें आमतौर पर शे'र का मिज़ाज कुबूल नहीं करता लेकिन ये रमेश कँवल की शे'रगोई में महारत का ही सुबूत है कि उन्होंने ख़ूबसूरती से इनका या और भी ऐसे अनेक शब्दों का इस्तेमाल कर भाषा पर अपनी गिरफ़्त का सुबूत पेश किया है।

कँवल के यहाँ ऐसा क़तई नहीं लगता कि उन्होंने शैक़िया ग़ज़लें कही हैं बल्कि उनके यहाँ एक फ़िक्र है और उसे व्यक्त करने का उनका अपना तरीक़ा है

जिसे वे शे'र के साँचे में सलीक़े से ढाल देते हैं जो इस बात की अलामत है कि वे ग़ज़ल की न केवल समझ बल्कि अच्छी पकड़ भी रखते हैं।

यह देखकर और भी ख़ुशी होती है कि रमेश कँवल बिहार की हुकूमत में बड़े आफ़िसर यानी अपर जिला दण्डाधिकारी (विधि व्यवस्था) जैसे महत्वपूर्ण ओहदे पर फ़ाइज़ हैं। ज़ाहिर है कि यह महत्वपूर्ण ओहदा अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के लिए काफ़ी समय माँगता होगा। बावजूद इसके वे शे'रगोई भी खूब कर लेते हैं। क्योंकि पहले भी उनकी दो किताबें 'लम्स का सूरज' उर्दू में और 'सावन का कँवल' हिन्दी में प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके साथ ही 'रंगारंग शाइरी' (संपादक प्रकाश पंडित) 'ग़ज़ल इन्टरनेशनल' (संपादक मंसूर उस्मानी) 'बिहार में जदीद ग़ज़ल' (संपादक अताउल्लाह खाँ अलवी) और 'ग़ज़ल... दुष्यन्त के बाद' (संपादक दीक्षित दनकौरी) जैसे अनेक महत्वपूर्ण और चर्चित ग्रन्थों में आपकी ग़ज़लें संकलित हैं।

मैं श्री रमेश कँवल की इस तीसरी कृति 'शोहरत की धूप' जो उन्होंने अपनी शरीके-हयात मंजू के नाम मंसूब की है, इसके प्रकाशन पर पेशगी में मुबारकबाद कहते हुए कामना करता हूँ कि यह ख़ूबसूरत किताब मक़्बूले-ख़ासो-आम होकर तादेर पाठकों और साहित्य प्रेमियों, ग़ज़ल नवाज़ लोगों के साथ लम्बा सफ़र तय करे, आमीन!

10 मार्च, 2013

अनवारे इस्लाम
सी-16, सम्राट कॉलोनी
अशोका गार्डन, भोपाल-23
मोबाइल: 09893663536

रूमानियत की ख़ुशबू से लबरेज़ है शोहरत की धूप: विजेन्द्र शर्मा

ग़ज़ल के पिछले तीन सौ साला माज़ी पर नज़र डालें तो रिवायती और जदीद ग़ज़ल के बीच एक बड़ा फ़ासला नज़र आता है। हमारे अहद के बहुत से शाइरों ने इस फ़ासले को कम करने की कोशिश की है और ऐसी ही एक नायाब कोशिश जनाबे रमेश कँवल ने अपनी शाइरी में की है। 'शोहरत की धूप' की पहली ग़ज़ल ही शाइरी के एक नए ज़ायके से तआरुफ़ कराती है:-

गुलों की ताज़गी हूँ
मैं शबनम की नमी हूँ

दिसम्बर का हूँ सूरज
मई की चाँदनी हूँ

ग़ज़ल में शाइर अपने और अपने महबूब के लिए तरह-तरह की उपमाओं का प्रयोग करते हैं। कभी झील, कभी चाँद, कभी घटा, कभी कँवल मगर कँवल साहब ने ग़ज़ल को नयी तशबीह से मुखातिब किया है:-

रहबरे क़ौम, रहनुमा तुम हो
ना उमीदों का आसरा तुम हो
मैं सियासत की बेईमान गली
और रिश्वत की अप्सरा तुम हो

चाँद और चाँदनी जैसे लफ़्ज़ों के ख़ूबसूरत मोतियों से बहुत से सुख़नवरों ने ग़ज़लों की मालाएँ बनाई हैं मगर रमेश कँवल इन दोनों लफ़्ज़ों से प्रणय का वो मंज़र खड़ा करते हैं कि बस इस शे'र का हिस्सा होने का दिल करता है:-

चाँदनी बिस्तर पे इतराने लगी
चाँद बाँहों में नज़र आने लगा

आज की शाइरी में ग़ज़ल की फ़िज़ा उदास-उदास सी नज़र आती है, कहीं बच्चों के खिलौनों की फ़िक्र, कहीं रोटी के इंतज़ाम की चिंता, कहीं दैरो-हरम के झगड़े और इन सब के बीच ग़ज़ल की असली तस्वीर जो धुँधली हो गयी है उसे रमेश कँवल साहब ने फिर से साफ़ करके एक ख़ूबसूरत फ्रेम में लगा दिया है:-

बदन में तमाज़त तेरे जिस्म की
मेरे होंठो पर तेरे लब चाहिए

एक तरफ़ सरकारी मसरुफ़ियात और दूसरी तरफ़ शाइरी, ये दोनों चीजें एक नदी के दो कनारों की तरह हैं मगर कँवल साहब के अन्दर का शाइर अपने शाइरी के जुनून की कश्ती पे सवार होकर बड़ी आसानी से इन दोनों किनारों के बीच आता-जाता रहता है! 'शोहरत की धूप' में ज़िन्दगी के तमाम मौजुआत को कँवल साहब ने ग़ज़ल बनाया है और मेरी इस बात की तस्दीक़ उनके ये अशआर करते हैं:-

काँच का घर उसे याद आयेगा
खूब पछतायेगा पत्थर इक दिन

शोहरत की धूप छत की बुलंदी में खो गयी,
शबनम की बूंद-बूंद से जलने लगी है शाम।

मुहब्बत का मुश्किल फ़लसफ़ा कभी लैला मजनू से लेकर शीरीं फरहाद तक को समझ में नहीं आया मगर रमेश कँवल इसे बड़े आसान से लफ़्ज़ों में आसानी के साथ बयाँ कर देते हैं:-

फ़लसफ़ा प्यार का कितना आसान है,
जब मनाये कोई मान भी जाइए।

अपनी ग़ज़लों में कँवल साब महबूब की ख़ुश्बू से तन-बदन सींच कर उसे ख़ुशगवार करना चाहते हैं, इनका छुपा हुआ दर्द हूबहू सावन से मिलता है और

इसमें भी शक नहीं कि इन्होंने अपनी बिगड़ी हुई तक़दीर को किसी की ज़ुल्फ़ों को ख़ुद पर बिखरा कर सँवारा है! कँवल साहब को पढ़ने के बाद ये भी अहसास हुआ कि ज़ुबान पर इनकी ज़बरदस्त पकड़ है और इन्होंने तज्रबात के मक्तब में भी पढ़ाई की है वो पढ़ाई जिसकी कहीं कोई किताब नहीं होती और न ही वो तालीम किसी मदरसे में मिलती है!

अनूठी ग़ज़लों के इस ख़ज़ाने में ऐसे बहुत से शे'र हैं जो पाठक को सोचने पर मजबूर कर देते हैं और ऐसे अशआर भी बहुत हैं जो पाठक को रुमान की दुनिया में सैर करा देते हैं!

अब मुन्तज़िर नहीं हूँ मैं खिड़की से धूप का
अच्छा है मेरे सर पे कोई छत नहीं रही

आख़िर में इसी दुआ के साथ कि 'शोहरत की धूप' की ख़ुशबू अदब के हर गोशे तक फैले और शोहरत की उन बलंदियों को भी छू ले जिसका तसव्वुर शायद ख़ुद रमेश कँवल साहब ने भी न किया हो, आमीन।

सबको कहाँ नसीब है, ये शुहरत की धूप!
हल्का हो किरदार तो, झुलस जाय है रूप!!

विजेंद्र शर्मा
सीमा सुरक्षा बल, बीकानेर
मो. 09414094122

शोहरत की धूप में मसरूफ़ियत का सफ़र: रमेश 'कँवल'

मेरा पहला मजमुआ (ग़ज़ल संग्रह) लम्स का सूरज 1997 में शाया (प्रकाशित) हुआ। लम्स का सूरज देवनागरी लिपि में नहीं था इसलिए दोस्तों की आरजू थी कि मैं इसे देवनागरी में प्रकाशित कराऊँ। दोस्तों की इच्छा का समादर करते हुए उसी साल 'सावन का कँवल' प्रकाशित हुआ। लगभग 16 साल हो गए और अब एक भी प्रति मेरे पास नहीं है कि किसी को दे सकूँ। इस बीच दूसरे ग़ज़ल संग्रह की चाहत भी दोस्तों के मन में जाग उठी। कुछ ग़ज़लें इन सोलह वर्षों में हुईं। उन्हें 'सावन का कँवल' में सम्मिलित कर तीसरा ग़ज़ल संग्रह 'शोहरत कीधूप' आप के हाथों में हैं।

ग़ज़ल शायरी का बेहतरीन अंदाज़ है। रिवायती लबो लहजा ग़ज़ल की आबरू है, लेकिन ग़ज़ल के रिवायती मौजू से हटकर दिलों की अनुभूतियों को आधुनिक उपमाओं एवं उपमान के साथ नर्मो-नाज़ुक लहजे में समय के सुर पर पेश करना ग़ज़ल की शान और जान है। आज का इन्सान अपनी व्यस्तताओं एवं प्राथमिकताओं की कश्मकश से जाँ-ब-लब है। मोहब्बत की चाँदनी अजीज़ है उसे लेकिन ग़रीबी, भूख, बेरोज़गारी, कुंठा एवं तनाव की धूप उसे परेशान किये हुए है। देश के रहनुमाओं के व्यवहार उसे मायूसी के जंगल में भटकने पर मजबूर कर रहे हैं। फिर भी दिल, दिल है वह ख़ूबसूरत अहसास की चादर से निकलना ही नहीं चाहता। प्यार, मिलन, जुदाई, इंतज़ार, यादें, शिकवा, शिकायत, बेबसी, मायूसी आज भी जज़्बात को मुतास्सिर करते हैं। आज भी क़ुदरत और औरत का हुस्न दिलों में गुदगुदी पैदा करता है। महबूबा आज भी दिलकश मंज़र पेश करती है। ख़ूबसूरत अहसास जगाती है। शे'रो शायरी की तरफ़ मेरा रुज्हान बचपन से है। फ़िल्मी गानों को सुनने के बाद मेरा मन कहता था मुझे भी ऐसे गाने लिखने चाहिए, गाने बंधन में बँधने लगे; शे'र कहने की

तमन्ना जागती रही। पहली ग़ज़ल 1972 में परवाज़ (लुधियाना) में शाया हुई। उन्हीं दिनों उर्दू लिपि भी सीखना शुरू किया। 'वफ़ा' सिकंदरपुरी के इस्लाह से शुरू हुआ शायरी का सफ़र गेसू-ए-बंगाल की सरहदों से निकल कर असीर-ए-ज़ुल्फ़े-बिहार हो गया। जनाब प्रोफ़ेसर हफ़ीज़ बनारसी साहब मरहूम एवं प्रोफ़ेसर तल्हा रिज़वी बर्क़ दानापुरी साहब ने मुझे शे'रो सुख़न की बारीकियों का अहसास कराया। धीरे-धीरे मैं भी आरा (बिहार) की अदबी सरगर्मियों का हिस्सा बनने लगा एवं यह कहने में मुझे कोई गुरेज़ नहीं कि बेरोज़गारी के दिनों ने मेरी शायरी को परवान चढ़ाने में अहम् रोल अदा किया।

अब तक न मिली नौकरी कोई भी कँवल को,
हाथों की लकीरों के अजब ठाट रहे हैं।

लेकिन जब बिहार लोकसेवा आयोग के इंटरव्यू के दौरान एक मेम्बर ने मुझसे मेरा शग़ल पूछा तो मेरे लबों पर यह शे'र मचल उठा...

फिर रहा हूँ दर बदर ज़ख़्मों की चादर ओढ़कर,
आजकल कुछ मेहरबाँ यूँ गर्दिशे-अय्याम है।

बस फिर क्या था। सारे मेम्बरान की वाहवाही तो मिली ही एवं अब ऐसा महसूस होता है कि शायरी के इसी शौक़ ने मेरे हाथों से बेरोज़गारी की लकीरें मिटा दीं क्योंकि मैं सेलेक्ट कर लिया गया था। आज शे'रो-शायरी की बदौलत मेरी ज़िन्दगी में शोहरत की धूप खिल रही है, पहले मैं सोचता था कि जब मुझे नौकरी मिल जाएगी तब मैं भरपूर शायरी करूँगा, लेकिन ऐसा नहीं हो सका। शायरी कभी कभार होती रही लेकिन अहसास के पैरहन लहराते रहे। दिल की कसक कसमसाती रही। होंट गुनगुनाते रहे। जब मैं भागलपुर में पदस्थापित था तब मुझे अदबी माहौल मयस्सर हुआ एवं डॉक्टर मनाज़िर आशिक़ हरगान्वी साहब की काविशो-कोशिश के बायस मेरे दोनों मजमुए मंज़रे-आम पर आ सके।

प्रखंड विकास पदाधिकारी से शुरू डिप्टी कलेक्टर का सफ़र अपर जिला दंडाधिकारी की बुलंदियों तक जा पहुँचा लेकिन गाहे बगाहे शे'र कहते रहने

के बावजूद मैं कोई ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित नहीं करा सका। सुख़नवर के जरिये जनाब अनवारे इस्लाम साहब से ताल्लुक़ात बढ़े तो उन्होंने 'शोहरत की धूप' प्रकाशित करवाने पर रजामंदी ज़ाहिर की। उन्हीं की काविशो-कोशिश का नतीजा है कि मेरा तीसरा ग़ज़ल संग्रह आपके हाथों में है। 'शोहरत की धूप' में रिवायती लबो लहज़ा से परहेज़ तो नहीं किया गया है, लेकिन जदीद अंदाज़ में नए इस्तआरों, उपमाओं और बिम्बों को पेश करने की कोशिश की गयी है...

रिश्वत की अप्सरा, फ़स्ले-बेरोज़गारी, क़हक़हों के ट्यूब, फ़ासलों के दीये, जुगनुओं का लिबास, ख़ुशबुओं की मंडी, लज़्ज़त का सहन, ज़िद का बिस्तर, बदन की तमाज़त, शोहरत की शहज़ादी, होंटों की नैया, गालों की नदी, जिस्म के अशआर, हौंसलों के पाँव, बेबसी की धुंध, ख़िरद की धूप, दिल की घाटियों, अजनबीयत की दीवार, अहसास की चादर, बेरोज़गारी की सुलगती रेत, हौसलों के शहर, आस्थाओं के महल, दूरियों की धूप, ख़्वाब का मौसम, अहसास की तितलियाँ, यादों का टेप, मुलाक़ातों का मौसम, धुंध के पर्वत, लम्हों की दीवार, ज़ख़्मों की चादर, मछलियों की टोलियाँ, पत्थर की नालिश, दर्पण का वसीला इत्यादि में कुछ अलग अंदाज़ में नयी बात कहने की कोशिश की गयी है।

लगभग तीन साल से पटना में ए.डी.एम. लॉ एंड आर्डर की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए शे'रो-शायरी का शौक़ छूट नहीं सका है मुझसे, 'शोहरत की धूप' का कोई शे'र अगर आपके अंतर्मन को छू सका हो या आपके अहसास का तर्जुमान बन सका हो तो मैं समझूँगा कि मसरुफ़ियत की नाव में सफ़र करने के बावजूद शे'र कहते रहने का शौक़ मुझे सुख़न का सलीक़ा अता कर सका और मेरे अशआर में शे'र कहने का हुनर दस्तक देने लगा है।

होली 27 मार्च, 2013 **रमेश कँवल**

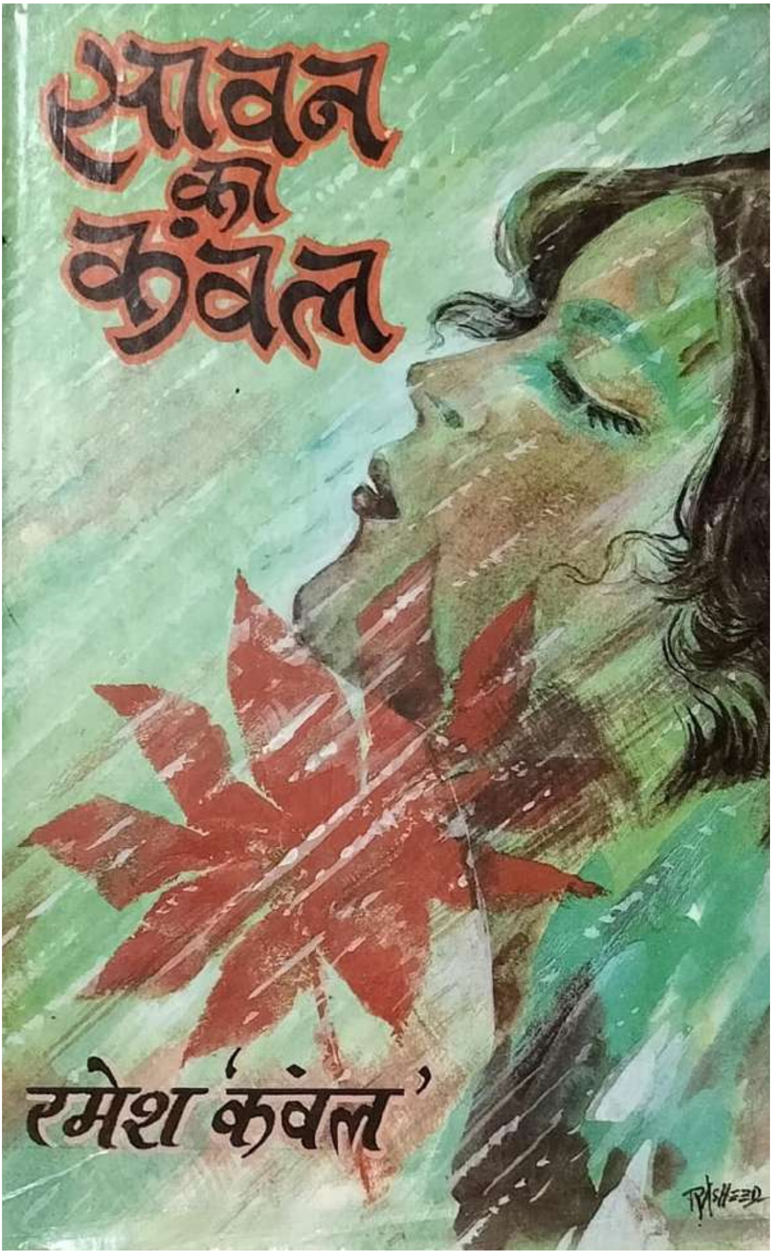
सावन का कंवल
रमेश 'कंवल'
RASHEED

'कँवल' शख़्सियत और शायरी: डॉ. अमरेन्द्र

कलाकार चाहे अपने अंतर्मन की गहराइयों में डूब कर कला का सृजन करे चाहे अपने वाह्यमन से कला की दुनिया के दरवाज़े पर दस्तक दे, कला निस्संदेह एक कलाकार के व्यक्तित्व की प्रतिकृति होती है। इस बात में किसी शक की गुंजाइश नहीं कि यदि यह प्रतिकृति कलाकार के दिखावे अथवा बाहरी व्यक्तित्व की बुनियाद पर खड़ी हो या उससे प्रभावित-संचालित हो तो वह अपना गहरा असर छोड़ने या दिल की गहराइयों को छूने की ताकत से महरूम होती है, कमजोर होती है। कलाकार के अंतर्मन चाहे जैसा भी हो, की उपज होती है एक रचना या कला और अंतर्मन की गहराइयों से उभरने वाली यही कला-यही आवाज़ पुरज़ोर ताक़त से पाठक को अपनी तरफ़ आकर्षित होने के लिये बाह्य करती है, लाचार करती है, बेबस करती है।

रमेश 'कँवल' की ग़ज़लें एक शायर के अंतर्मन की रोशनी से प्रकाशित होने के कारण पाठकों को ज़बरदस्त अंदाज़ में भरपूर ताक़त से प्रभावित करती हैं। वे पाठकों को यूँ ही प्रभावित नहीं करतीं। वे इसलिये प्रभावित करती हैं कि 'कँवल' का मिज़ाज ही ग़ज़ल का है। और यह मिज़ाज उनकी शख़्सियत की अंदरूनी ताकत से वाबस्ता है।

यद्यपि कि रमेश कँवल से मेरी छोटी-सी मुलाक़ात उर्दू-हिन्दी और अंगिका के मशहूर शायर और अदीब डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी के दौलतख़ाने पर हुई, और उस छोटी-सी मुलाक़ात में ही मैं उनके गंभीर व्यक्तित्व से प्रभावित हुये बिना नहीं रह सका लेकिन जब मैं उनकी ग़ज़लों के अलबम के वरक़-दर-वरक़ से आश्ना हुआ तो मैंने महसूस किया कि कँवल की शायरी और शख़्सियत में जिस्मो-जान का संबंध है। बहुत ही सीधा संबंध है उनकी रचनाओं का उनके जीवन से। किसी शायर के जीवन को तब तक नहीं समझा जा सकता है जब

तक उसकी शायरी के गुलशन का भरपूर लुत्फ़ न उठा लिया जाय। लेकिन मुझे ख़ुशी है कि रमेश कँवल के साथ हुई मेरी छोटी-सी मुलाक़ात के कुछ लम्हों ने ही मुझे उनकी बेहतरीन शायरी के आसार से आगाह करा दिया। मैने एक पल में ही एक शायर की भाव भंगिमाओं से, उनके तर्जे-तकल्लुम से उनके मन के आकाश की ऊंचाइयों का अंदाज़ा लगा लिया। और मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि कँवल की ग़ज़लें रमेश के मन के मान-सरोवर का थाह पता देने में कामयाब हुई हैं।

तमाम ग़ज़लों को देख जाने के बाद 'कँवल' के संबंध में एक राय तो यह निश्चित तौर पर बनती है कि शायर का मन अगर जलता हुआ रेगिस्तान है तो उस रेगिस्तान के उपर दूर-दूर तक बादलों की नरम ओर ढंडी छाया भी फैली हुई है। शायर का मन जहाँ बिछोह (हिज्र) की गर्म रेत में मिलता है तो उसी रेत के किनारे या रेत पर जगह-जगह से आड़ी-तिरछी चलती वस्ल (मिलन) की उम्मीद की पतली धारायें भी हैं जो यादों की हवाओं से आंदोलित होती दिखायी देती हैं। जहाँ तक कँवल के अशआर में रेगिस्तान या रेत की तपन का सवाल है तो वह तपन दो अलग-अलग किनारों से उठी हुई तपन है। एक तपन में अगर गुलाब की गंध है तो दूसरे में नहीं। पहली तपन अपने सर पर एक ठंडक लिए चलती है जबकि दूसरे को यह मयस्सर नहीं। कहने का अर्थ यह है कि कँवल ने अपनी शायरी में जहाँ एक ओर समकालीन शायर होने के नाते ग़मे-दौरां को काफ़ी तफ़्सील के साथ शे'रों में ढाला है। इस शायर के लिए कोई एक ग़म दूसरे ग़म के सामने कम महत्व का हो, ऐसी कोई बात कहीं नहीं और यहाँ अगर ऐसी बात नहीं मिलती तो इसकी वजह है-वह यह कि कँवल ने ग़मे-जानां या ग़मे-दौरां को रस्म अदायगी के तौर पर नहीं कहा है बल्कि इन दोनों को शिद्दत के साथ महसूस किया है। और ये अहसास तब तक हासिल नहीं हो सकते जब तक उनके बहुत क़रीब न हुआ जाए। इनकी शायरी में दोनों ही तरह के दर्द की जो गहरी अभिव्यक्ति है वह दोनों के साथ शायर के गहरे संबंध और अनुभूति के कारण है।

ग़मे-दौरां और ग़मे-जानां दोनों जहाँ के शायर होने के कारण कँवल को एक मुकम्मल दुनिया का शायर कहना ज़्यादा मुनासिब होगा। यह शायर आधी-अधूरी दुनिया का शायर नहीं है। जहाँ तक इनके कलाम में मुहब्बत की बातें हैं, इसकी अभिव्यक्ति में भी एक नयी ताज़गी मिलती है। परंपरा से हटकर कुछ नया कहने की ज़िद या लालसा शायर में साफ़-साफ़ दिखता है।

चंद अशआर मुलाहिज़ा फरमायें-

गुज़रे मौसम का पता सुर्ख़ लबों पर रखना
अपनी आँखों में मेरे क़ुर्ब का मंज़र रखना

एक जलता हुआ सूरज है मेरी ज़ात में क़ैद
तुम भी लहराता हुआ तन का समुंदर रखना

गर्द जिस पर न महो-साल की जमने पाये
दिल की दीवार पे इक ऐसा कलेण्डर रखना

बंद करना न तअल्लुक़ के दरीचों को कभी
तुम मुलाक़ात के आंगन को मुनव्वर रखना

सफ़ीना सांसों का था मौत के भंवर में कँवल
किसी का फिर भी मुझे इंतज़ार था कितना

हमने भी रखा है इक ताजमहल कमरे में
हम भी एक जज़्ब-ए-तामीर लिए बैठे है

तेरी काफ़िर अदा भी क़ातिल है
सर्द मौसम का ही क़सूर नहीं

तुम हो कहाँ महबूब मेरे सावन की नशीली रातों में
देख कँवल बेबस होकर ढूंढे है तुम्हें दरपन-दरपन

उपर के शे'रों में जो जज़्ब-ए-मोहब्बत या ज़िक्रे वफ़ा है वह वाक़ई हिन्दी अदब के लिए एक नेमत की तरह ही है। मैं ये नहीं कहना चाहता हूँ कि ग़मे-जान से जुड़े इनके तमाम शे'र बिल्कुल नये अहसासों या बयानों के शे'र हैं लेकिन इसमें कोई शक़ नहीं कि कँवल अपनी शायरी में इस बात के लिए बहुत फ़िक्रमंद नज़र आते हैं कि इन्हें जो कहना है, उसका वज़न क्या हो और उसे किस नये अंदाज़ में कहा जाय-इस शायर के कलाम में यह ख़ुसुसियत बराबर झलकती हैं। इनकी ग़ज़ल की पुख़्ताकारी का सबब भी यही है। ये अपनी बातों को इज्माली तरीक़े से रखतें हैं, कुछ इस तरह से कि मअनवी लिहाज से इनका विस्तार काफ़ी होता है। और इसी कारण फ़न्नी लिहाज से भी कँवल अव्वल दर्जे के शायर सिद्ध होते हैं। आलोच्य ग़ज़ल संग्रह में प्रेम से संबंधित जो ग़ज़लें शायर ने रखी हैं, उनकी सादगी, उनकी मासूमियत और साफ़गोई-सब कुछ मिलकर कँवल की शायरी को बहुत असरदार बना देती हैं। लेकिन जज़्ब-ए-मोहब्बत के ये कलाम कँवल की शायरी को पूरे तौर पर समझने के लिए काफ़ी नहीं है। जैसा कि यह पहले भी कहा गया है, कँवल की शायरी एक मुकम्मल दुनिया की शायरी है, जहाँ ग़मे-जानां और ग़मे-दौरां की बराबरी की हिस्सेदारी है। और इसी से जब तक कँवल की ग़ज़लों की दूसरी अधूरी दुनिया का ठीक-ठाक जायज़ा नहीं ले लिया जाता तब तक इस शायर की पहचान भी अधूरी ही होगी, इनका परिचय भी अधूरा ही रहेगा।

एक रचनाकार जिस युग में जीता है वह उस युग की धड़कनों की अनदेखी नहीं कर सकता, उसकी स्थितियों में आये बदलाव से अपने को बचा नहीं सकता। उसे किसी न किसी तरह अपने समय की धड़कनों को आवाज़ देना ही होता है, शब्द देने ही पड़ते हैं, अपनी रचना में उसे उतारना ही पड़ता है। यही कारण है कि कँवल की शायरी में भी आज के वक़्त की ज़िंदा तस्वीरें हैं। समय के हिसाब से कँवल भारतीय आजादी के उस दौर के शायर हैं जो दौर

साठ के बाद शुरू होता है। ओर साठ के बाद अदब के मौज़ूअ में एक भारी बदलाव देखा जाता है जिसे हम हिन्दी के उपन्यास, कहानी, नाटक के साथ-साथ कविताओं में भी एक साथ देख सकते है। फिर कविताओं के अन्तर्गत ही बड़ी तेज़ी से विकसित हुई ग़ज़ल की विधा भी इससे मुतास्सिर हुए बग़ैर कैसे रह सकती थी।

साठ के बाद अदब के मौज़ूअ में जो एक ख़ास बदलाव आया था वह आज़ादी की सुविधायें आम अवाम को मयस्सर न होने की वजह से। आज़ादी के दौर में लोगों ने जो ख़्वाब अपने ज़ेहन में कायम किये थे वे दिमाग़ी पैकर ही बनकर रह गये। उन्हें हक़ीक़ी, शक्ल देने की कोशिश राजनीति के रहनुमाओं द्वारा कभी नहीं हुई। और आज़ादी का सुख अगर किसी को हासिल हुआ तो मुल्क के उन अमीर घरानों को ही जो आजादी के पहले भी ऐशो-आराम की ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। नतीजा यह निकला कि आम लोगों की ज़िन्दगी कठिन से कठिनतर होती चली गयी। और बात यहाँ तक पहुँची कि मुल्क में ख़ुशहाली ओर सुविधायें लाने के वायदे-नारों पर क़िस्म-क़िस्म की सरकारें आती-जाती रहीं। इनके आने-ज़ाने के साथ ही आम लोगों की ज़िन्दगी की मुसीबतों का परवाज़ भी जारी रहा। अपने ही मुल्क में विदेशियों की तरह अजनबी बन गये यहाँ के लोग। ईसवी साठ के बाद आम लोगों के चेहरों पर परेशानियों का जो सैलाब उमड़ता चला आया है, जिस तरह इनकी ज़िन्दगी एक मुटठी हँसी और सुख के लिए तबाह होती आयी है इनके संघर्ष का कोई इन्तहा नहीं रहा है, न इनकी ज़िन्दगी में कोई-कोई उम्मीद की बाक़ी किरण इन तमाम चीजों को साठ के बाद के अदीबों ने अदब में बड़ी तल्ख़ी के साथ पेश किया है। कँवल की शायरी में हमें साठ के बाद के भारतीय समाज और इनके लोगों की

हालतों की ज़िंदा तस्वीरें मिलती हैं। कँवल की शायरी पढ़ने के बाद यह किसी को भी हैरत होगी कि शायर ने नये दौर की उखड़ती सांसों, इसके बेढ़ंगें रीति-रिवाजों माडर्निटी के नाम पर बेहूदी तहज़ीब के शक्स-अलमाम चीज़ों को कैसे अलग-अलग शे’रों में और कहीं-कहीं एक पूरी ग़ज़ल में उतारने की कामयाब कोशिश की है।

मुक़द्दर का सूरज घटाओं में था
मेरा हाले-ख़स्ता ख़लाओं में था

ग़ज़ल ऐसी ही ग़ज़ल है, चंद अंशआर, इस संदर्भ में, मुलाहिज़ा फ़रमायें-

जख़्म ही जख़्म मुझे गर्दिशे-दौरां ने दिये
एक मुद्दत से मसर्रत का तलबगार हूँ मैं

फूल बरसाये थे मैंने जिस जगह
है उसी वादी में ज़ख़्मी मेरा सर

सर पे है सूरज, हवायें गर्म है, राहें ख़मोश
जल रहा है और चलता जा रहा है कोई शख़्स

फिर रहा हूँ दर-ब-दर जख़्मों की चादर ओढ़कर
ये मेरे माहौल ने बख़्शा मुझे इनआम है

कितने अश्कों के दिये हमने जलाये ऐ 'कँवल'
उस हँसी के वास्ते जो आज तक गुमनाम है

सभी हँस रहे थे मुझे देखकर
बिखरता हुआ मैं हवाओं में था

जाम के बदले मयख़ाने में चलती है तलवारें
साक़ी दूर खड़ा है गुमसुम और ख़ुदा हैरान

कैसा है यह दौरे-तरक़्क़ी क्या इसकी सौग़ात
हथियारों की क़ीमत ऊंची सस्ता है इन्सान

ऐ दौरे तरक़्क़ी तेरी सौग़ात अजब है
जिस चेहरे को देखा वो परेशां नज़र आया

हर चेहरा है इक काग़ज़ी गुलदान की सूरत
बेहतर है कँवल तुम न इसे हाथ लगाओं

'कँवल' मौजूदा दौर के एक ऐसे शायर हैं जिनकी ग़ज़लें वास्तव में आज के वक़्त और वक़्त के साथ भागते परेशान, बदहवास, आदमी की ग़ज़लें हैं जो कुल मिलाकर ये तय करती हैं कि कँवल को वक़्त ने पैदा किया। यही वजह है कि इनकी शायरी में क़ातिलों और बिस्मिलों के कड़वे हालात की तर्जुमां करते अशआर भी हैं-मुलाहिज़ा हो-

मैं पेड़ हूँ दम लेते है सब छांव में मेरी
झुलसे है मगर धूप में तनहा मेरा चेहरा

हँसी छलावा था यौवन की धूप, क़ुर्ब का लम्स
ढला जो उम्र का सूरज तो उसको होश आया

पैरों में मेरे फ़र्ज़ की ज़ंजीर पड़ी है
ऐ जज़्ब-ए-दिल ठहर बहुत सख़्त घड़ी है

यौवन के दरीचों पे कोई परदा नहीं था
उस शोख़ को जिस्मों की नुमाइश पे यक़ीं था

पांव ज्वालामुखी पर दहकते रहे
सर पे मेरे सुलगती रही दोपहर

ज्वालामुखी क़हर ढाते रहे
नदी परबतों से निकलती रही।

'कँवल' की शायरी में यह जो दूसरे तरह के रेगिस्तान की तपन है तो उसके ऊपर कहीं शीतल छांह भी है–और यह छांह है आशा और उम्मीद की जो कम से कम शायर के अन्दर कहीं से भी मरने नहीं पाती। इसी आशा और उम्मीद की शायरी से यह शायर पूरी तरह से टूटे आदमी के ज़ेहन में कहीं ज़िन्दगी के प्रति मोह या उम्मीद की धार बहाता रहता हैं-

ठंड पहुँचायेगा, राहत देगा
रेत का गर्म ये बिस्तर इक दिन

पाप जल जायेगा दुनिया का कँवल
आँख जब खोलगा शंकर इक दिन

जब दरख़्तों को ज़ुबा मिल जायेगी तब देखना
मौसमों के क़हर से चीख़ेंगे ये बर्गो-शजर

यही कारण है कि-

अजीब शर्त थी दंगा कराने वालों की
नगर में रिश्तों का चेहरा उड़ा उड़ा सा था

लिबासे-ज़िन्दादिली तार-तार था कितना
ग़िलाफ़े-ज़ीस्त में वह बेक़रार था कितना
के बाद भी शायर निराश नहीं होता।

उभरेगा कभी जो है अभी डूबता चेहरा
कंकर न इसे मारो कि है फूल सा चेहरा

कँवल की शायरी जहाँ अपने जज़्बात के लिए मोतवज्जह का सबब है, वहीं दूसरी ओर इनके कलाम की भाषा भी ख़ास तौर पर नज़र खींचती है। अपने अश्आर में इन्होंने जिस भाषा का इस्तेमाल किया है वह अगर शायर की कठिन

उर्दू भाषा पर गहरी पकड़े को ज़ाहिर करती है, तो दूसरी और यहाँ भाषा का एक ऐसा रंग भी हाज़िर है जो बिल्कुल आम ज़ुबान न होते हुए भी आम लोगों की ज़ुबान है। हैरत तो इस बात के लिए है कि कँवल आम लोगों की ज़ुबान में ऐसी गहरी बातें कह जाते हैं कि कोई अचानक यह देखकर दंग रह जाय। देखिए-

शहर की बाहों में पलती सभ्यता बतलायेगी कि गांव की सादगी और प्यार किस झुरमुट में किस डर से दुबक कर रह गये।

जाने किसकी आस में खोये हैं गोरी के नैन
गली ख़मोश, उदास मुंडेरें आंगन है सुनसान

अब कँवल को न छेड़ियेगा कभी
उसके लब पर हँसी नहीं होती

इनके कलाम की भाषा अनेक बार अरबी और फारसी के शब्दों और व्याकरण की बुनियाद पर भी खड़ी मिलती है। दरअसल शे'र कहने के क्रम में कँवल इस नियम की पांबदी को नहीं स्वीकारते कि कलाम की भाषा बिल्कुल ऐसी हो जो आम लोगों की समझ से बाहर नहीं हो। इनकी शायरी की भाषा भाव के अनुकूल शक्ल अख़्तियार करती चलती हैं। यह शायर इसे कठिन या सरल बनाने की कोशिश नहीं करता।

भाषा के संदर्भ में इतना तो अवश्य कहा जायेगा कि कँवल की शायरी की भाषा ऐसी है जो अपरिचित नहीं और न ही यह कलाम के मौज़ुअ को समझने में दिक्कत खड़ा करती है। इनकी भाषा की ख़ास कशिश है नये मुहावरों और नये प्रतीकों का ख़ूबसूरत प्रयोग जो कँवल की शायरी में एक नयी ताज़गी को जन्म देता है। इस शायर ने अपनी ग़ज़लों में आधुनिकता की पेशगी के लिए जिन प्रतीकों को चुना है वे अपने अर्थ संप्रेषण में बेहद ताकतवर है। इस हद तक कि कँवल के फ़न से मुतास्सिर हुये बग़ैर नहीं रहा जा सकता। नये मुहावरों, प्रतीको और शब्दो के इस भाषा शास्त्र की वजह से भी कँवल अचानक ही ग़ज़ल की

पुरानी दुनिया से निकलकर नयी दुनिया में खड़े दिखते है-ग़ज़ल कहने के नये तौर-तरीक़े से अपनी एक अलग पहचान कायम करते हैं-

बेख़बर था समुंदर मगर मछलियाँ
ऐश करती रहीं रेत पर धूप में

वो जलते पंख लिये बढ़ रहा था मेरी तरफ़
मेरी रगों में ठिठुरता हुआ दिसम्बर था

पत्थरों पर घास यूँ आयी उभर
जैसे गहरे ध्यान से साधू जगा

आदिवासी औरतों गांव में
थोड़े दिन ही ख़्वाब का मौसम रूका

कँवल एक समुन्दर था हैरत ज़दा
नदी कैसे उसको निगलती रही

ये कँवल की ज़ुबान की ख़ासियत है कि जहाँ फ़िक्रे-वफ़ा की ख़ुशबू है या जहाँ आम आदमी की परेशानियों की तड़प या उनके मसाइलों पर शायर का पयम्बराना लबो-लहजा, भाषा सभी मोड़ों के मौज़ुअ के मुताबिक़ ही आई है।

यह सच है कि

कितना दुश्वार है ये फ़न यारो
शायरी दिल्लगी नहीं होती

लेकिन यह तो कँवल का मिज़ाज ही है, ग़ज़ल का मिज़ाज कि इनके लिये यह दुश्वार फ़न भी आसान बन गया है। मैं नहीं समझता हूँ कोई इनकी ग़ज़लों को पढ़कर उम्र भर इसकी ख़ुशबू से अपना पीछा छुड़ा पायेगा। कोई पढ़ेगा तो मेरी तरह बस यही कहेगा

कोई गुज़रा है यूँ ख़ुशबू लुटाता सहने-गुलशन से
कि खोया सा तसव्वुर में 'कँवल' दौरे ख़िज़ां तक है

डॉ. अमरेन्द्र
सम्पादक "आंगी"
ज्ञानेन्द्रनाथ मुखर्जी पथ,
भीखनपुर, भागलपुर, 812001

लम्स की ख़ुशबू सावन का कँवल: डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

'सावन का कँवल' श्री रमेश प्रसाद की बेहतरीन ग़ज़लों का पहला संग्रह है। कँवल उपनाम है उनका। रमेश 'कँवल' उर्दू शायरी के लिये बिल्कुल नये तो नहीं लेकिन पिछले बारह साल से ये गुमनामी के अंधेरे में सुकून तलाश रहे थे।

ग़ज़ल अब हिन्दी के लिये क़बूल कर ली गई बेहतरीन विधा बन गई है। यद्यपि कि पारंपरिक तौर पर ग़ज़ल औरतों से गुफ़्तगू या बात करने का शरीफ़ाना सलीक़ा माना जाता रहा है लेकिन वर्तमान संदर्भ में यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं कि ग़ज़ल हर दौर के तारीख़ी दस्तावेज़ के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है जिसे पूरी नस्ल की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विरासत के रूप में देखा जाता है। जीवन कुछ हक़ीक़तों, कुछ भावनाओं, कुछ हौसलो, कुछ तमन्नाओं, कुछ मजबूरियों, कुछ तल्ख़ियों, कुछ मुस्कुराहटों एवं एक अहसास का नाम है जो हमारी सांसों में रचा बसा रहता है। दुख की मीठी आंच एवं सुख के उफनते समुंदर का सामीप्य पाकर जब इन्सान का अहसास आवाज़ की शक्ल में एक अभिव्यक्ति पाती है तो उसे शे'रो-शायरी कहते हैं।

ग़ज़ल शायरी का बेहतरीन अंदाज़ है। रिवायती लबो-लहजा ग़ज़ल की आबरू है लेकिन ग़ज़ल के रिवायती मौजू से हटकर दिलों की अनुभूतियों को आधुनिक उपमाओं एवं उपमान के साथ नर्मो-नाज़ुक लहजे में समय के सुर पर पेश करना ग़ज़ल की शान एवं जान है। आज का इंसान अपनी व्यस्तताओं एवं प्राथमिकताओं की कश्मकश से जां-ब-लब है। मोहब्बत की चांदनी अज़ीज़ है उसे लेकिन ग़रीबी, भूख, बेरोज़गारी, कुंठा एवं तनाव की धूप उसे परेशान किये हुये है। देश के रहनुमाओं के व्यवहार उसे मायूसी के जंगल में भटकने पर मजबूर

कर रहे हैं। फिर भी दिल ख़ूबसूरत अहसास की चादर से निकलना नहीं चाहता। प्यार, मिलन, जुदाई, इंतज़ार, यादें, शिकवा, शिकायत, बेबसी, मायूसी आज भी दिलों को गुदगुदाते हैं, भावनाओं को जगाते है। आज भी क़ुदरत एवं औरत की दिलकश मंज़रकशी हसीन और ख़ूबसूरत अहसास जगाते है, आकर्षक लगते हैं।

सावन का कँवल सावन से प्रभावित भी है, सावन की कहानी भी है। सावन एक मौसम भी हैं और सरापा पैकर भी। एक व्यक्ति भी है, एक अनूभूति भी। रमेश कँवल के सावन का कँवल हुस्न की झील या सौंदर्य-सागर में प्रेम भावना के मुस्कुराते कँवल के खिलने की ख़ूबसूरत तस्वीर है। नये रंग, नये ढंग, नये अंदाज़, नये शब्द, नयी उपमाओं की चांदनी से रौशन है ये तस्वीर। ये तस्वीर जो ग़ज़लों की शक्ल अख़्तियार करती हुई आपके हाथों से आपके दिलों में उतर रही हैं कहीं से भी रमेश कँवल की निजी एवं व्यक्तिगत अनुभूति न होकर हर दौर की, हर इंसान की भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रतीत होती है।

मिलन के कुछ दृश्य देखिये:-

झिझकती झेंपती गजगामिनी नदी थी उधर
इधर उमंड़ते समुंदर का बावलापन था

वरक़ वरक़ पे मुनव्वर थीं लब की तहरीरें
किताबे-जिस्म का हर बाब मुझसे रौशन था

मेरे मन के द्वीप में वीरानियाँ जलने लगीं
एक नर हैरान था, इक नारी को पहचान कर

रात की रानी महकी, कोई आया, दिल मदहोश हुआ
क़ुर्ब की ख़ुशबू फैली पल में ख़्वाबों का सागर छलका

ऐसी ख़ुशबू उड़ी दो बदन से ‘कँवल’
चांद महवे-ख़याले हसीं सो गया

मिलन के दृश्य ही नहीं मिलन की कल्पना भी देखिये:-

दिल के आंगन में कभी मौसम मुलाक़ातों का हो
तेरे इक स्पर्श से रोशन हो मेरे बामो-दर

इक साक़ी-ए-महवश है तसव्वुर में ‘कँवल’ के
सावन का महीना है जवां अब्र हैं छाये

और ये बातें भी यह कहते हुए कि:-

तुम मिलन की रात का मंज़र न खैचो ऐ ‘कँवल’
शर्म से ख़ुद में सिमटता जा रहा है कोई शख़्स

और यही वजह है कि मिलन की स्निग्ध एवं शीतल ज्योत्सना में जलते हुये रमेश कँवल अपने ख़ूबसूरत अंदाज़ में इतनी सुंदर अभिव्यक्ति कर पाते हैं:-

गुज़रे मौसम का पता सुर्ख़ लबों पर रखना
अपनी आँखों में मेरे क़ुर्ब का मंज़र रखना

अपनी सांसों में बसा लेना वफ़ा की ख़ुशबू
अपने जूड़े को गुलाबों से मुअतर रखना

लब की तहरीरें, किताबे-जिस्म, स्पर्श का मौसम, क़ुर्ब की ख़ुशबू, ख़्वाबों का सागर, साक़ी-ए-महवश, मुलाक़ातों का मौसम, दिल का आंगन, गुज़रे मौसम का पता, ये सारे अल्फ़ाज़ शायर की व्यक्तिगत पहचान बनाते हैं–और लोगों से अलग करते हैं। मिलन ही नहीं जुदाई के दृश्यों की अभिव्यक्ति भी प्रशंसनीय है:-

नैन मेरे खिड़की से किसी को देख रहे थे जाते हुये
और शिकन की चादर ओढ़े घर में इक बिस्तर तनहा

ग़म बिछड़ने का नयन सहने लगे
ख़ुशनुमा मंज़र ख़फा रहने लगे

मैं सुन रहा था दरे-दिल पे दस्तकें उसकी
विरह का वातावरण ख़ुशगवार था कितना

यद्यपि कि जुदाई कभी-कभी मन को भाती है लेकिन ये कोई मंज़िल नहीं। जुदाई की बाहें कँवल को भी बहुत जल्द इंतज़ार के आगोश में ढकेल देती हैं।

शे'र मुलाहिज़ा फरमायें:-

मैं वही फिर वही बर्फ़बारी 'कँवल'
खिड़कियों पर मिली फिर वो बेकल नज़र

फ़ौजी बूटों से घायल गांव की पगडंडी पर
एक कुंवारी ढूंढ रही है दो पैरों के निशान

और ये मंज़रकशी मुलाहिज़ा फरमायें:-

सुबह से एक साया भटकता रहा
इक दरीचा रहा मुंतज़र धूप में

कोई तस्वीर नहीं कोई तसव्वुर भी नहीं
दरे-अहसास पे लम्हाते-गिरांबार हूँ मैं

प्रकृति ने हमें दो वरदान दिये हैं। स्मृति एवं विस्मृति। दोनों के बग़ैर जीवन दूभर जो जाए। कुछ स्मृतियाँ, कुछ यादें ऐसी होती है जिनके सहारे इन्सान अपनी सारी ज़िंदगी गुज़ार देता है। यादों से संबधित शे'र कहते हुये 'कँवल' अपनी व्यक्तिगत पहचान बनाये रखते हैं:-

मौजज़न इमरोज़ का खारा समुंदर था मगर
तेरी यादों के जज़ीरे भी थे दिल के आस-पास

अहसास के आंगन में कई फूल खिलें है
आता है बहुत याद ‘कँवल’ यार का चेहरा

कभी तो आ के तू यादों की डायरी पढ़ ले
बिछड़ के तुझ से न अब तक मुझे करार आया

टेप यादों का रूक रूक के बजता रहा
रात टेलीविज़न पर थे दो हम सफ़र

बेबसी का इज़हार या फिर शिकवा-शिकायत शे’रो-शायरी में शुरू से ही अपनी अहमियत रखते हैं। ‘कँवल’ की ग़ज़लें भी बेबसी के सन्नाटे में शिकवा-शिकायत की फुरकैफ़ आवाज़ बुलंद करती हैं।

बानगी देखिये:-

दस्तकें दरवाज़ा-ए अहसास पर बैचेन हैं
और लम्हों के घरौंदों में ‘कँवल’ है बेख़बर

मेरे दिल की घाटियों में रू-ब-रू है आजकल
तेरे मिलने की ख़ुशी तुझसे बिछड़ जाने का डर

अब आस है तेरी, न तेरा ग़म, न तमन्ना
तुमने भी अजब दिन मेरे महबूब दिखाये

तुझसे बिछुड़े हुये अरसा हुआ पर जाने ‘कँवल’
तेरी सौग़ात मुझे अब भी रूला देती है

और यह मंज़र देखिये:-

कोई शहर में था परेशां बहुत
कोई शख़्स बेचैन गांवों में था

मेरे अहसास की तितलियाँ खो गईं
रफ़्ता रफ़्ता 'कँवल' मोतबर धूप में

वफ़ा से 'कँवल' इक ज़माना था बरहम
मगर आह क्या बात थी तुम न आये

क़ुदरत के हसीन नज़ारे अपने आप में मुकम्मल ग़ज़ल हैं। हर दौर और हर ज़ुबान के शायरों ने प्रकृति की नैसर्गिक सौंदर्य से अपने ख़यालो फ़िक्र के शीश महल को सजा कर गौरवान्वित होते हुए महसूस किया है। क़ुदरत के पुरकैफ़ नज़ारों की मंज़र कशी पेश हुये कँवल के अशआर अख़्लाकी व रूहानी क़ुदरों के इहतिराम के साथ-साथ ताज़ा फ़िज़ा और तख़य्युल की नई वुसअतों का सुराग भी देते है:-

हरी पत्तियों पर फिसलती रही
हसीं धूप शाख़ों पे फलती रही

ज्वालामुखी क़हर ढाते रहे
नदी परबतों से निकलती रही

यूँ तो जंगल में सिसकती है हवा सदियों से
ख़ुश्क शाख़ों को मगर रंग हरा देती है

आसमाँ से छिन गया जब चांद तारों का लिबास
शबनमी कपड़ो में लिपटी थी ज़मी की नर्म घास

जब बदन कलियों का सूरज की किरन छूने लगी
ओस की बूंदों ने पाया ख़ुद को बेहद बदहवास

और इन मंज़रों का नया रंग मुलाहिज़ा फरमाये:-

इक सुनहरी किरन का सफ़र तय हुआ
खुल गईं खिड़कियाँ जाग उठा सारा घर

उदास सूर्यमुखी खो गई थी सूरज में
थकन से चूर मगर रोशनी का बिस्तर था

मैं पेड़ हूँ दम लेते है सब छांव में मेरी
झुलसे है मगर धूप में तनहा मेरा चेहरा

किसी की आँखों में बेहद हसीन मंज़र था
मेरा बदन था जज़ीरा वो इक समंदर था

ओर इन अशआर की गहराई देखें:-

जब दरख़तों को ज़ुबां मिल जायेगी तब देखना
मौसमों के क़हर से चीख़ेंगे ये बर्गो-शजर

बाहों में समुंदर के दरिया का सिमट जाना
और देख के ये मंज़र तेरा वो क़रीब आना

मछलियों की बस्ती में कितना प्यारा मौसम है
जाल भी नहीं कोई ओर न ही मछेरा है

क़ुदरत के हसीन नज़ारों की अक्कासी करते हुये ‘कँवल’ के अशआर के कैनवस पर कुछ दीगर ख़ूबसूरत मंज़र भी उभरते हैं। बड़े ही आशिक़ाना अंदाज़ के पुरलुत्फ़ अशआर मुलाहिज़ा फ़रमायें:-

भीग रही है कोई कुंवारी छत पर इन बौछारों में
कोई दिवाना प्रीतम के दर्शन में है यूँ आज मगन

आह मचलने लगते हैं अरमान दिले-आवारा में
आता है जब याद तेरा भीगा भीगा शफ़्फ़ाफ़ बदन

वो ख़्वाबगाह की ग़ज़लें सुना रही थी मुझे
अदा-ए-ख़ास से उसका खनकता कंगन था

मछलियों पर खिलखिलाती चांदनी
हमनवा तालाब है और कुछ नहीं

शे'रो-शायरी खासकर ग़ज़ल जवानी के ख़ूबसूरत अहसात के हसीन इज़हार से भी वाबस्ता है। शे'रों में ख़ूबसूरत जवां जिस्म, यौवन के हाव-भाव, नाज़ नखरे इत्यादि की मंज़रकशी जब रानाइये-ख़यालो फ़िक्र की चांदनी में डूब कर कँवल के शे'रों में उभरती है तो हर जवां दिल बेसाख़्ता वाहवाह कर उठता है:-

संदल सा बदन, सुब्ह की किरने है बिखेरे
ज़ुल्फों में शबे-मस्त को उलझाये हुये हैं

लब लाल बदख्शां हैं तो आँखें हैं ग़िज़ाली
यौवन के कलश नाज़ से छलकाये हुये हैं

यौवन के दरीचों पे कोई परदा नहीं था
उस शोख़ को जिस्मों की नुमाइश पे यक़ीं था

वो आरिज़ो-लब वो घनी ज़ुल्फ़ें खुले बाजू
ख़ुशबू का समुंदर मेरी सांसों के क़रीं था

स्त्री पुरुष के जिस्मानी तालुक़्क़ात की ख़ुशबू, वासना की ज़ुल्फों में उलझे हुये आशिक़ की बेबसी, हविस की धुंध में भटकते हुये प्रेम की आबरू भी कँवल के अशआर के मौज़ू बने हैं

शे'र मुलाहिज़ा फरमाइये:-

मेरे तन में ख़ैमाज़न थी इक सुलगती दोपहर
वो भी था पहने हुये बर्फ़ीले मौसम का लिबास

जिस्म की चादर लपेटे था 'कँवल' वह गुलबदन
मैं भी उससे रेज़ा रेज़ा हो रहा था रूशनास

एक जलता हुआ सूरज है मेरी ज़ात में क़ैद
तुम भी लहराता हुआ तन का समुंदर रखना

अजबनीयत की दीवार रौशन रही
वह कहीं सो गया, मैं कहीं सो गया

जिस्म की मजबूरियाँ रौशन हुईं
दूरियों की धूप तन सहने लगे

अगरचे मुझको समर्पित किसी का यौवन था
मैं बेवफ़ा था, कहीं और मेरा तन मन था

हविस की निगाहें ख़रीदार थीं
पकौड़ी वो मासूम तलती रही

लाई है हविस मुझको 'कँवल' मोड़ पे ऐसे,
मैं अपनी मुहब्बत से पशेमां नज़र आया।

कँवल की शायरी का कला पक्ष बहुत उज्ज्वल है। जहाँ उनकी ज़ुबान में अहसास की ताज़गी नुमायाँ होती है वहीं बयान में सादगी और बेसाख़्तगी जल्वा अफ़रोज़ होते हैं। जज़्बाने-अहसास का ये ख़ुशगुलू शायर जब फ़न की

चांदनी में नयी तसबीहों के गहने पहना कर तरानियत की ख़ुशबू में सने शे'रों से किसी हस्सास दिल के दरवाज़े पे दस्तक देता है और अक्षरों के हुस्न का जादू जगाता है तो भावनाओं के समुंदर में खलबली मच जाती है।

शे'र मुलाहिज़ा फरमाइये:-

आँख से ओझल हुये तो बिक गये जन्मों के मीत
प्यार के वादे थे जितने मोम के घर बन गये

वरक़ दर वरक़ मैं ही रौशन रहा
वो अलबम पे अलबम बदलती रही।

किसी दस्तख़त की करामात थी
मेरी ज़िंदगी हाथ मलती रही

बालकों की परेशानी पर गौर कर
जल समाधि लगा बैठे बालू के घर

तुम प्रीत की राहों में रहे शबनमी चादर
मैं आज भी इक मील का पत्थर हूँ, सद-अफ़्सोस

अब तक न मिली नौकरी कोई भी 'कँवल' को,
हाथों की लकीरों के अजब ठाट रहे है

कुछ धूल भी दरपन पे है लम्हों के सफ़र की
कुछ ग़म की तपिश से भी हुआ सांवला चेहरा

हौसलों के पांव, बेबसी की धुंध, ख़िरद की धूप, दिल की घाटियों, अजनबीयत की दीवार, जन्मों के मीत, मोम के घर, अहसास की चादर,

बेरोज़गारी की सुलगती रेत, हौसलों के शहर, आस्थाओं के महल, दूरियों की धूप, ख़्वाब का मौसम, अहसास की तितलियाँ, मोतबर धूप, यादों का टेप, मुलाक़ातों का मौसम, धुंध के परबत, लम्हों की दीवार, ज़ख़्मों की चादर जैसे उपमा 'तस्बीह' कँवल की अपनी उपज हैं। नये अंदाज़, नये प्रयोग, नये मुहावरों की तलाश ने कँवल को व्यक्तिगत पहचान बनाने में कामयाबी बख्शी है।

चंद शे'र मुलाहिज़ा फरमायें:-

हौसलों के पांव थे बेरोज़गारी की सुलगती रेत थी
बेबसी की धुंध में तुम खो गये हम भी भटक कर रह गये

आदिवासी औरतों के गांव में
थोड़े दिन ही ख़्वाब का मौसम रूका

जल बुझी सांसों की सारी तीलियाँ
तब खंडर ये उम्र का रौशन हुआ

आस्थाओं का मुसाफ़िर खो गया
रास्ते की बत्तियों को क्या हुआ

हौसलों के शहर बे मंज़र हुये
आस्थाओं के महल ढहने लगे

रात दरबान बन कर रहेगी मगर
दिन निकलते ही ख़्वाब अपने घर जायेंगे।

जिस्म की रिश्वते देंगे बरसात को
फिर नये पत्ते लाने शजर जायेंगे

दौरे-हाज़िर में इलेक्ट्रानिक मीडिया का प्रभाव पड़ा है। यह बहस की बात हो सकती है कि उसे वरदान माना जाय या अभिशाप। लेकिन किसी भी हस्सास शायर की तरह कँवल भी अपने आप को दौरे-हाज़िर के असर से बचा नहीं सके हैं। ये उनकी प्रशंसा की बात है। दौरे-हाज़िर की अलामतें नुमायाँ करते उनके चंद शे'र मुलाहिज़ा फरमाइये:-

बेख़बर था समन्दर मगर मछलियाँ
ऐश करती रहीं रेत पर धूप में

फूस की खोलियों में है दहशत बपा
ढूंढता है अमां इक शरर धूप में

इक मसीहा के दरपेश है मसअला
कैसे रौशन हो हर रहगुज़र धूप में

अब तो तफ़रीहे-साहिल भी है रायगां
रेत पर बस गये पत्थरों के नगर

समझदारी का मौसम ले उड़ा तिफ़्ली की रानाई
खिलौने दे के अब बच्चे को फुसलाना भी मुश्किल है

नये अंदाज़, नये प्रयोग और नये मुहावरों की तलाश खत्म नहीं होती। कँवल के शे'रों में यह प्रक्रिया अनवरत चलती है।

चंद और अशआर मुलाहिज़ा फरमाइये:-

गर्द जिस पर न महो-साल की जमने पाये
दिल की दीवार पे इक ऐसा कलेन्डर रखना

मैं अपनी ज़िद के दरीचे से झांकता ही रहा
अना के मोड़ से वापस वो हो गई होगी।

बंद करना न तअल्लुक़ के दरीचों को कभी
तुम मुलाक़ात के आंगन को मुनव्वर रखना

कांच का घर उसे याद आयेगा
खूब पछतायेगा पत्थर इक दिन

लम्हों की धूप छांव ने पहचान छीन ली
हम आइनों के गांव में इक देवदास थे

रंगीन तितलियों ने लुभाया बहुत मगर
हम पानियों के शहर में टूटे गिलास थे

'कँवल' इक समुंदर था हैरतज़दा
नदी कैसे उसको निगलती रही

पत्थरों पर घास यूँ आई उभर
जैसे गहरे ध्यान से साधू जगा

इक शिला थी एक था पत्थर 'कँवल'
दोनों के संधर्ष से चूल्हा जला

वो जलते पंख लिये बढ़ रहा था मेरी तरफ़
मेरी रंगों में ठिठुरता हुआ दिसंबर था

कँवल की शायरी के कला पक्ष के दर्शन में दो बातें और दिखाई देती है। एक तो मिथकों, विशेषकर हिंदू मिथकों को आसानी एवं सावधानी के साथ अशआर में ढालना और हिन्दी या आसान उर्दू का प्रयोग-आम लोगों की भाषा में शे'र कहने की कोशिश। दूसरी बात ये कि मातृभाषा भोजपुरी (हिन्दी) होते हुये भी कहीं से भी यह अहसास नहीं हो पाना कि उर्दू के मुश्किल या नामानूस अल्फाज़ के इस्तेमाल में इन्हें कहीं से दिक्कतों या मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। लंबी बह्र हो या मुश्किल क़ाफ़िया रदीफ़। ये अपनी इनफ़रादियत की छाप छोड़े बग़ैर चैन नहीं लेते। हिन्दी मिथकों से प्रभावित हिन्दी उपमाओं का स्वागत करते हुये उनके चंद शे'र मुलाहिज़ा फरमाईये:-

पाप जल जायेगा दुनिया का 'कँवल'
आँख जब खोलेगा शंकर इक दिन

सारी नज़रों का 'कँवल' था केन्द्र अमृत का कलश
हम घड़ा विष का निगल कर भोले शंकर बन गये

गंगा नहीं आती है कँवल मिलने को मुझसे
तनहाई का बैचेन समुंदर हूँ सद अफ़सोस

तनवीर मिली हर्फ़े-सियह से भी जहाँ को
कोरा था जो काग़ज़ वो है अब वेद का चेहरा

उलझनों की आंच में तप कर पयंबर बन गये
दर्दो-ग़म नदियों का पीकर हम समुंदर बन गये

बन संवर कर मुन्तज़िर है मंदिरों में देवियाँ
सुब्ह की किरनें बिखेरे आ रहा है कोई शख़्स

काबे से निकल के भी है इक काबे के अंदर
सीने से लगाये हमें है काशी के मंदर

पिछले पहर किसी की वो आवाज़े-पा 'कँवल'
मंदिर में दिल के कौन ये हलचल मचा गया

ज़िंदगी का कोप है दहलीज़ पर
मेरे तन ने एक वर्जित फल चखा

काम आ के मेरे हो गये बेकार सभी गुल
मैं जैसे किसी देवी का मंदिर हूँ सद अफ़सोस

लंबी बह्रें, मुश्किल क़ाफ़िया रदीफ़, नामानूस अल्फ़ाज़, नसीहत अंदाज़ाना बातें कुछ भी तो कँवल की रूकावटें नहीं बन पातीं:-

रंजिशें उभरीं तअल्लुक़ के सभी दरपन चनक कर रह गये
रूत मुलाक़ातों की आई, दो हसीं चेहरे बढ़े, लेकिन झिझककर रह गये

हादिसों की ज़र्बे पैहम ने बना डाला हमें बे जानो-बेहिस आइना
वक़्त का चेहरा भयानक था मगर हम भागते कैसे चटक रह गये

लंबी बह्रों में शे'र कहना आम तौर पर मुश्किल फ़न है लेकिन बहुत ही आसानी एवं महारत से कँवल अपने जज़्बात को लिबासे-हर्फ़ पहनाते हैं। छोटी बह्रों में शे'र कहना भी आसान नहीं लेकिन कँवल दोनों जगह यकसां महारत रखते हैं।

सभी हँस रहे थे मुझे देखकर
बिखरता हुआ मैं हवाओं में था

आ गया स्पर्श का मौसम ‘कँवल’
अनसुने किस्से बदन कहने लगे

मछलियों की टोलियाँ, पत्थर की नालिश, दरपन का वसीला, हूरो-ग़िल्मा, आम प्रयोग में कम आते हैं लेकिन कँवल ने इन्हे भी अपने ढंग से तराश कर रानाइये-ख़याल के पैकर में ढाला है:-

मछलियों की टोलियों पर नाचती थी चांदनी
रक़्से-दिलकश ये किसी पत्थर की नालिश पर रूका

ख़ुद शनासाई हो दरपन के वसीले से अलग
ग़ैर मुमकिन है कि हो दीप फ़तीले से अलग

हूरो-ग़िल्मा से न वाक़िफ़ न ही अफ़लाक नशीं
नौ-ए-इंसां की परस्तिश का गुनहगार हूँ मैं

मुस्तक़बिले-ज़रीं के ख़दो ख़ाल सँवारो
इमरोज़ को माज़ी का न आइना दिखाओ

व्यष्टि और समष्टि, जात और कायनात, ग़मे-जानां और ग़मे-दौरां, हर दौर की शायरी के जिस्मो-जान रहे हैं। जब तक शायर अपने दुख दर्द की सरहदों से बाहर निकलकर आम आदमी की परेशानियों, तकलीफ़ों से नहीं जुड़ पाता है, वह शोहरत एवं मक़बूलियत की चांदनी से दूर रहता है। रमेश ‘कँवल’ की शायरी इस जुड़ाव से अलग नहीं हैः-

न छत थी और न दीवारो-दर न आंगन था
अभाव के घने जंगल में मेरा बचपन था

मां बाप की ख़ुशियाँ थीं राहों में ‘कँवल’ अपनी
वरना हमें आता संसार से टकराना था

से व्यक्तिगत दुख दर्द का इज़हार करते करते:-

हर आदमी दुख दर्द में ग़लतां नज़र आया
इन्सान से ग़ाफ़िल मुझे यज़दां नज़र आया

उलझी रही शो'लों से हर इक शाख़े-नशेमन
गुलशन में अजब जश्ने-चिराग़ां नज़र आया

घबड़ाओ न ऐ गर्दिशे-अय्याम के मारो
अब ग़म के फ़साने में है दो चार ही सफ़हात

का सफ़र तय करती है। उन्हें ग़ैरों के ग़म में ही अपना ग़म नज़र आता है। देश का माहौल एवं आम आदमी की परेशानी उनकी चिंता एवं चिंतन का विषय बन जाते है। रहबरों की रहजनी, अपनों की बेरूख़ी और ज़िन्दगी की बेबसी इनके अशआर में ढल जाते है:-

मुजरिम ही तो मुंसिफ़ भी था अख़िर मैं सच क्या कहता
दोबारा मक़्तल में पहुँचा फिर मुझ पर महशर गुज़रा

हक़ीक़त आशना लोगों ने भी झूठी गवाही दी
'कँवल' सच्चाई को आईना दिखलाना भी मुश्किल है।

मलबूसे-मसीहा में छिपे बैठे है क़ातिल
अब ज़ीस्त न क्यों इनसे भी डरती नज़र आये।

'कँवल' कभी-कभी मायूस और निराश भी हो जाते है:-

आज भी मेरा दामन ख़ाली, आज भी दिल वीरान
वक़्त सजाये आज भी बैठा है रंगीन दुकान

फिर रहा हूँ दर-ब-दर ज़ख़्मों की चादर ओढ़कर
इन दिनों कुछ मेहरबां यूँ गर्दिशे-अय्याम है

तुम वह्म की गुफाओं में खो जाओगे 'कँवल'
हम को भी सब कहेंगे कि निष्फल प्रयास थे

लेकिन निराशा एवं मायूसी के बावजूद भी वे यह नहीं भूलते:-

मायूस नहीं तेरे करम से ये गुनहगार
दामन तेरे आगे ही तो फैलाये हुये है

वे हौसलों एवं आशा का दामन नहीं छोड़ते। पूरी तरह ना उम्मीद नहीं होते। पहले वो दबी ज़ुबान में कहते हैं:-

उभरेगा कभी जो है अभी डूबता चेहरा
कंकर न इसे मारो कि है फूल सा चेहरा

टूटते बिखरते इन हौसलों को समझाओ
उलझनों की शाखों पर लज़्ज़तों का डेरा है

वो उभर आयेगी हाथों की लकीरों में 'कँवल'
उससे मिल जाने का अहसास बराबर रखना

फिर उनकी आवाज़ बुलंद हो जाती है। उनमें आत्म विश्वास लौट आता है। स्वाभिमान उनके शे'रों के कैनवास पर तैरने लगता है। आत्मश्लाघा या गर्व उनके शे'रों का गौरव बन जाते हैं:-

मैं सुब्ह का सूरज हूँ मेरा फ़र्दा है रौशन
ये अब्रे-सियह मुझपे अबस छाये हुये हैं

आवारों सा भटक रहा हूँ गलियों में मैं आज 'कँवल'
अहले-नज़र महवे-हैरत है कौन है ये इन्सान

बना डाला मुहब्बत ने हमें रश्के-महो-अख्तर
जहाँ हैरां है इक ज़र्रे का शोहरा कहकशां तक है।

मैं सुक़रात था चीख़ता किस तरह
सुकूते-अजब भी दिशाओं में था

मुमकिन नहीं छूना मैं संवारू इन्हें कैसे
आइनों के इक ढ़ेर पे आज़र हूँ सद-अफ़्सोस

हूँ 'कँवल' मैं फूल इक मसला हुआ
बांटता हूँ दहर का ख़ुशबू मगर

तिनके का सहारा भी न था चाह के फिर भी
मैं डूब न पाया कि शनावर हूँ सद अफ़सोस

अलामत देखिये:-

कँवल थी तेज़ हवायें मेरे तआक़ुब में
मैं अपने वक़्त का जलता हुआ कलेंडर था

और आत्म विश्वास का नज़ारा ये है:-

किस तरह होता फ़ना आख़िर वजूदे-कहकशां
टूट कर बिखरे भी हम तो माहो-अख़्तर बन गये।

क्यों कँवल को समझे हो रात की अलामत तुम
वो तो एक सूरज है चंपई सवेरा है

आइये:-

गर तुझे फ़िक्रे-सुख़न है तो 'कँवल' आ इक दिन
अपने अशआर के महदूद क़बीले से अलग।

कहने वाले शायर के इस दावे:-

मैं ख़ुश लिबास मनाज़िर सजा के लाता रहा
मेरी ग़ज़ल का अलग लहजा था, अलग फ़न था

की गहराइयों में झांकने के लिये 'सावन का कँवल' से रुशनास हों।

डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी
स्नातकोत्तर उर्दू विभाग
भागलपुर विश्वविद्यालय
भागलपुर-812007 (बिहार)
फ़ोन-0641-423633

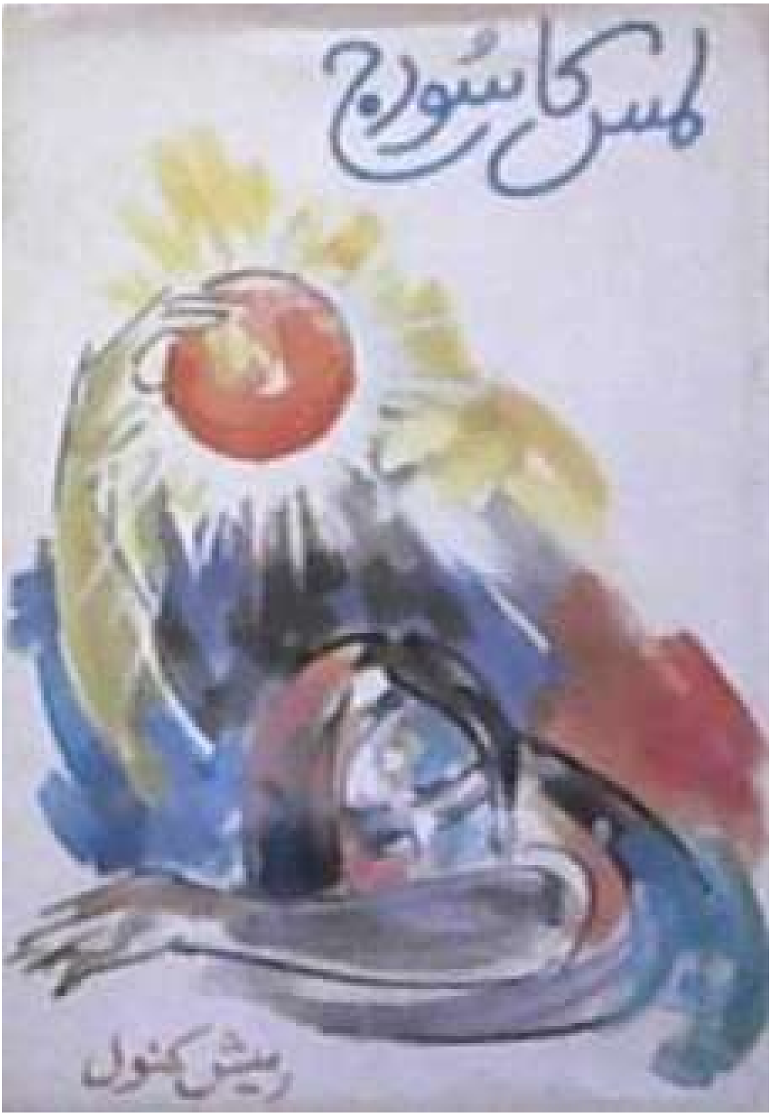
لمس کا سورج
رمیش کنول

पेश लफ़्ज़: डॉ. लुत्फ़-उर-रहमान

श्री रमेश कँवल का शेरी मजमूआ "लम्स का सूरज" मेरे पेश-ए-नज़र है। यह मजमूआ ग़ज़लों पर मुश्तमिल है जिस में सादगी, ताज़गी और जिद्दत-आफ़रीनी जा-ब-जा नुमायां नज़र आती है।

गुज़रे मौसम का पता सुर्ख़ लबों पर रखना
अपनी आँखों में मेरे क़ुर्ब का मंज़र रखना

तुम गए साल महीनों को संजो कर रखना
याद आएगी मेरी याद बराबर रखना

ऐसी ख़ुशबू उड़ी दो बदन से 'कँवल'
चाँद महव-ए-ख़याल-ए-हसीं सो गया

अस्र-ए-हाज़िर की हिस्सियत ब-ज़ाहिर ना-क़ाबिल-ए-इज़हार-ओ-बयान है इस लिए कि ये अहद मुतनव्वे अफ़कार-ओ-ख़याल से दस्त-ओ-गरेबाँ नज़र आता है और किसी भी हस्सास और बेदार ज़ेहन के लिए ये फ़ैसला दुश्वार है कि जीने की कौन सी राह वाक़ई मोतबर और पुर-सुकून है। सारफ़ियत की जहाँगीरी ने अख़लाक़ी और रूहानी क़द्रों को मुतज़लज़ल कर दिया है और अलमिया ये है कि कोई साइंटिफ़िक कल्चर नुमायाँ तौर पर उभर कर सामने नहीं आ सका है इस लिए आज का आदमी मौज़ूइयत-ओ-मारूज़ियत की कशमकश में जाँ-ब-लब हो रहा है। यही बे-जड़ी और बे-ज़मीनी है कि किसी भी तहज़ीब और-सक़ाफ़त से अपने बातिनी और नस्ली रिश्ते का एहसास ज़ेर-ओ-ज़बर हो कर रह गया है। चुनाँचे आज के अदब में भी उलझन, कशमकश, बे-समती, बे-ज़ारी और लमहाती गुरेज़ और वक़्त पनाह-गाह की नफ़सियात हावी हो रही है। जिस ने रूहानियत पर मादियत को और जमालियाती कैफ़ियत पर जिस्मानी तलज़्ज़ुज़ को फ़ौक़ियत बख़्श दी है। आज के अदब में ये सब कुछ बड़ी हद तक नुमायाँ है।

श्री रमेश 'कँवल' आज के ज़हीन और हस्सास अदीबों में अपनी मख़सूस तख़लीक़ी शख़्सियत रखते हैं इस लिए अपने एहसास-ओ-जज़्बे की इन्फ़रादी रौ के पहलू-ब-पहलू इज्तिमाई नफ़सियात के ज़ेर-ए-असर ऐसे अशआर की तख़लीक़ करते हैं जो इन्फ़रादी होते हुए भी ज़मानी के बदले इज्तिमाई अंदाज़-ए-फ़िक्र-ओ-नज़र रखता है। मसलन:-

बंद करना न ताल्लुक़ के दरीचे को कभी
तुम मुलाक़ात के आँगन को मुनव्वर रखना

एक जलता हुआ सूरज है मेरी ज़ात में क़ैद
तुम भी लहराता हुआ तन का समुंदर रखना

जल गए यादों के बाम-ओ-दर धूप में
पर सलामत है दिल का खंडहर धूप में

हो न जाए कहीं बे-असर धूप में
यूँ परीशाँ है रंग-ए-सहर धूप में

उभरते टूटते रिश्तों का खोखलापन था
शजर-शजर पे उन्हीं लज़्ज़तों का गुलशन था

झिझकती झेंपती गज-गामिनी नदी थी उधर
इधर उमंडते समुंदर का बावलापन था

वरक़-वरक़ पे मुनव्वर थीं लब की तहरीरें
किताब-ए-जिस्म का हर बाब मुझ से रोशन था

नदी ने रेत बनाया था काट कर जिन को
उन्हीं चट्टानों का फिर डेल्टा पे बंधन था

मैं ख़ुश-लिबास मनाज़िर सजा के लाता रहा
मेरी ग़ज़ल का अलग लहजा था अलग फ़न था

रंजिशें उभरीं ताल्लुक़ के सभी दर्पन चटख़ कर रह गए
रुत मुलाक़ातों की आई, दो हसीं चेहरे बढ़े लेकिन झिझक कर रह गए

मेरे पीछे वहम-ओ-गुमाँ की आसेबी आवाज़ें थीं
अंदेशों के जंगल से मैं रात बहुत डर कर निकला

आओ और आकर बसा दो मेरे ख़्वाबों के खंडहर
क्या पता कब ख़त्म हो जाए ये साँसों का सफ़र

मेरे दिल की घाटियों में रूबरू है आज कल
तेरे मिलने की ख़ुशी तुझ से बिछड़ जाने का डर

जब दरख़्तों को ज़बाँ मिल जाएगी तब देखना
मौसमों के क़हर से चीख़ेंगे ये बर्ग-ओ-शजर

समझदारी का मौसम ले उड़ा तिफ़्ली की रानाई
खिलौने दे के अब बच्चे को बहलाना भी मुश्किल है

निगाह-ओ-दिल में हंगामों के आसेबी जज़ीरे हैं
मगर चेहरे के सन्नाटे को झुठलाना भी मुश्किल है

अजनबीयत की दीवार रोशन रही
वो कहीं सो गया, मैं कहीं सो गया

आँख से ओझल हुए तो बिक गए जन्मों के मीत
प्यार के वादे थे जितने मोम के घर बन गए

उलझी रही शोलों से हर इक शाख़-ए-नशेमन
गुलशन में अजब जश्न-ए-चराग़ाँ नज़र आया

वो जो लगता था पयंबर इक दिन
अपना ही भूल गया घर इक दिन

लाज रख लेगी मेरे जज़्बों की
मेरे एहसास की चादर इक दिन

ये अशआर शाहिद हैं कि रमेश 'कँवल' के एहसास में ताज़गी और बयान में सादगी-ओ-बेसाख़्तगी है। हिंदी असातीर और रवायत-ए-सुख़न ने उन के उस्लूब को नर्म-ओ-नाज़ुक बना दिया है और हिंदी लफ़्ज़ों की शमूलियत से गंगा-जमुनी तहज़ीब का एक दिलकश नज़ारा भी देखने को मिलता है जो यक़ीनन क़ाबिल-ए-तहसीन है। हद तो यह है कि उन के यहाँ अलफ़ाज़ का जो दर-ओ-बस्त है वो भी एक ख़ास हुस्न रखता है। उन की लफ़्ज़ियात का निज़ाम भी इन्फ़रादी असर-ओ-तास्सूर का हामिल है। दिल की घाटियों, अजनबीयत की दीवार, जन्मों के मीत, मोम के घर, जश्न-ए-चराग़ॉं और एहसास की चादर वग़ैरह जैसे लफ़्ज़ी इंतख़ाब किसी कम-तर दर्जे के शायर के बस की बात नहीं। चंद मज़ीद अशआर मुलाहज़ा फ़र्माइए जिस में उन के फ़िक्र-ओ-नज़र, तख़य्युल और समाजी हक़ीक़त-निगारी के जौहर-ए-आबदार लहराते नज़र आते हैं--

आस्थाओं का मुसाफ़िर खो गया
रास्तों की बत्तियों को क्या हुआ

आदिवासी औरतों के गाँव में
थोड़े दिन ही ख़्वाब का मौसम रुका

इक मसीहा के दरपेश है मसला
कैसे रोशन हो हर रहगुज़र धूप में

शहर की बाँहों में पलती सभ्यता बतलाएगी कि गाँव की
सादगी और प्यार किस झुरमुट में किस डर से दुबक कर रह गए

जोबन के दरीचों पे कोई पर्दा नहीं था
उस शोख को जिस्मों की नुमाइश पे यक़ीं था

जब तिरी बंदगी नहीं होती
ज़िंदगी ज़िंदगी नहीं होती

बात क्या है कि आज कल मुझ को
तुम से मिल कर ख़ुशी नहीं होती

यह तो अपनी अपनी पसंद है
तुझे भाई ज़ीस्त, क़ज़ा मुझे

ज़ख़्म ही ज़ख़्म मुझे गर्दिश-ए-दौरां ने दिए
एक मुद्दत से मुसर्रत का तलबगार हूँ मैं

इख़्तियार अपनी ही हस्ती पर नहीं
आ गई है ज़िंदगी किस मोड़ पर

दिल की दुनिया हो गई ज़ेर-ओ-ज़बर
जब भी याद आया तेरा तर्ज़-ए-सफ़र

घबराओ न ऐ गर्दिश-ए-अय्याम के मारो
अब ग़म के फ़साने में हैं दो चार ही सफ़हात

अगरचे यह शेरी मजमूआ रमेश 'कँवल' की तख़लीक़ी ज़िंदगी का इब्तिदाईया है लेकिन आसार बता रहे हैं कि अगली मंज़िलें इम्कानात की दौलत से मालामाल हैं। मैं अहल-ए-फ़िक्र-ओ-नज़र को इस यक़ीन के साथ पेश-ए-नज़र शेरी मजमूआ के मुताले की दावत देता हूँ कि इस में जमालियाती तस्कीन-ओ-तसल्ली के ख़ूबसूरत लम्हों की हम-आग़ोशी मुमकिन है।

मेयआर पब्लिकैशन, दिल्ली से 1997 में प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह
'लम्स का सूरज' के पेश लफ़्ज़ पृष्ठ (9-15) से उद्धृत

डॉ. लुत्फ़-उर-रहमान
सदर शोअबा उर्दू, भागलपुर यूनिवर्सिटी,
भागलपुर-बिहार

दुख की मीठी आँच का शायर-रमेश 'कँवल': प्रो. (डॉ) मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

बनी-नौ-ए-आदम में ख़ुदा ने चंद शख़्सियतों को ख़ास सलाहियतें वदीअत की हैं जो उन्हें अवाम से मुमताज़ करती हैं। बुलंद-पाया शोअरा और अदबा भी उन्हीं में शुमार किए जा सकते हैं। जहाँ तक शोअरा का ताल्लुक़ है दुनिया के हर अदब में ऐसे शायर ज़रूर नज़र आते हैं जिन की अज़मत-ओ-बुज़ुर्गी, ख़ुदा-दाद सलाहियत, तख़य्युल की बुलंदी, दिल की गर्मी और जज़्बात-ए-फ़रावाँ की वजह से उन्हें क़द्र-ओ-मंज़िलत की निगाह से देखा जाता है।

उर्दू अदब में भी ऐसे शोअरा की तादाद कम नहीं है। ये शोअरा क़दीम-ओ-जदीद हर दौर में मौजूद रहे हैं। जब हम जदीद शोअरा पर नज़र डालते हैं तो ग़ज़ल-गो की इन्फ़रादियत अपनी तरफ़ भरपूर तवानाई के साथ मुतवज्जा करती है। ग़ज़ल इज्तिमाई इबलाग़ की एक उम्दा मिसाल है। यह हर दौर की फ़िक्र की अक्कासी करती है। दरअसल ग़ज़ल महज़ ग़ज़ाल का कर्ब या औरत से बात करने का एक शरीफ़ाना तरीक़ा ही नहीं बल्कि यह तो हर दौर की एक ऐसी तारीख़ी दस्तावेज़ है जिस से पूरी नस्ल की याददाश्त को अज़-सर-ए-नौ मुरत्तब किया जा सकता है।

जिस तरह वह आग जिस में हिद्दत ज़्यादा होती है लौ देने लगती है इसी तरह ज़िंदगी एक शोला है। ज़ायद क़ुव्वत-ए-हयात, नफ़्स-ए-इंसान में लौ देती है तो उस के शोले बुलंद होने लगते हैं। यही हरारत जब आवाज़ में तब्दील हो कर एक सलीक़े से इज़हार पाती है तो शेर-ओ-अदब कहलाती है। ऐसे ही इन्फ़रादी और इज्तिमाई अश्काल को पेश करने वाले एक नए ग़ज़ल-गो रमेश 'कँवल' भी हैं जो बा-शऊर ज़ेहन से यह दावा करते हैं:

एक जलता हुआ सूरज है मेरी ज़ात में क़ैद
तुम भी लहराता हुआ तन का समुंदर रखना

तर्ज़-ए-फ़िक्र को नई ज़िंदगी बख़्शने के लिए उन्होंने जो लब-ओ-लहजा इख़्तियार किया है उस से उस्लूब-ए-सुख़न और पैराया-ए-इज़्हार से एक जहान-ए-नौ, एक ताज़ा फ़िज़ा और तख़य्युल-ओ-तफ़क्कुर की नई वुसअतों का सुराग़ मिलता है। उन्होंने रिवायत के बेहतरीन सरमाए से कस्ब-ए-फ़ैज़ किया है। लेकिन उन का अंदाज़ मुजतहिदाना है क्योंकि उन की तराकीब और तश्बीहों में एक ताज़गी और नुदरत का एहसास हर शेर में नुमायां नज़र आता है

रात दरबान बन कर रहेगी मगर
दिन निकलते ही ख़्वाब अपने घर जाएँगे

मैं अपनी ज़िद के दरीचे से झाँकता ही रहा
अना के मोड़ से वापस वह हो गई होगी

मुझे भी नीला समुंदर निगल रहा है कँवल
वह चाँदनी भी जज़ीरों में खो गई होगी

हौसलों के शहर बे-मंज़र हुए
आस्थाओं के महल ढहने लगे

उदास सूर्य-मुखी खो गई थी सूरज में
थकन से चूर मगर रोशनी का बिस्तर था

दरअसल रमेश 'कँवल' जज़्बे और एहसास के शायर हैं इस लिए कि दुख की मीठी आँच ने उन के फ़न को चाँदनी से आबियारा है। उन की ग़ज़लों में जज़्बा-ओ-एहसास की इतनी सच्ची और सही तस्वीर मिलती है कि वफ़ा के रास्ते का हर मुसाफ़िर अपने आप को उस आग में जलता हुआ महसूस करता है।

सुबह से एक साया भटकता रहा
इक दरीचा रहा मुंतज़िर धूप में

मेरे तन में ख़ैमा-ज़न थी इक सुलगती दोपहर
वो भी था पहने हुए बर्फ़ीले मौसम का लिबास

नैन मेरे खिड़की से किसी को देख रहे थे जाते हुए
और शिकन की चादर ओढ़े घर में इक बिस्तर तन्हा

उस की आँखों ने ताईद-ए-इक़रार की
थरथराते लबों पर 'नहीं' सो गया

शायरी उस अमल का नाम है जिस के ज़रिए फ़र्द महसूसात से मानवियत की तरफ़ सफ़र करता है और हिस्सी-ओ-मानवी तौर पर ग़ज़ल में दोनों को यक-जान पाता है। ज़ात और कायनात की इस आगही, महसूसात और मानवियत की इस यक-जाई से जो इबलाग़ पैदा होता है उस से मुत्तसिफ़ हो कर शायरी फ़र्द ही की नहीं, अपने ज़माने की भी तर्जुमान बन जाती है। रमेश 'कँवल' के यहाँ ऐसी तर्जुमानी ब-दर्जा-ए-अत्तम मौजूद है-

हवस की निगाहें ख़रीदार थीं
पकौड़ी वह मासूम तलती रही

अब तो तफ़रीह-ए-साहिल भी है राईगाँ
रेत पर बस गए पत्थरों के नगर

हौसलों के पाँव उठे थे मगर बेरोज़गारी की सुलगती रेत थी
बे-बसी की धुंध में तुम खो गए हम भी भटक कर रह गए

अजीब शर्त थी दंगा कराने वालों की
नगर में रिश्तों का चेहरा उड़ा उड़ा सा था

शायरी हुस्न-ओ-मानी को तह-ब-तह खोलने, इज़्हार की ऊँचाइयों से नए आफ़ाक़ की तलाश, दरून-ए-ख़ाना और बैरून-ए-दर, माज़ी, हाल और मुस्तक़बिल और उन से होकर गुज़रते हुए लम्हात को एक वहदत में बाँधने का नाम है। रमेश 'कँवल' की ग़ज़लें ऐसा आईना हैं जिन में ज़माना के हर मौसम की झलक देखी जा सकती है। लेकिन उन्हें दुख है कि मौजूदा बदलती अक़दार ने फ़र्द की अहमियत को कम कर दिया है और लोगों के रवैये बदल गए हैं। यही वजह है कि उन के लहजे में एहतजाज और तल्ख़ी की आमेज़िश मिलती है।

हक़ीक़त-आशना लोगों ने भी झूटी गवाही दी
'कँवल' सच्चाई को आईना दिखलाना भी मुश्किल है

मौसम के बदलते ही बदल जाएँगे हम तुम
गो सच है अभी रंज-ओ-ख़ुशी बाँट रहे हैं

तुम प्रीत की राहों में रहे शबनमी चादर
मैं आज भी इक मील का पत्थर हूँ सद-अफ़सोस

रमेश 'कँवल' ने दिल की शायरी भी की है जिसे समझने के लिए कर्ब को, दुख को महसूस करने के सिलसिले में ला-शऊर और तहत-उश-शऊर के फ़र्क़ से वाक़फ़ियत की ज़रूरत नहीं बल्कि यह इंसान के रोज़मर्रा के तजुर्बात हैं जिन की धड़कन आसानी से सुनी जा सकती है।

काली रातें ओढ़ कर सोने लगे जब दो बदन आई बहार
पत्तियों की ओट में खिलते हुए दो गुल दमक कर रह गए

लम्हों की धूप छाँव ने पहचान छीन ली
हम आईनों के गाँव में इक देवदास थे

न रास आ सकी जिस्मों की दोपहर उस को
लबों की धूप में वो बे-क़रार था कितना

पिछले पहर किसी की वो आवाज़-ए-पा 'कँवल'
मंदिर में दिल के कौन यह हलचल मचा गया

आज मुआशर्ती, सियासी और मुआशी हालात ने इंसानी हौसलों और रिश्तों को रौंद डाला है। फिर भी रमेश 'कँवल' ना-उम्मीद नहीं हैं बल्कि मशवरा देते हैं कि:

टूटते बिखरते इन हौसलों को समझाओ
उलझनों की शाख़ों पर लज़्ज़तों का डेरा है

क्यों 'कँवल' को समझे हो रात की अलामत तुम
वो तो एक सूरज है चंपई सवेरा है

गर्दिशों का है मुक़द्दर पे कड़ा पहरा मगर
हर क़दम पर नई तदबीर लिए बैठे हैं

रमेश 'कँवल' यहाँ तक कहते हैं कि:

किस तरह होता फ़ना आख़िर वजूद-ए-कहकशाँ
टूट कर बिखरे भी हम तो माह-ओ-अख़्तर बन गए

अना को बरक़रार रखने के अज़्म और उम्मीद के फूल खिलाने के लिए रमेश 'कँवल' असातीर का भी सहारा लेते हैं और हिंदू मिथ (Myth) को ग़ज़ल का रूप अता करते हैं:

तन्वीर मिली हर्फ़-ए-सियह से भी जहाँ को
कोरा था जो काग़ज़ वह है अब वेद का चेहरा

पाप जल जाएगा दुनिया का 'कँवल'
आँख जब खोलेगा शंकर इक दिन

रमेश 'कँवल' लफ़्ज़ों को सेहत के साथ बरतना ख़ूब जानते हैं, इसी लिए उन की ग़ज़लों में फ़नकारी और तख़लीक़ की आँच दोनों मिलती है। दर्द का जो

चराग़ उन की ग़ज़लों के दरीचों से रोशन नज़र आता है उस की रोशनी में चेहरों की दर्दनाकी और उभर आती है। रमेश 'कँवल' के मिज़ाज को ग़ज़ल से ख़ास मुनासिबत है और यह बड़ी बात है।

मेयआर पब्लिकैशन, दिल्ली से 1997 में प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह 'लम्स का सूरज' के पेश लफ़्ज़ पृष्ठ (9-15) से उद्धृत

प्रो. (डॉ) मनाज़िर आशिक़ हरगानवी
मारवाड़ी कॉलेज, भागलपुर, बिहार

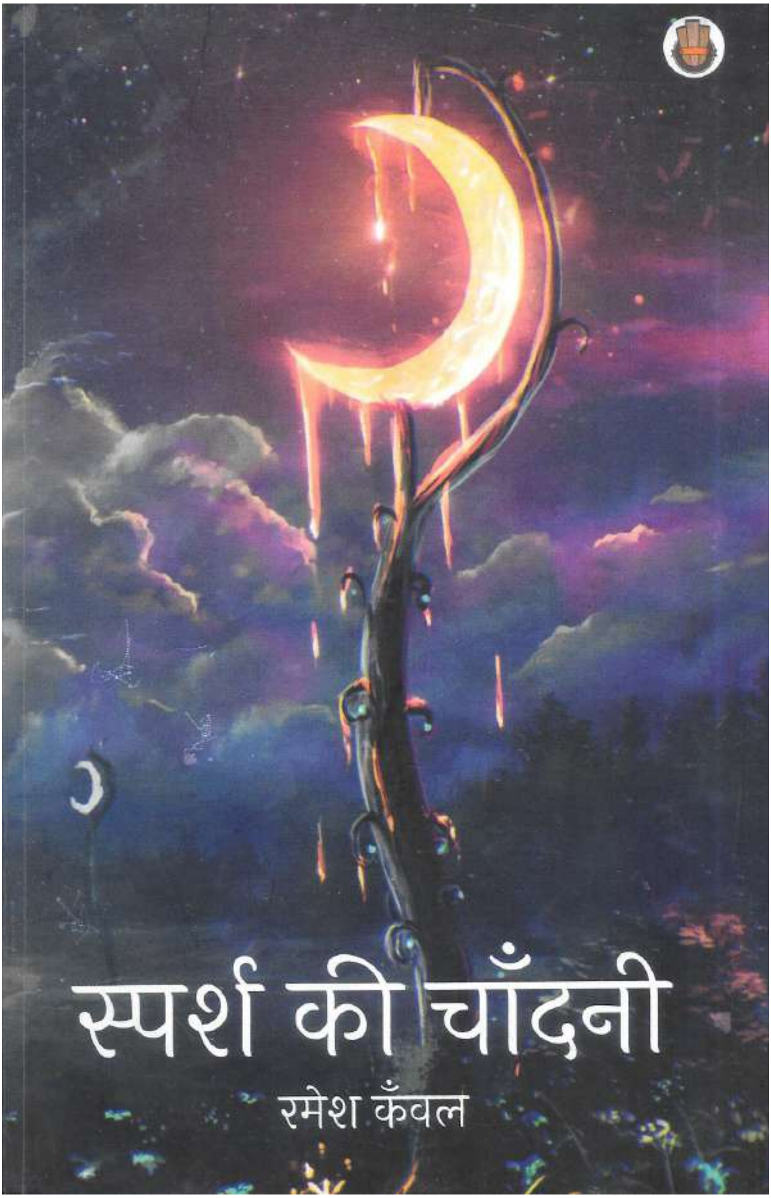
स्पर्श की चाँदनी
रमेश कँवल

स्पर्श की चाँदनी में रमेश 'कँवल' की शख़्सीयत और उनका कमाले-फ़न: सागर सियालकोटी

अपनी बात कमलेश भट्ट 'कमल' के इस शे'र से शुरू करता हूँ कि

फ़ेसबुक पर रोज़ होती हैं मुलाक़ातें
हम कहीं आया, कहीं जाया नहीं करते

25 अगस्त, 1953 को क़स्बा जितौरा, तहसील पीरो, ज़िला आरा (भोजपुर), बिहार में श्रीमती कमला देवी (माँ) और स्मृतिशेष श्री हाकिम चंद प्रसाद (पिता) के घर अवतरित हुए रमेश जी आज भी ग्रामीण भाई-चारा के सुसंस्कारों को हृदय में संजोये हुए हैं। सुसंस्कारों का प्रफुल्लित पुष्प मकरंद ही उनके जीवन को गतिमान बनाये हुए है और तहज़ीब की ख़ुशबू ही उनकी रहनुमाई कर रही है। वे शोहरतों की शहज़ादी का हमसफ़र होने से ज़्यादा नेक इरादों के फरिश्तों के हम क़दम चलना पसंद करते हैं। उनसे बात कर मैं अहमद फ़राज़ का ये शे'र बेसाख़्ता गुनगुनाने लगा:

ज़िन्दगी से यही गिला है मुझे
तू बहुत देर से मिला है मुझे

उनके ताज़ा मजमूआ 'स्पर्श की चाँदनी' पढ़ कर मेरे ज़हन में रुख़साना नूर साहिबा का ये शे'र तैरने लगा:

खिड़कियाँ खोली नहीं दीवार घर की तोड़ दी
इतना ही वो कर सका ताज़ा हवा के नाम पर

रमेश 'कँवल' ने इस किताब में अनेकानेक विधाओं यथा ग़ज़लों, नज़्मों, सेहरा, माहिया, क़तआत फ़ुटकर इत्यादि को शामिल किया है। लिहाज़ा मुझे ये शे'र कहना पड़ा ताकि हर तरफ़ से शाइरी की ताज़ा हवा आये। जहाँ तक

‘कँवल’ जी की शाइरी की बात है मैं समझता हूँ उन्होने शाइरी को Passion becomes passion not Profession के तौर पर लिया है। जब वे कहते हैं:

गुज़रे मौसम का पता सुर्ख़ लबों पर रखना
अपनी आँखों में मेरे क़ुर्ब का मंज़र रखना

साजन है सीमा पर
ज़ख़्मों
का
लश्कर
क्या करना बन ठन कर
बाँहों में चले आओ
यौवन
आमंत्रण
सीने में समा जाओ

रूठ जाने का कोई वक़्त नहीं
पर मनाने में वक़्त लगता है

रमेश ‘कँवल’ की नज़्मों पर नज़रे-सानी करें तो उनमें बहुत सारे रंग मिलेंगे। पर्यावरण संरक्षण और ट्रैफ़िक जाम आज की ज्वलंत समस्याएँ हैं तो मतदाता जागरूकता गान हर साल मतदाता सूची में शामिल होने वाले युवा वर्ग को मतदान प्रक्रिया का क्रमिक विवरण बताते हुए उन्हें लोकतंत्र को जीवित रखने का सफल आह्वान है। कारगिल शहीदों के नाम नज़्म शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए नमन करने का सुन्दर चित्रण है।

साहिर लुधियानवी इनके महबूब शाइर रहे हैं। जब 25 अक्टूबर, 1980 को हृदय के शाइर साहिर की मौत हृदयाघात से हुई तो रमेश जी अत्यंत ही मर्माहत हुए। उदासियों ने इनकी आत्मा को घेर लिया। ख़िराजे-अक़ीदत के अल्फ़ाज़ पर ग़ौर फ़रमाइए:

होंटों पे तल्खियों के समंदर उदास हैं
आँखों में सच्चे प्यार के मंज़र उदास हैं
शीशे के जिस्म ही नहीं 'साहिर' की मौत से
जमुना किनारे ताज के पत्थर उदास हैं

रमेश 'कँवल' ने हुस्ने-रिवायत क़दीम शाइरी के साथ-साथ जदीद शाइरी का दामन भी थामे रखा है। आपने समाजी, सियासी और इन्सानी ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं पर कुछ न कुछ कहा है जिसमें अजमाल यान ख़ूबसूरती झलकती है।

जहाँ तक आलोचनात्मक नज़रिए की बात है लोगों ने तो ग़ालिब तक को नहीं बख्शा है। उनमें भी ग़लतियाँ निकाल दीं। मेरा अपना नज़रिया है कि शे'रो-शायरी में जुस्तजू –ए-हुस्नो-जमाल और ख़ूबसूरत इस्तआरों की तलाश होनी चाहिए। कँवल के यहाँ भी कमियाँ हो सकती हैं लेकिन मैंने उनकी शायरी का भरपूर लुत्फ़ उठाया है और आपको भी उनकी शाइरी के फ़न के गुलिस्तान में मुहब्बत की ख़ुशबू तलाशने की दावत देता हूँ। मुतमईन रहिये आप मसर्रत की परियों से रूबरू होंगे।

वरक़-वरक़ पे मुनव्वर हैं लब की तहरीरें
किताबे-जिस्म का हर बाब मुझसे रौशन है

मैं रमेश 'कँवल' की काविशों को सलाम करता हूँ।

मज़्मून का इख़्तसार अपने एक शे'र से करने की इजाज़त चाहता हूँ:

परिंदे ही मेरी परवाज़ का मरकज़ रहे 'सागर'
मैं उड़ने का हुनर बस सीख लेता हूँ उड़ानों से

सागर सियालकोटी

नेक तमन्नाओं के साथ

बसंत पंचमी
10 फ़रवरी 2019

1077 फेज़ 1 अर्बन स्टेट
डूगरी रोड, लुधियाना-141013
मोबाइल 987 686 5957

रमेश कँवल की ग़ज़लों की थपकियाँ सुला देने वाली नहीं होतीं: अनिरुद्ध सिन्हा

ग़ज़ल का प्रत्येक शे'र एक सार्थक संकेत करने की क्षमता रख़ता है। चाहे वो सांस्कृतिक, राजनीतिक या सामाजिक हो। हर पहलू को उसके जातीय आधार पर समझने में ये सफ़ल है। कारण है, इसकी रचना-प्रक्रिया से लेकर सम्प्रेषण-प्रक्रिया तक शायर की लंबी भूमिका रहती है, संभवतः सौंदर्यात्मक और वैचारिक अनुभूति की कसौटी पर कसे जाने तक। ग़ज़ल की कथ्य-संस्कृति एक व्यापक और गहरी अवधारणा है। अपने समय की मुश्किलों और तल्ख़ सच्चाइयों की सूचनाएँ देकर जीवन और समाज के अंतर्विरोधों के विविध रूपों को अभिव्यक्त करती है।

रमेश कँवल का चेहरा ग़ज़ल की दुनिया में कोई नया नहीं है। इनकी ग़ज़लें पारंपरिक विषयों से लेकर आज की वर्जनाओं पर भी कटाक्ष करती हैं। पूरा ग़ज़ल-संसार भावावेग और अनुभूति की सच्चाई पर खड़ा है। ऐसा संसार जिसमें अतीत के गुदगुदाने वाले रहस्य, वर्तमान की परेशान करने वाली सच्चाइयाँ, और भविष्य के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाइयाँ हैं। इनका आनेवाला नया (ग़ज़ल एवं नज़्म) संग्रह "स्पर्श की चाँदनी" में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो इन कथनों को बल देते हैं। संग्रह में यूँ तो ग़ज़ल और नज़्म के अतिरिक्त सेहरा, माहिए, क़तआत और कुछ फ़ुटकर शे'र भी हैं जो अपने-अपने सधे शिल्प और अर्थ-व्यंजना में सामान्य से हटकर हैं।

कर सके कुछ भी कहाँ अन्ना या केजरीवाल भी
जब करप्सन मुल्क में नज़्र-ए सियासत हो गई
मैं न जा पाया किसी मंदिर या मस्ज़िद में कँवल
माँ के चरणों में मेरी पूजा इबादत हो गई

आज हम जिस सियासी व्यवस्था की ज़मीन और वातावरण में जी रहे और साँसें ले रहे हैं वो सच्चाई, ईमानदारी और भरोसे के अनुकूल नहीं हैं। प्रथम शे'र में प्रतीक के तौर पर अन्ना और केजरीवाल आए हैं जिनके सहारे देश से भ्रष्टाचार दूर करने की कल्पना की गई थी लेकिन तस्वीर जो थी वही बनी रही। कारण जो भी हो, परिवेश के अनुसार यहाँ पर संतुलित भाषा, प्रतीक और सुगठित छंदों के आधार पर अपनी सामाजिक भावना को मूर्त रूप देने की सफल कोशिश की गई है। शायर का रूझान आदर्शों और व्यैक्तिक स्वपनों का साथ छोडकर एक साधारण अनुभूति और यथार्थ की ओर है। आज के यथार्थ के प्रति आदर भाव नहीं बल्कि तिरस्कार ध्वनित होता है। आज के सियासी सामाजिकों ने सामाजिकता के धोखे में रखकर जनता को किस प्रकार ठगने का उपक्रम किया है, वो सहजता और सरलता के साथ व्यक्त हुआ है। साहित्य जनसामान्य की पीड़ा, उसके सुख-दुख की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है और ये अभिव्यक्ति ही साहित्यकार का कर्म है। रमेश कँवल की ग़ज़लों और नज़्मों में इस दायित्व का भरपूर निर्वाह हुआ है।

दिन से डर कैसा हसीं रात से जी डरता है
ज़िन्दगी तेरे तिलिस्मात से जी डरता है
कब बिछड़ जाएँगे, कब देंगे दग़ा क्या मालूम
गुनगुनाते हुए लम्हात से जी डरता है

अपनी ग़ज़लों की दुनिया में शायर रमेश कँवल के पाँव यथार्थ की भूमि पर टिके होते हैं उनका हृदय ख़ुद से और मनुष्य से प्यार करता है। एक सजग शायर की तरह समकालीन विसंगतियों को पूरी तरह से जाँच परख कर ही अपनी आशंका को वाणी देते हैं। यथार्थवाद के नाम पर सिर्फ़ मनुष्य की बुराइयों और दुर्बलताओं का ही उद्घाटन नहीं करते बल्कि उनके परिणामों की ओर भी इशारा करते हैं। इनकी ग़ज़लों में उज्जवल पक्ष और अंधकारमय पक्ष दोनों हैं आदर्श और यथार्थ—मतलब आदर्श और यथार्थ साथ-साथ चलते हैं। आदर्शवाद ऊबे हुए जीवन के लिए एक सुखद वैविध्य उत्पन्न करता है तो वहीं यथार्थवाद

जीवन के पलायन से रोकते हुए परिस्थितियों के विरुद्ध आक्रोश और विरोध की भूमि तैयार करता है। इन दोनों विशेषताओं के कारण इनकी ग़ज़लों में एक विशेष तरह की चमक देखने को मिलती है। रमेश कँवल यथार्थ के साथ अमित संभावनावों को भी उसके साथ शामिल कर लेते हैं जहाँ पर यथार्थवाद और आदर्शवाद एक साथ मिल जाते हैं। ग़ज़लों का कथ्य वर्तमान की वास्तविकता में सीमाबद्ध रहता-मसलन पाप-पुण्य, धूप-छाँह, और सुख-दुख मिल राहत है।

इस संग्रह की अधिकांश ग़ज़लों में सौन्दर्य और प्रेम को पारिवारिक, ग्राहस्थिक, जीवन की मर्यादाओं के बीच प्रतिष्ठित करने का सफल प्रयस किया है। प्रेम के माध्यम से "कला स्वरूप शस्त्र" का स्वतंत्र अस्तित्व उभरकर प्रायः सामने आ जाता है...

मेरे सामर्थ्य और साहस के पीछे
तेरे सौंदर्य की कुछ तितलियाँ हैं
इस सुनहरी धूप की गुस्ताख़ियाँ तो देखिये
सीम तन ज़ोहरा-जबीं क्यों कश्ती-ए-साहिल में है

इन दोनों शे'रों को पारिवारिक और सांसारिक प्रेम की बुनावट और मज़बूती के रूप में भी ले सकते हैं। आध्यात्मिक और ईश्वर-प्रेम के व्यंजक रूप में भी। इन्हें लौकिक और अलौकिक दोनों स्तरों पर परिभाषित करने की गुंजाइश बनती है।

कुल मिलाकर कह सकते हैं रमेश कँवल का पूरा ग़ज़ल-संसार आत्मीय और विश्वसनीय स्तर पर आत्मगत शैली में रचा हुआ है।

अनिरुद्ध सिन्हा
गुलज़ार पोखर,
मुंगेर, बिहार-811201
Contact: 7488542351
Email:anirudhsinhamunger@gmail.com

स्पर्श की चाँदनी-अरूज़ की कसौटी पर कसी हुई ग़ज़लें: डॉ. दरवेश भारती

'स्पर्श की चाँदनी' की ग़ज़लों से गुज़रते हुए सुखद अनुभूति हुई कि ये ग़ज़लें ज़िन्दगी और ज़िन्दगी से वाबस्ता सच्चाइयों की तर्जुमानी करती हैं। इसमें जहाँ राजलकार ने पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और दुनियावी मसाइल को अपनी ग़ज़लों का विषय बनाया है; वहीं उन्होंने इन मसाइल का हल भी बहुत ख़ूबसूरती से पेश करने में कामयाबी हासिल की है। उनके कलाम में गंगो-जमुनी तहजीब का इज़हार गंगो-जमुनी ज़बान यानी हिन्दी-उर्दू में निहायत सादगी से किया गया है। आभासी संसार और अत्याधुनिक माहौल से भी वे खूब वाक़िफ़ हैं। इनसे सम्बद्ध अनेक अशआर उनके कलाम में मौजूद हैं। प्राचीन और नवीन परम्परा से जुड़े रहने का भाव उनकी शख़्सीयत को अज़ीम बना देता है। अपनी राज़लों के हवाले से पाठकों को हक़ीक़त से रूबरू कराना ही ग़ज़लकार का अहम मक़सद है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि कँवल साहिब ने अरूज़ की कसौटी पर कसी हुई इन राज़लों में ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं पर अपना नज़रिया पेश करने का सफल प्रयास किया है। यक़ीनन यह संग्रह सुधी पाठक-वर्ग को ज़रूर मुतअस्सिर करेगा।

डॉ. 'दरवेश' भारती

सम्पर्क: 8383809043

यारों के यार हैं रमेश कँवल-अरुण कुमार आर्य: रमेश कँवल की नज़्र

यारों के यार हैं रमेश कँवल
प्यार ही प्यार हैं रमेश कँवल

जिनके अशआर दिल को छू जाएँ
वैसे फनकार हैं रमेश कँवल

मुश्किलों में भी मुस्कुराते हैं
इतने दमदार हैं रमेश कँवल

क़ल्ब के साफ़ नूर चेहरे पर
शाने-किरदार हैं रमेश कँवल

ज़हर हँस हँस के पी लिया जैसे
शिव के अवतार हैं रमेश कँवल

आज की पुर फ़रेब दुनिया में
सच का इज़हार हैं रमेश कँवल

कोई तूफ़ाँ गिरा नहीं सकता
ऊँची दीवार हैं रमेश कँवल

इल्मो-तालीम के समंदर के
दुर्रे-शहवार हैं रमेश कँवल

उनके दिल में उतर के देखो 'अरुण'
एक ईसार हैं रमेश कँवल

अरुण कुमार आर्य
मोबाईल 94316 20560

स्पर्श की चाँदनी का इसरार: रमेश कँवल

ग़ज़ल महबूब के परदे में कहीं ख़ुद को और कहीं ख़ुदा को तलाश करने की वो साधना है जो लफ़्ज़ों से तस्वीर बनाती है तो महबूब का चेहरा बन जाता है और अर्थ में डूबती है तो आध्यात्म का मंज़र बिखेर देती है। ग़ज़ल कहने वाले शायरों ने फ़िक्र के बाग़ में ग़म का बिस्तर बिछाया, इश्क़ की चादर ओढ़ी और ख़्वाबों का वो तकिया लगाया जिसने उन्हें न तो ख़ुद से दूर किया न ख़ुदा से। उन्हें अपनी शख़्सीयत की उस सच्चाई का एहसास हो गया जहाँ ख़ुदी और ख़ुदा का फ़र्क़ भी साफ़ हो जाता है। सादिक़ का एक शे'र मशहूर हुआ:

लगाना चाहे जो अंदाज़ा अपनी क़ीमत का
तो अपने पद से तू इक बार हट के देख ज़रा

इस शे'र का मफ़हूम आहिस्ता आहिस्ता प्रशासनिक सेवा के एक वरीय पद से सेवा निवृत होने के बाद मुझे मालूम होने लगा:

मेरे दोस्त पल में ख़फ़ा हो गए
मैं हैराँ हूँ क्या से वो क्या हो गए
जो शोहरत की तख़्ती हवा ले उड़ी
पता, नाम, सब लापता हो गए

सरकारी सेवा में रहते हुए मेरे पहले 2 मजमुए (ग़ज़ल संग्रह) लम्स का सूरज (उर्दू लिपि में) और सावन का कँवल (देवनागरी लिपि में) डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी, भागलपुर की देख-रेख में प्रकाशित हुए।रूमानियत की ख़ुशबू से लबरेज़ मेरा तीसरा मजमुआ शोहरत की धूप (हिंदी) का प्रकाशन मेरे आदरणीय मित्र अनवारे इस्लाम, भोपाल के अथक परिश्रम से मेरे सेवा काल में ही संपन्न हुआ। किताब निहायत ही ख़ूबसूरत सज-धज और आकर्षक गेटप

में थी। अदबी दोस्तों और फ़नशनास लोगों की भरपूर सराहना से मन काफ़ी प्रफ्फुलित, आनंदित और आह्लादित हुआ।

उर्दू के दूसरे मजमुआ 'रंगे – हुनर' की इशाअत के सिलसिले में जब मैं अपने अज़ीज़ दोस्त आलम ख़ुर्शीद से मिला और पूछा कि क्या पटना में इसकी ख़ूबसूरत और स्तरीय छपाई हो सकती है तो उन्होंने अपने मित्र फ़र्द –उल-हसन का नाम लिया जिनसे मैं पूर्व परिचित था। जनाब फ़र्द –उल-हसन इरम पब्लिकेशन के मालिक ठहरे।

'रंगे-हुनर' निहायत ही ख़ूबसूरत और प्रथम दृष्टि में ही मन को लुभाने वाला मजमुआ साबित हुआ। मल्टी कलर में आर्ट पेपर पर ब्यूटीफुली डिज़ाइंड। अनेक दोस्तों ने दावा किया कि उर्दू में शायरी की ऐसी किताब अब तक बिहार से प्रकाशित नहीं हुई है। राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद् (National Council for Promotion of Urdu Language), भारत सरकार ने इसे बल्क पर्चेज़िंग की लिस्ट में शामिल किया। सेवा निवृति के बाद मसरुफ़ियत का सफ़र आहिस्ता हुआ, थमा नहीं। मसरुफ़ियत थम जाए तो भी अच्छा नहीं लगता।

दिल भी फ़ुर्सत में हम भी फ़ुर्सत में
आज आगे की बात सोचेंगे

मेरे उस्तादे-मोहतरम हफ़ीज़ बनारसी साहब मरहूम के इंतक़ाल को 10 साल हो गए। मैंने उनके नाम पर बज़्म-ए हफ़ीज़ बनारसी पटना की बुनियाद डाली। 8 अप्रैल 2018 को बिहार उर्दू अकादमी के सभागार में पहला इजलास सजा। उन पर कुछ मज़्मून पढ़े गए। अनेक शायरों ने उनकी ग़ज़लों के मिसरा तरह में तीन ज़मीन पर बेहतरीन तरही ग़ज़लें पढ़ीं। 29जुलाई, 2018 को बिहार प्रशासनिक सेवा संघ, पटना के सभागार में "एक शाम: हफ़ीज़ बनारसी के नाम" का आयोजन हुआ। मखमली आवाज़ के संवाहक डॉ. शंकर प्रसाद ने उनकी ग़ज़लों को अपनी दिलकश आवाज़ दी। इसमें पटना के अनेक गुलूकारों ने उनकी ग़ज़लों को अपनी आवाज़ अता की। 22 दिसम्बर 2018 को हिंदी

साहित्य सम्मलेन पटना के सभागार में बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी का तीसरा इजलास लगा जिसमें पर्यावरण के संरक्षण और प्रदूषण के नियंत्रण से सम्बंधित आलेख और कविताएँ पढ़ी गयीं।

फ़क़ीरों की सोहबत मुझे भा गयी
कि खोया ज़रा-सा तो पाया बहुत

मसरुफ़ियत कम न हो इसलिए अपनी पुरानी नयी ग़ज़लों का एक संकलन निकालने की ख़्वाहिश रूबरू हो बैठी। सहेजा, सँवारा, निकाला और इकट्ठा किया। प्रो.डॉ.तल्हा रिज़वी बर्क़, श्री अनिरुद्ध सिन्हा, श्री सागर सियाल कोटी, श्री दरवेश भारती ने हौसला बढ़ाया। अरुण कुमार आर्य ने लैपटॉप पर टंकित अंकित पाण्डुलिपि का गहन अवलोकन किया। बह्र और उनके अरकान दर्ज किये। मैं उनकी बेलौस काविशों का बेहद ममनून हूँ। उनकी कोशिशों की बदौलत ही टंकण की अशुद्धियों को कम किया जा सका है। श्री दरवेश भारती जी ने तो हिंदी ग़ज़ल की बारीकियों की चाशनी में मेरी ग़ज़लों का स्पर्श कर इसे नवीन आवरण ही दे दिया। मैं उनका बेहद शुक्रगुज़ार हूँ।

उर्दू का पहला मजमुआ लम्स का सूरज और हिंदी में ग़ज़लों नज़्मों इत्यादि का संग्रह "स्पर्श की चाँदनी" में एक बात कामन है: लम्स या स्पर्श। चाँदनी कभी कभी बेहद अज़ीज़ लगती है ; कभी अच्छी नहीं लगती, और कभी कभी तो बिलकुल नहीं भाती लेकिन प्रशासनिक सेवा का पदाधिकारी रहने के कारण विधि-व्यवस्था, कोर्ट कचहरी, अदालत, रसूखदारों, ज़मीरवालों से निकट संपर्क का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उन अनुभवों और तजुर्बों को मैंने अपनी शायरी का हिस्सा बनाया है। मुलाहिज़ा हो:

न क़ानून का डर, न थी कुछ हया
गुनाहगारों ने क़ह्र ढ़ाया बहुत

अदालत रसूखों पे चलती रही
उसे मुजरिमों ने छकाया बहुत

गवाहों को पैसे मिले इस क़दर
फ़रिश्तों के क़ातिल रिहा हो गये

हैं गवाही पे जब मुनहसिर
मुन्सिफ़ो! फ़ैसले रह गए

दबदबा मुजरिमों का क़ब्ल से था
अब तो अंदाज़ क़ातिलाना हुआ

हौसले मुजरिमों के बढ़ते हैं
जल्द जब फ़ैसला नहीं होता

बेच डालूं ज़मीर मैं भी 'कँवल'
बस इसी बात पर अड़ा है कोई

पर्यावरण आज की विकट समस्या है। वायु, जल एवं ध्वनि प्रदूषण से कौन त्रस्त नहीं और कौन इनसे निजात नहीं चाहता। पहले एक ग़ज़ल फिर चंद अशआर

ज़हर घुलने लगा हवाओं में
शोरगुल, चीख़ है फ़िज़ाओं में

पेड़ पौधों से उड़ गये पंछी
कट गये वृक्ष शहरों गावों में

धूप का क़हृ है परिंदों पर
आदमी ठहरे किसकी छावों में

ज़ायक़ा उनके हुस्न का लीजे
देखिये उनको माहे-कामिल में

कुछ धनवान मित्रों के साथ साथ कुछ ग़रीब दोस्त भी मेरे मित्र मंडली में शामिल हैं। दोनों के तजरिबे के साथ साथ धन के सम्बन्ध में अपना ख़याल भी पेशे-ख़िदमत है:

ग़रीब लोग ज़रूरत पे अपनी रोते हैं
अमीर लोगों को धन बेसबब रुलाता है

ख़ुशी, नींद, सेहत न भूख उसके वश में
ये औक़ात है दोस्तो! आज धन की

है ज़रूरी, ज़रूरते कम हों
ख़्वाहिशों को 'कँवल' विराट न कर

मैं स्पर्श की चाँदनी का आनंद लेने हेतु ये मजमुआ आपके दस्ते-मुबारक के हवाले करता हूँ। उम्मीद है ये मजमुआ आपको मुहब्बत और रुमान के दिलकश मौसम से भी रूबरू कराएगा और फ़िक्र और फ़न की गगनचुम्बी इमारतों की बुलंदियों और ख़ूबसूरती से भी वाक़िफ़ कराने का हौसला दिखायेगा। गुज़ारिश है कि आप अपनी गिरां क़द्र राय से नवाज़ेंगे।

आ गया स्पर्श का मौसम 'कँवल'
अनसुने क़िस्से बदन कहने लगे

8 मार्च, 2019 **रमेश कँवल**, पटना,

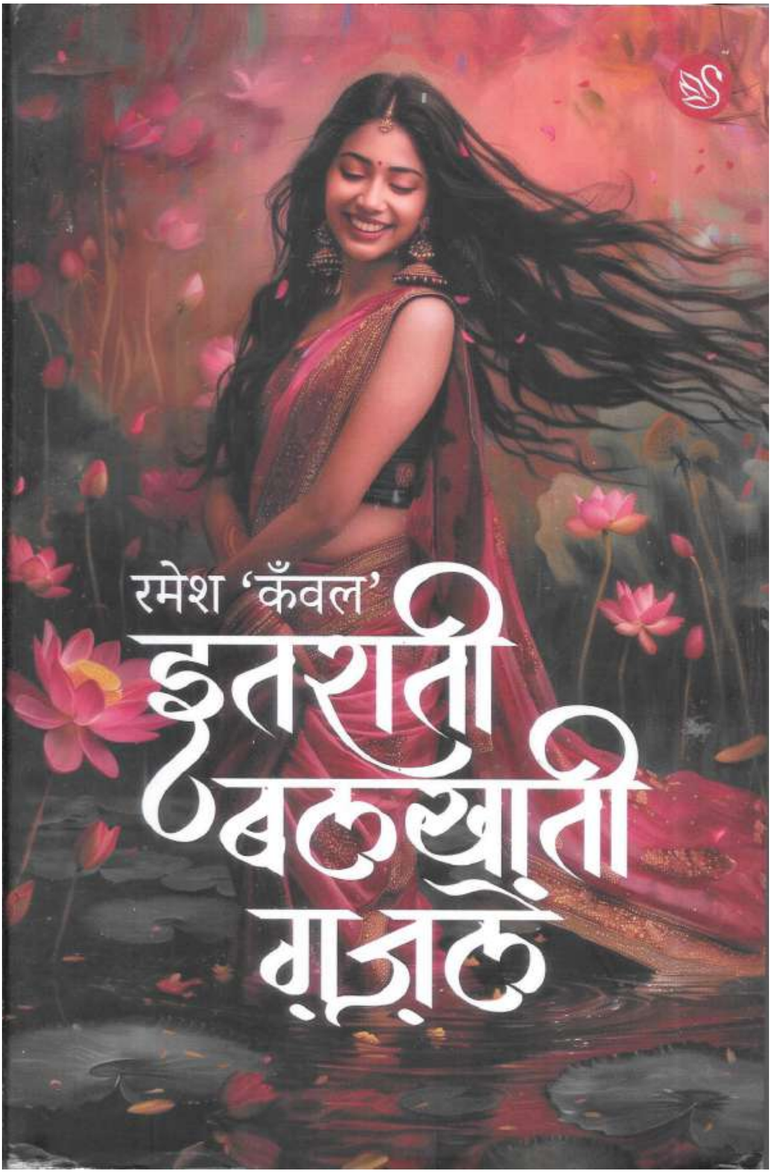
रमेश 'कँवल'
इतराती बलखाती ग़ज़लें

ग़ज़लगोई मात्र लफ्फ़ाज़ी या तुकबंदी नहीं है: विज्ञान व्रत

शाइर मूलत: संवेदनशील होता है। अत: उसके आस पास के परिवेश में घटित होने वाली घटनाएँ उसके मानसिक क्षितिज पर उभरकर विभिन्न रूपों में परिलक्षित होती रहती हैं। उसकी शाइरी वस्तुत: उसकी संवेदनशीलता का ही प्रतिफलन है। शब्दों में निबद्ध शाइर की भाव भंगिमा ही प्रस्तुत संग्रह "इतराती बलखाती ग़ज़लें" की ग़ज़लों में विविधवर्णी परिधानों से सुसज्जित होकर संग्रह के पृष्ठों पर अवतरित हुई हैं।

प्रस्तुत संग्रह का अवगाहन करते हुए मैंने स्पष्टत:यह अनुभव किया कि ग़ज़लगोई मात्र लफ्फ़ाज़ी या तुकबंदी नहीं है। ग़ज़ल न तो अख़बार है न ही प्रवचनों का पुलिंदा।

रमेश 'कँवल' अपनी ग़ज़लों में किसी भाषा विशेष में निष्णात होने का ढोल पीटते नज़र नहीं आते अपितु एक ऐसी ज़ुबां को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हैं जो कि आम फ़हम है। यद्यपि रमेश 'कँवल' की ग़ज़लों में अरबी-फ़ारसी शब्दों का बाहुल्य दिखलाई देता है परन्तु इन्टरनेट, पेट्रोल, टेंशन, मास्क, सैनीटाइज़र, कोरोना जैसे अंग्रेजी के शब्दों का इस्तेमाल भी गाहे-बगाहे दृष्टिगत होता है। इसके अतिरिक्त इनकी ग़ज़लों में वातावरण, अपहरण, मरण, क्षरण, ध्यान और भारतवर्ष जैसे तत्सम शब्दों का प्रयोग भी यथास्थान प्राप्य है। एक बहुपठ और बहुश्रुत रचनाकार के लिए ही यह संभव है।

रमेश 'कँवल' अपने ग़ज़ल संग्रह का श्रीगणेश सरस्वती वंदना से करते हैं। उनके लिए सरस्वती वंदना मात्र औपचारिकता नहीं है बल्कि इस रचना में सार्थक शब्द चयन रमेश 'कँवल' के वैदुष्य का साक्ष्य भी है। वाग्देवी की इस वंदना में उनके भावों का टटकापन तथा शब्दों का सटीक और शालीन प्रयोग शाइर के गाम्भीर्य और शब्द ज्ञान का परिचायक है:

ज्योतिर्मय शुभ जल प्रपात से
ज्ञान पुंज नित बरसे
नित उड़ान हो नयी सफलता
से प्रतिदिन मन हरसे
कृपा सिंधु माँ तेरी जय जय
तेरी जय जय जय हो

रमेश 'कँवल' ज़मीन से जुड़े शाइर हैं। अत: उनकी शाइरी का कथ्य भी आम आदमी और उसकी ज़मीनी ज़रूरतों के आस-पास ही नज़र आता है:

अब बज़ट ले उड़ा ग़रीबों से
उनके सब्रो-क़रार का मौसम

जिसे हमने फेंका उठाया भी है
ग़रीबी ने ये दिन दिखाया भी है

स्वयं रमेश 'कँवल' इस जज़्बे को बहुत गहराई से महसूस और आत्मसात करते हुए नज़र आते हैं:

गगन धरती की मैं हलचल रहा हूँ
युगों से सूर्य बन के जल रहा हूँ

या फिर-

आग-पानी के आस पास रही
बदहवासी मेरा लिबास रही

भारत की ओलंपियन और भारोत्तोलन में रजत पदक जीतने वाली वेटलिफ्टर मीरा बाई चानू की ऐतिहासिक उपलब्धि को शाइरी में ढालते हुए रमेश 'कँवल' का अंदाज़े-बयाँ तो देखिये:

'मीराबाई चानू' ख़ुश
सिल्वर मैडल 'कँवल' मिला

हर शाइर का अपनी बात कहने का एक ख़ास अंदाज़ होता है। रमेश 'कँवल' का लहजा मख़सूस और मुख्तलिफ़ होने के साथ साथ नायाब भी है:

दिल का मकान ग़म ने किराये पे ले लिया
ख़ुशियाँ जो मुस्तक़िल थीं उन्हें बेदख़ल किया

सवाल आँखों से कर रहा हूँ, जवाब पलकों से दे रही है
ख़मोशियों की मुहर लगाकर, शराब नज़रों से दे रही है

सच है कि खुल के अपनी अदावत नहीं रही
पर साथ-साथ रहने में लज़्ज़त नहीं रही

हो गया आंसू से तर
फूल तकिये पर कढा

अक्सर यह देखा जाता है कि शाइर अपनी ग़ज़लों में प्रवचन का काढ़ा पिलाते नज़र आते हैं। रमेश 'कँवल' के यहाँ प्रवचन का नहीं अपितु हिदायत / परामर्श का स्वर मुखर है:

फॉलोवर घटने लगे हैं आपके
अब बदलिए आप अपनी नीतियाँ

हरगिज़ बुरे दिनों से न घबराइए 'कँवल'
ज़ेवर ज़मीर का किसी सूरत संभालिये

दफ़्तर के दरवाज़े पर
टेंशन छोड़ के, आओ घर

जामुन की शाख़ पर कभी झूला न डालिए
उस महजबीं के प्यार को दिल से निकालिए

रहे-इश्क़ है
बड़ी पुरख़तर

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ शाइरों और आलोचकों की नज़र में नज़्म के शाइर हैं किन्तु उनकी ग़ज़लें भी बेहद नायाब हैं। मैंने बहुत पहले उनका एक शे'र सुना था-

गुलों में रंग भरे बादे-नौबहार चले
चले भी आओ कि गुलशन का कारोबार चले

कारोबार शब्द का इतना सटीक और ख़ूबसूरत प्रयोग शायद ही कहीं मिले। इतने दिनों बाद अब यही शब्द रमेश 'कँवल' के यहाँ बरामद हुआ। एक ख़ूबसूरत अंदाज़ और नायाब लहजे में। रमेश 'कँवल' जैसे कद्दावर शाइरों को ही यह कमाल हासिल है:-

हमने कर के प्यार 'कँवल'
ग़म का कारोबार किया

अक्सर यह देखा जाता है कि जब शाइर' वर्णनात्मक लहजा' अख्तियार करता है तो वह सपाटबयानी का शिकार हो जाता है लेकिन एक स्ट्रेट स्टेटमेंट को शे'र के पैकर में ढालने का हुनर कोई रमेश 'कँवल' से सीखे:-

कर्फ्यू लगा है रात में बाहर न जाइए
फ़ुटपाथ जिनका घर हो उन्हें क्या बताइये

करोना ने जमकर मचायी तबाही
इलाही, इलाही, इलाही, इलाही

नायिका की देहयष्टि और उसकी रूप-राशि का शब्दों में चित्रांकन की एक बानगी आपको दिखाना चाहता हूँ:-

पहली बार मिले थे जब वे रूप 'कँवल' था मनमोहक
लब, गेसू थे मस्त, अदाएँ क़ातिल, बदन छरहरा था

साफ़गोई आसान कार्य नहीं है।अपनी बात को साफ़ साफ़ बयाँ करने के लिए शाइर में ईमानदारी के साथ साथ साहस भी हो तो बात बनती है। अपनी बात को गोल मटोल या लच्छेदार भाषा में नहीं अपितु सीधे सीधे कहने का जो अंदाज़ और लहजा रमेश 'कँवल' के यहाँ उपलब्ध है वह बहुत विरल है:-

निज़ामे मुस्तफ़ा की क़ब्र पर ध्वज
'कँवल' भगवा का लहराने लगा है

तब्लीग़ी जमाती भला जाहिल नहीं होंगे
क्या लोग ये इंसान के क़ातिल नहीं होंगे

मस्जिद से अज़ाँ देंगे पुकारेंगे ख़ुदा को
लेकिन ये वतन के लिए हामिल नहीं होंगे

ज़िन्दगी शब्द को रदीफ़ बनाकर एक नज़्म के स्टाइल में शाइरी करते हुए रमेश 'कँवल' का यह अंदाज़ भी ज़रा ग़ौर फ़रमाएँ:-

गमले में तुलसी जैसी उगाई है ज़िन्दगी
पूजा है, अर्चना है, दवाई है ज़िन्दगी
जब से हुआ है प्रेम की ज़ुल्फ़ों में क़ैद वो
उसके लिए ग़मों से रिहाई है ज़िन्दगी

रहीम का एक बहुत ही प्रसिद्ध दोहा है तथा बहुत से कवियों ने इस तथ्य को अपनी अपनी तरह से कहा है मुलाहिज़ा फ़र्माइए:

लीक लीक गाडी चले, लीकन चले कपूत
लीक छांड तीनों चले, शायर, सिंह, सपूत

अब रमेश 'कँवल' चूँकि शाइर हैं तो लीक लीक भला क्यों चलेंगे! वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं:-

जिस तरफ़ सब गए
हम उधर कब गए

अपना पक्ष रखने में रमेश 'कँवल' कभी नहीं चूकते। वे निडर होकर बेबाक अंदाज़ में अपनी बात कहते हुए दिखाई देते हैं-

एक से एक मिले मुल्क को रहबर अब तक
राहबर कोई 'अटल' हो ये कहाँ मुमकिन है

थी क़यादत मोदी की जग को 'कँवल'
राह भारतवर्ष ने आसान ली

यह रमेश 'कँवल का ही बूता और साहस है कि उन्होंने किसी तथाकथित मंचीय शाइर को उसकी बदतमीजी के लिए बेहद सख्त और तल्ख़ लहजे में जवाब दिया। ग़ज़ल का मतला तो थोडा रूमानी है लेकिन ग़ज़ल के कई अशआर उस तथाकथित शाइर के मुंह पर झन्नाटेदार तमाचे हैं:-

मोहब्बतों के सफ़र में थकान थोड़े है।
तेरे बग़ैर ये मौसम जवान थोडे है

तुम्हारा ख़ून तो शामिल नहीं गुलिस्तां में
लुटेरों के लिए हिंदोस्तान थोड़े है

शिवाजी, तेग़ के, राणा के हम भी हैं वंशज
तुम्हारे ख़ून में ही ये उफ़ान थोड़े है।

इतना सब होने के बावजूद रमेश 'कँवल' प्रेम और रुमान के शाइर हैं। दाम्पत्य और प्रेम संबंधों पर उनके इस शे'र में आपके दिल की धड़कने अवश्य स्पंदित होंगी:-

एक पल नहीं लगता उनको रूठ जाने में
हमको पहरों लगते हैं फिर उन्हें मनाने में

मुझे पूर्ण विश्वास है कि रमेश ‘कँवल’ जैसे सिद्धहस्त शाइर के ग़ज़ल संग्रह “इतराती बलखाती ग़ज़लें” की ग़ज़लें सुधी पाठकों से प्रचुर प्रशंसा प्राप्त करेंगी और शाइरी की दुनिया में नए आयाम उपस्थित करेंगी।

मेरी शुभकामनाएँ तो रमेश ‘कँवल’ जी के साथ हैं ही!

शुभास्ते सन्तु पन्थान:!!
10 मई, 2022

विज्ञानव्रत
एन-138 सेक्टर-25
नॉएडा 201301 (योगी प्रदेश)
संपर्क: 981 022 4571

लुभाती और गुदगुदाती ग़ज़लें: देवेन्द्र मांझी

‘इतराती बलखाती ग़ज़लें’ कवि / शाइर रमेश कँवल की 101 रचनाओं का संग्रह है, जो आपके हाथों में पहुँचने के लिए बेताब है। जबसे सोशल मीडिया का विकास हुआ है, फ़ेसबुक और वाट्सएप का ज़माना आया है, तब से ग़ज़ल के आशिक़ों की तादाद में भी आशातीत वृद्धि हुई है। यह एक सुखद संयोग है, इसमें ग़ज़ल कहने / लिखने वालों की संख्या भी बढ़ी है और उन्हें अपनी रचनाएँ जनसामान्य तक पहुँचाने के अवसर भी मिले हैं। अतः वर्तमान में ग़ज़ल-क्षेत्र में सोशल मीडिया की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। ख़ैर हमें सोशल मीडिया की नहीं कवि / शाइर रमेश ‘कँवल’ की ग़ज़लों पर बात करनी है।

कवि / शाइर रमेश कँवल ने अनेक विषयों पर अपनी पैनी नज़र रखते हुए उन्हें अपनी क़लम-कूची से चित्रात्मक रूप देने का प्रयास किया है, और इसमें वे काफ़ी हद तक सफल भी रहे हैं। उदाहरण के लिए उनका यह शे’र देखिए-

अंधेरे के फ़साने से हूँ वाक़िफ़
दिया हूँ शाम से ही जल रहा हूँ

कवि/शाइर स्वभावतः हर चीज़ पर पैनी दृष्टि रखता है, अंधकार को दूर करके ज्ञान का प्रकाश फैलाता है, इसी बात को रमेश कँवल ने बहुत ख़ूबसूरती से अपने शे’र में पिरो दिया है।

कवि जब सब पर पैनी दृष्टि रखता है तो कहीं भी कुछ बलात् या अनुचित होता है तो रचनाकार उसे बर्दाश्त नहीं कर पाता, उसके विरुद्ध अपनी आवाज़ अवश्य बुलन्द करता है। विषय मूल अधिकारों से जुड़ा हो तो और भी गम्भीर हो जाता है, तभी तो इसकी गम्भीरता को समझते हुए शाइर की क़लम पूछ बैठती है-

हक़ एक सा सभी का है जल-वायु-भूमि पर
कैसे जनाब नाम पर अपने लिखा लिया

अर्थात् आप दूसरों के मौलिक अधिकारों का अतिक्रमण क्यों और कैसे कर रहे हैं। बहुत ही मासूमियत और सुन्दरता से कवि ने उक्त अनियमितता के विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलंद कर दी। इस स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए रचनाकार वाक़िई बधाई का पात्र है।

फ़ारसी भाषा की एक पुरानी कहावत है कि पीछे मुड़कर देखोगे तो पत्थर के हो जाओगे अर्थात् अगर हम अपने भूतकाल के झरोखे से झाँकते हुए यही सोचते रहेंगे कि हम कभी ऐसे थे, ये थे, वो थे तो हम भविष्य का आईना नहीं देख पायेंगे और हम आगे बढ़ते और निरन्तर बढ़ते समय समाज से बहुत पीछे छूट जायेंगे, तब पछतावे के अतिरिक्त हमारे हाथ कुछ और नहीं आएगा। इसी बात को अपने शब्दों में कवि रमेश 'कँवल' बहुत ही ख़ूबसूरती से कुछ यूँ कहते नज़र आते हैं-

रात-दिन उसको सोचना क्या है
यादे-माज़ी में अब रखा क्या है

कवि का सीधा और स्पष्ट सन्देश है कि भूतकाल को देखना छोड़कर भविष्य के आईने में देखिए, तभी विकास संभव हो सकेगा।

प्रस्तुत संग्रह का शाइर बहुत आशावादी भी है। वह कहता है आशावादी हों तो अपने कर्म के दम पर हम अपनी मंज़िल को पा सकते हैं। किसी संकट या विपत्ति में निराश होने की बजाय आस-ओ-उम्मीद का दामन थामे रखेंगे तो अवश्य ही हमें अपनी मंज़िल मिल जाएगी, तब हमें किसी की स्तुति, प्रार्थना करने की आवश्यकता नही होगी। देखिए शाइर की क़लम का कमाल-

बुरे हैं दिन तो निराश मत हो
दुआएँ कर आगे दिन भला हो

यहाँ रचनाकार का 'दुआ' शब्द से आशय ईश-स्तुति या प्रार्थना के साथ-साथ कर्म और आशावाद से भी है। बहुत ख़ूबसूरत शे'र हो पाया है यह।

जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, इसे अर्जित तो किया जाये मगर इसके पीछे पागलपन की सीमा तक न

दौड़ा जाए, क्योंकि धन ही सब-कुछ नहीं है, जीवन में ऐसा भी बहुत-कुछ है जो धन से नहीं लिया जा सकता-ऐसे आध्यात्मिक विचार को शाइर रमेश ‘कँवल’ बहुत ही सहजता से कह जाता है-

चन्द साँसें ख़रीद भी न सके
धन का ऐसा निज़ाम है साहिब

इसी ग़ज़ल में आगे आगे एक अन्य शे’र के माध्यम से शायर यह सन्देश देने में सफल रहा है कि हमेशा ज्ञान और रौशनी की ही जय-जयकार होती है, अंधेरा और अज्ञानता हमेशा गुलामी की पीड़ा सहते हैं अर्थात् बेबस और असहाय रहते हैं। आप भी देखिये-

बादशाहत है चाँद-तारों की
रात तो बस ग़ुलाम है साहिब

ऐसे अनेक अश्आर इस संग्रह में हैं, जिनका सविस्तार यहाँ उल्लेख किया जा सकता है लेकिन स्थानाभाव की विवशता है। इसके साथ ही मैं यह भी चाहता हूँ कि पाठक-वर्ग इस संग्रह को पढ़कर इसके अश्आर के अपने मतलब निकाले, मेरे द्वारा प्रदर्शित अर्थों के आईने में ही न भटकें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह संग्रह साहित्यिक-जगत् में अपना एक विशेष स्थान बनायेगा और पाठक-वर्ग इसका भरपूर स्वागत करेगा।

शुभ कामनाओं सहित-

देवेन्द्र माँझी
9810793186
ए-402, श्री राधाकृष्णन ग्रुप हाऊसिंग सोसायटी,
प्लॉट नं-23, सेक्टर-7,
द्वारका, नयी दिल्ली-110075

सहज, सरल और नायाब ग़ज़लों का गुलदस्ता है "इतराती बलखाती ग़ज़लें": डॉ. भावना

रमेश 'कँवल' ग़ज़ल की दुनिया के सुपरिचित नाम हैं। रमेश कँवल का मूल नाम रमेश प्रसाद है। एक तरफ़ रमेश प्रसाद बिहार प्रशासनिक सेवा में संयुक्त सचिव स्तर के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं, वहीं रमेश 'कँवल' के जीवन में सेवानिवृत्ति संभव नहीं। दरअसल एक रचनाकार अपने अंतिम सांस तक कुछ न कुछ नया सिरजता रहता है। एक अजीब तरह की प्यास और अकुलाहट उसे चैन से रहने नहीं देती और रात के अंधेरे में अनायास टूटती उसकी नींद किसी शे'र के आमद की खबर देती है। यही आमद का शे'र रमेश प्रसाद को रमेश 'कँवल' बना देता है। यूं तो रमेश 'कँवल' की अब तक प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह में लम्स का सूरज (उर्दू), सावन का कँवल (हिंदी)1997, शोहरत की धूप (हिंदी) 2013, रंग-ए-हुनर (उर्दू) 2016, स्पर्श की चांदनी (ग़ज़ल और नज्म संग्रह), 2019 इनके मौलिक काव्य संग्रह हैं। इनके अलावा अक़ीदत के फूल (2020), 2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें, (2021)और 21वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन गज़लें इनके संपादित ग़ज़ल संग्रह हैं। इनकी गज़लें रंगारंग शायरी, ग़जल इंटरनेशनल, ग़जल दुष्यंत के बाद भाग 2, बिहार में जदीद ग़ज़ल, 101 किताबें ग़ज़लों की, संदल सुगंध भाग 4, हिंदी ग़ज़ल का बदलता मिज़ाज तथा यह समय कुछ खल रहा है इत्यादि साझा संग्रहों में सम्मलित हैं। इनके अलावा भी इनकी गज़लें कविता कोश, उर्दू यूथ फोरम डॉट ओआरजी और रेख्ता पर भी पढ़ी जा सकती हैं।

संग्रह में सिर्फ विरह-मिलन का दास्तान नहीं बल्कि सामाजिक, राजनैतिक, बाजारवाद, मानवीय संवेदनहीनता तथा व्यवस्थागत विसंगतियाँ भी पूरी मजबूती से उभर कर आई हैं।

प्रतीकों और बिम्बों के साथ ग़ज़ल अपने कहन में खूब निखरती है। रमेश 'कँवल' प्रतीकों और बिम्बों के चयन में महारत हासिल किए हुए हैं। आजकल सच का सूरज बड़े-बड़े दफ़्तरों में क़ैद है। स्वभाविक है, चारों ओर घुप्प अंधेरी रात ही तो होगी। शायर जब इस सच को एक अलग लहजा में अभिव्यक्त करता है, तो उसका संप्रेषण मारक हो जाता है। शे'र देखें-

उनके दफ़्तर में सूरज रहा क़ैद जब
कालिमा का घरों में वरण हो गया

प्रेम ग़ज़लकारों का प्रिय विषय रहा है। प्रेम लिखते वक्त ज़्यादातर शायर दोहराव का शिकार हो जाते हैं। प्रेम एक शाश्वत सत्य है, जिसकी अनुभूति कमोबेश सभी को एक समान होती है। पर अभिव्यक्ति ही इसे अन्य शायरों के कथ्य से अलग करती है। किसी ऐसे लफ़्ज़ से अपने प्रेमी या प्रेमिका को बुलाना जिसे गूगल तक को पता नहीं हो, प्रेम को दुनिया से छुपाने का प्रयास ही दिखाता है। कहा जाता है कि इश्क़ और मुश्क़ छुपाए नहीं छुपते। परन्तु शायर इस शे'र में बहुत ही मासूम तरीक़े से अपने प्रेम को छुपाना चाहता है।शे'र देखें-

पता न गूगल को लफ़्ज़ हैं जो, पुकारती है उन्हीं से मुझको
ज़माना जिसको समझ न पाए, वही इशारों से दे रही है

रमेश 'कँवल' जब प्रेम लिखते हैं तो, लगता है जैसे प्रेम जी रहे हों। उनका प्रेम कबूतर द्वारा चिट्ठी पहुँचा कर परवान नहीं चढ़ता बल्कि व्हाट्सएप के डीपी बदलने और चैट करने के साथ आगे बढ़ता है।

शे'र देखें-

चैट किया, डीपी बदली
बात कहाँ इक बार किया

सुख-दुख जीवन के दो पहलू हैं। जिस तरह दिन के बाद रात और रात के बाद दिन का आना तय है। उसी प्रकार सुख के बाद दुख और दुख के बाद सुख का आना भी चलता रहता है।सुमित्रानंदन पंत ने कभी अपनी कविता में इसी

बात को इस तरह से कहा था कि 'सुख-दुख के विरह मिलन से यह जीवन हो परिपूर्ण'। शायर सकारात्मकता को जीवन का आधार मानता है। शे'र देखें-

बुरे हों दिन तो निराश हो मत
दुआएँ कर आगे दिन भला हो

जीवन और मृत्यु हमारे अधीन नहीं हैं। यह सच कोरोना वायरस के फैलने के समय बहुत प्रमाणिकता के साथ सबके जीवन में घटित हुआ। चारों तरफ़ मृत्यु का हाहाकार मचा हुआ था। लोगों के लाश जलाने के लिए श्मशान भी कम पड़ रहे थे।सारे पैसे बैंकों में पड़े रह गए। प्रकृति के इस रौद्र रूप के सामने सारी व्यवस्था धरी की धरी रह गयी। शे'र देखें-

चंद सांसे ख़रीद भी न सके
धन का ऐसा निज़ाम है साहिब

कोरोना काल में सभी को इम्यूनिटी और योग का ध्यान आया। भागती-दौड़ती ज़िन्दगी जब अचानक थम गई तब हमें एहसास हुआ कि ख़ुद का ध्यान रखना कितना जरूरी है। शे'र देखें-

भाप ली काढ़ा हमने पिया
खौफ़ के हम असर में रहे

किसी भी महामारी में सामाजिक दूरी इसके चेन को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शायर की पैनी दृष्टि न केवल यथास्थितिवाद को दर्शाने में है बल्कि उससे बचने का उपाय भी बताना उन्हीं की जिम्मेदारी है।शे'र देखें-

कोविड हो डेल्टा हो कि हो ओमिक्रोन ये
मेहमां बना के इनको न घर पर बुलाइए

रमेश 'कँवल' छोटी बहों में भी कमाल की शायरी करते हैं। ज़्यादातर लोग जब ऊंचे ओहदे पर होते हैं तब तक उनकी शोहरत होती है।वह ओहदा ख़त्म होते ही उनकी ज़िन्दगी साधारण इंसान-सी हो जाती है। ये शे'र देखें-

नाम यश डिग्री पता मान गए
रफ़्ता रफ़्ता सभी पहचान गए
मेरी शोहरत भी गई
जब मेरा ओहदा गया

हालांकि शायर इसका अपवाद है। उनकी शोहरत ओहदा जाने के बाद और ज़्यादा बढ़ गई है।

आगे शायर कहता है कि जहाँ कर्फ़्यू में झूठ की गश्ती लगी हुई है, वहाँ सच की दुकान खोलने की हिम्मत कोई कैसे कर सकता है? शे'र देखें-

झूठ की गश्ती कर्फ़्यू में
कौन दुकां सच की खोले

रिश्तों का खोखलापन आज के समाज की कड़वी सच्चाई है। छोटी-छोटी बातों पर रिश्ते टूट जाते हैं। सहनशक्ति सिरे से गायब है। सीधे-सीधे कहो तो लोग short-tempered हो गए हैं। ऐसे में यह शे'र देखें-

जम के बैठे रहे रंजो ग़म
जल्द चल दी, न ठहरी ख़ुशी

21वीं शताब्दी में भी गरीबी हमारे देश की कड़वी सच्चाई है। एक तरफ़ जहाँ अमीर अपने पालतू कुत्तों पर हजारों खर्च कर देते हैं, वहीं ग़रीब अपने बच्चों की ख्वाहिश पूरी करने में भी असमर्थ होते हैं। एक रचनाकार इस व्यवस्था को किस तरह शे'रों में ढालता है। ज़रा देखें-

खिलौने पे बच्चे मचलते रहे
पिता भी विवशता छुपाता रहा

रमेश 'कँवल' अपना जीवन बहुत सकारात्मक तरीक़े से बिताते हैं। जीवन भले सुख-दुख की धूप छाँह हो, पर है बहुत ख़ूबसूरत। शायर रमेश 'कँवल' को इस ख़ूबसूरती से प्यार है और यही होना भी चाहिए। शे'र देखें-

ख़ूबसूरत है यक़ीनन ज़िन्दगी
हाँ! 'कँवल' को ज़िन्दगी से प्यार है

इस संग्रह से गुजरते हुए हर पल संग्रह की सहज, सरल और स्वाभाविक ग़ज़लें आपको प्रभावित किए बग़ैर नहीं रहतीं। इनकी गज़लें अनुभूतियों, संवेदनाओं, विसंगतियों और विरोधाभासों का समुच्चय है, जिसके केंद्र में प्रेम है। व्यवस्था की साजिशों को पर्दाफ़ाश करने में भी वे नहीं हिचकते, न ही भूमंडलीकरण और पूंजीवाद की वज्ह से हो रहे नैतिक क्षरण पर क़लम चलाने से परहेज़ करते हैं। इनकी क़लम इनकी ताक़त है। मुझे यकीन है कि यह पुस्तक हिंदी ग़ज़ल की दुनिया में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करने में कामयाब होगी।

डॉ. भावना
मुज़फ़्फ़रपुर
संपादक, आँच साहित्यिक वेब पत्रिका
संपर्क: 790 368 8376

क़ाफ़ियों के पहरे में शे'रियत बरसती है ग़ज़ल संग्रह-"इतराती बलखाती ग़ज़लें" दिबाचा: शुचि 'भवि'

"मैं सत्ह-ए-आब पे उभरा हूँ आफ़्ताब लिए
ख़ुलूस-ए-फ़िक्र शऊरो-नज़र के ख़्वाब लिए"

मंज़रे-आम पर उभरने को बेताब श्री रमेश 'कँवल जी का शे'री मजमुआ पढ़ रही हूँ और तरमीम के साथ नियाज़ हुसैन जी का उपर्युक्त शे'र गुनगुना रही हूँ। न जाने हमें क्यों लगा कि रमेश कँवल जी के लिए ही ऐसे शे'र वारिद हुए होंगे।

भला और नया करने के लिए सत्य-सामर्थ्य होना अति आवश्यक होता है। आधुनिक युग न तो रीतिकाल जैसा है और न ही पूर्ण आधुनिक। हम सब ही आज त्रिशंकु की भाँति साहित्य में सृजनरत हैं। ऐसी अवस्था में श्री रमेश कँवल जी सदैव ही कुछ नवीन कह कर आधुनिकता का बिम्ब तलाश करते रहते हैं।

उनका ये शे'र देखिए-

जिस तरफ़ सब गए
हम उधर कब गए

साक्षरता बनाम समझदारी का नाम हैं श्री रमेश कँवल जी। आप सरकारी ओहदे पर रहे मगर मिट्टी की ख़ुश्बू आपकी पहली पसंद रही।

तब ही तो आप कह सके:

शह्र से लाज का अपहरण हो गया
गाँव में अस्मिता का क्षरण हो गया

छल-कपट और स्वार्थ में जब दुनिया मगन रही तब आप परिवार और

नौकरी की ज़िम्मेदारी को बख़ूबी निभाते हुए अपने गुरु से तालीम हासिल करना नहीं छोड़ा।

वर्तमान समय में एक फ़ैशन है गुरु बनने की ललक रखना। तालीम पूरी हुए बिन ही गुरुओं की पैदाइश हो जाना या स्वयं गुरु बन जाना। आजकल बहुत आम बात है या यूँ कहें कि हर तरफ़ उस्तादों की बाढ़ सी आई हुई है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

मगर ऐसे समय में आदरणीय रमेश कँवल जी अपने गुरु को न केवल 'अक़ीदत के फूल' पेश करते हैं अपितु "बज़्म-ए-हफ़ीज़ बनारसी-मरकज़े-रंगे-हुनर" के ज़ेरे-एहतमाम उन्हें अमर करने की काविशों में मशग़ूल भी रहते हैं।

आपने एक शे'र कहा है:

नाम यश डिग्री पता मान गए
रफ़्ता रफ़्ता सभी पहचान गए

ऐसी महान शख़्सियत की ग़ज़लों का मजमुआ "इतराती बलखाती ग़ज़लें "मन्ज़रे आम पर आने वाला है और इस संग्रह की ख़ास बात यह है कि यह अपने नाम के अनुरूप हर फ़ेस को दिखाने में सक्षम है।

पहरे मंदिर पर देखो
ईश्वर में भी डर देखो

चन्द साँसे ख़रीद भी न सके
धन का ऐसा निज़ाम है साहिब

कोमल बच्चों के दम पर
दहशत का बाज़ार किया

फ़ोन पर ख़ैरियत पूछ ली
दोस्त सब अपने घर में रहे

आओ सस्ते में बिक जाएँ हम
शहर महंगा हुआ तो हुआ

इतने एप हसीं दिखने के
बद चेहरा बेहतर दीखता है

जी हुज़ूरी करो
हर ख़ुशी मुफ़्त लो

दिल स्थूल शरीर की आयु या उम्र का मोहताज कब हुआ, उसका तअल्लुक़ तो बस भावनाओं की क्षितिज पर तैरते प्रेम स्पंदन को समेटते रहने से है। श्री रमेश 'कँवल' के चन्द अशआर देखिये-

आँखों से इस्कैन किया
क़ातिल चेहरा बैन किया

ख़ुद को जब सौंपा तो जाना
साधना कितनी सफल है

आँखों से जब दूर हुआ
दिल ये चकनाचूर हुआ

मेरी ग़ज़लों की है रानी जो उसकी बात ही क्या है
मोहब्बत है ये रूहानी जो उसकी बात ही क्या है

कितना लिखें और कौन कौन से शे'र चुन कर ले आयें हम यहाँ?

हर शे'र अपने आप में ख़ास है। कुछ मेहनत पाठक भी तो करें।

जहाँ कहीं भी रहें इक मिसाल बन के रहें
बुझे दिलों के लिए हम मशाल बन के रहें

आदरणीय रमेश ‘कँवल’ जी को मैं अपना ये शे’र समर्पित कर रही हूँ और उन्हें हृदयतल से शुभकामनाएँ दे रही हूँ कि आप इसी तरह स्वस्थ और मस्त रहते हुए शताधिक वर्षों तक अदब की सेवा करें।

नेक ख़्वाहिशात के साथ

शुचि ‘भवि’
(ग़ज़लकारा-कथाकारा-कवयित्री)
भिलाई, छत्तीसगढ़
संपर्क – 798 772 3978
shuchileekha@gmail.com

जो भी देखा वो ही लिक्खा: डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'

किसी भी कृति में उसके रचनाकार का स्वभाव स्पष्ट रूप से झलकता है। इसे यूँ भी कह सकते हैं कि वह रचनाकार ही क्या, जो अपनी रचना में सलीक़े के साथ अपनी भावनाएँ प्रस्तुत न कर सके।

आदरणीय रमेश 'कँवल' जी अपने सेवाकाल में चूँकि उच्च पदस्थ अधिकारी रहे हैं, इसलिए आदेश देना उनके स्वभाव में शामिल है। वह ग़ज़ल कहते समय जब शब्दों को आदेशित करते हैं, तो बहुत-से सुंदर और संस्कारवान शब्द हाथ जोड़कर उनके सामने प्रस्तुत हो जाते हैं। यह अलग बात है कि एलकेजी में प्रवेश लेने वाले चंद शब्द भी शालीनता का लबादा ओढ़कर उस क़तार में अपना स्थान बना लेते हैं।

मैंने देखा भी है और महसूस भी किया है कि कँवल जी के सत्याधारित तथ्यों का उनके कुछ मित्र सामना नहीं कर पाते और उनसे दूरी बना लेते हैं, लेकिन मैं इसे उचित नहीं मानता। आप साहित्यकार हैं। अपने समय की सच्चाइयों को प्रस्तुत करना आपका दायित्व है। अगर आप किन्हीं कारणोंवश सत्य के मार्ग पर चलने वालों का साथ नहीं दे रहे हैं, तो कोई बात नहीं; लेकिन उन्हें हतोत्साहित भी मत कीजिए। कँवल जी ने अपनी ग़ज़लों में वही लिखा है, जो देखा और महसूस किया है। उन्होंने निर्भीक सिपाही का कवच पहनकर समाज, संस्कृति और देश पर आघात करने वालों पर अपनी लेखनी चलाई है। पुस्तक प्रकाशन के अवसर पर उन्हें बधाई और हार्दिक शुभकामनाएँ।

माँ सरस्वती अपनी कृपा बनाए रखें।

डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'
9/3, लक्ष्मीविहार, हिमगिरि कालोनी
काँठ रोड, मुरादाबाद-244001
मो. 99273-76877

लुभाती हैं रमेश कँवल की 'इतराती बलखाती ग़ज़लें': हिमकर श्याम

इतराती बलखाती ग़ज़लें' बिहार सरकार से सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी रहे रमेश कँवल का नवीनतम ग़ज़ल संग्रह है जो श्वेतवर्णा प्रकाशन से छपकर आया है। रमेश कँवल समकालीन ग़ज़लकारों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। 'शोहरत की धूप', 'स्पर्श की चांदनी', 'सावन का कँवल', लम्स का सूरज और 'रंग-ए-हुनर' इनकी चर्चित कृतियाँ हैं। एक उम्दा शायर होने के साथ-साथ ये कुशल संपादक भी हैं। 'अकीदत के फूल', '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें', '21वीं सदी के 21वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें', 'एक रुकनी अनूठी ग़ज़लें' और 'अमृत महोत्सव की ग़ज़लें' इनके द्वारा संपादित ग़ज़ल संग्रह हैं।

'इतराती बलखाती ग़ज़लें' में एक सौ ग़ज़लें संग्रहित हैं। इसकी भूमिका हिंदी गजल के महत्वपूर्ण शायर विज्ञान व्रत और देवेन्द्र मांझी ने लिखी है। डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़', डॉ. भावना और शुचि 'भवि' ने भी अपने विचार व्यक्त किये हैं। संग्रह की शुरुआत सरस्वती वंदना और अंत एक नज़्म से होती है जिसका उन्वान है 'ऋतुओं का है राजा बसंत'।

ग़ज़ल समकालीन कविता की एक प्रमुख विधा है जो फ़ारसी-उर्दू से हिन्दी में आयी है। ग़ज़ल मूल विषय प्रेम रहा है। परन्तु अब ग़ज़ल के विषय-वस्तु का फ़लक बहुत बड़ा हो गया है। ग़ज़ल सामाजिक परिपेक्ष्य का आईना बन गयी है। इस संग्रह की अधिकांश ग़ज़लें आम आदमी की संवेदना, ज़िंदगी की कोमल भावनाओं, सपनों और हसरतों की अभिव्यक्ति है। इन ग़ज़लों में ख़ूबसूरती के साथ युगीन संवेदना और समाज का दुःख-दर्द मौजूद है। कुछ शे'र देखें-

‘मेरी आँखों में आ गए आँसू
ग़म का किस्सा सुना गए आँसू’

खिलौने पर बच्चे मचलते रहे
पिता भी विवशता छुपाता रहा

ये बज़ट ले उड़ा ग़रीबों से
उनके सब्रो-क़रार का मौसम’।

ग़ज़लगो बहुत सामान्य से प्रतीकों से अपनी बात पुरअसर तरीक़े से कहते हैं-

‘दिल का मकान ग़म के किराए पे ले लिया
ख़ुशियाँ जो मुस्तक़िल थीं उन्हें बेदखल किया

‘दफ़्तर के दरवाजे पर
टेंशन छोड़ के आओ घर’

संग्रह की अनेक ग़ज़लें इश्क़, मुहब्बत और रूमानियत के अहसासों से सराबोर हैं-

‘हमने कर के प्यार ‘कँवल’
ग़म का कारोबार किया’

‘एक पल नहीं लगता उनको रूठ जाने में
हमको पहरो लगते हैं पर उन्हें मनाने में’

‘रात-दिन उसको सोचना क्या है
यादे-माजी में अब रखा क्या है’।

मौत का अहसास होने पर ही ज़िन्दगी की अहमियत समझ आती है। पैसे से हर चीज़ ख़रीदी नहीं जा सकती। जीवन के इसी सत्य को अभिव्यक्त करते ये दो शे'र देखें-

'मौत अपना बनाने को थी
मुझको भाने लगी ज़िंदगी',

'चंद सांसे ख़रीद भी न सके
धन का ऐसा निज़ाम है साहिब'।

कोरोना महामारी ने सारे संसार को प्रभावित और विचलित किया। संग्रह की कुछ ग़ज़लें कोरोना काल की पीड़ा और छटपटाहट को स्वर देती हैं-

'करोना ने जमकर मचायी तबाही
इलाही, इलाही, इलाही, इलाही,

'फ़ोन पर ख़ैरियत पूछ ली
दोस्त सब अपने घर में रहे'।

इंटरनेट की आभासी दुनिया ने लोगों को वास्तविक दुनिया से दूर कर दिया है। सबकुछ डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के हवाले होता जा रहा है। कँवल जी इस तल्ख़ हक़ीक़त को बड़ी ही सहजता से कह जाते हैं,

'मन मुताबिक़ एप डाउनलोड हैं/
हूबहू दिखता कहाँ किरदार है',

'इन दिनों है दुकानों पे मनहूसियत/
अब 'अमेज़न' पे मस्ती का बाज़ार है',

पहले जो बनते और सँवरते थे रात दिन/
'टिक टाक' से तो अब उन्हें फ़ुर्सत नहीं रही'।

रमेश कँवल का अंदाज़े बयाँ बिल्कुल स्पष्ट और सीधा है। 'इतराती बलखाती ग़ज़लें' पाठकों के मन को लुभाती हैं और बोलचाल का लहजा संग्रह की ग़ज़लों को जीवंत बनाता है।

पुस्तक-समीक्षा

नाम-'इतराती बलखाती ग़ज़लें'

शायर-रमेश 'कँवल'

प्रकाशन-श्वेतवर्णा प्रकाशन, नयी दिल्ली

प्रकाशन वर्ष-2024

मूल्य-रु 299

पुस्तक समीक्षा

लुभाती हैं रमेश कंवल की इतराती बलखाती गजलें

हिमकर श्याम

राष्ट्रीय सहारा, रांची 25 जनवरी, 2025

‘इतराती बलखाती ग़ज़लें’-परिचय: ऋषिपाल धीमान ऋषि

रमेश ‘कँवल’ ग़ज़ल के संसार का एक ऐसा नाम है जो हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में चर्चित और सम्मानित है। दरअस्ल हिंदी और उर्दू के बीच की कृत्रिम खाई को पाटने में जिन साहित्यकारों का योगदान रहा है उनकी सूची में रमेश ‘कँवल’ का नाम बहुत ऊपर आता है। इनके कई ग़ज़ल-संग्रह यथा ‘सावन का कँवल’ (1997), ‘शोहरत की धूप’ (2013), ‘स्पर्श की चाँदनी’ (2019), अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें (2024) हिंदी में हैं और कुछ ग़ज़ल-संग्रह यथा ‘लम्स का सूरज’ (1997), रंगे-हुनर (2016) उर्दू में हैं। अपने सृजन के अलावा ये अपने अनोखे काव्य-संकलनो के लिए भी जाने जाते हैं।

इस वर्ष 2024 में आपके दो हिंदी ग़ज़ल-संग्रह प्रकाशित हुए हैं- ‘अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें’ तथा ‘इतराती बलखाती ग़ज़लें’। आज हम ‘इतराती बलखाती ग़ज़लें’ पुस्तक की ही बात करते हैं।

यह पुस्तक श्वेतवर्णा प्रकाशन से प्रकाशित हुई है। पुस्तक का आवरण चित्र और गैट अप इतना आकर्षक है कि इसे देखकर कोई पुस्तक को अपने हाथों में लिए बिना रह नहीं सकता। इस पुस्तक में कुल 100 ग़ज़लें हैं। माँ शारदा के चित्ताकर्षक चित्र से प्रारंभ हुई इस पुस्तक को स्वर साम्राज्ञी भारत रत्न लता मंगेशकर को समर्पित किया गया है और भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी को भेंट किया गया है। ग़ज़ल के सशक्त हस्ताक्षरों श्री विज्ञान व्रत, श्री देवेंद्र माँझी, डॉ. भावना और सुश्री शुचि ‘भवि’ ने ख़ूब मन से इस संग्रह की भूमिकाएँ लिखी हैं।

रमेश ‘कँवल’ एक ऐसे ग़ज़लकार हैं जो ग़ज़ल की तमाम अनिवार्यताओं को पूरा करते हुए उसे दायरों से बाहर निकालकर नये-नये लिबास पहनाते हैं।

आप प्रशासनिक सेवा में उच्च पदों पर रहे हैं और आम आदमी से क़रीब से जुड़े रहे हैं। जहाँ ये एक अतिसंवेदनशील व्यक्ति हैं वहीं इनके पास जीवन के अनुभवों का भंडार है और जीवन को देखने की एक पैनी दृष्टि है। इनके यहाँ जीवन अपनी समपूर्णता के साथ मौजूद है।

आधुनिक समाज में होने वाले परिवर्तनों पर इनकी नज़र है। हर कोई कुछ न कुछ दिखाना चाहता है, ख़रीदना चाहता है या बेचना चाहता है।

पहले जो बनते और सँवरते थे रात दिन
'टिक टाक' से तो अब उन्हें फ़ुर्सत नहीं रही

इन दिनों है दुकानों पे मनहूसियत
अब 'अमेज़न' पे मस्ती का बाज़ार है

आप कितना भी धन इकट्ठा कर लें, मान-प्रतिष्ठा पा लें लेकिन जब तक आप इच्छाओं और अपेक्षाओं के जंजाल से मुक्त नहीं होते, प्रसन्न नहीं रह सकते। अनेक

साधुसंतों, महात्माओं, दार्शनिकों ने यह बात समय-समय पर अपने-अपने अंदाज़ में कही है। 'कँवल' जी जीवन की इस सच्चाई वाक़िफ़ हैं और बड़ी ही सहजता से कह जाते हैं-

मुफ़लिसी में कहाँ ठहरता है
मर्द के एतबार का मौसम

सर से गठरी जो फेंकी अपेक्षाओं की
मेरे दुख का 'कँवल' आहरण हो गया

रमेश 'कँवल' आम आदमी के शायर हैं इसलिए आम आदमी के दर्दो-ग़म इनकी ग़ज़लों में बड़ी मार्मिकता के साथ स्थान पाते हैं। ये ज़मीन से जुड़े व्यक्ति हैं इसलिए इनके शे'रों में अपनी माटी की ख़ुशबू है और सच्चाई का रंग है-

खिलौनों पे बच्चे मचलते रहे
पिता भी विवशता छुपाता रहा

ये बज़ट ले उड़ा ग़रीबों से
उनके सब्रो-क़रार का मौसम

नारी अस्मिता को लेकर बहुत ही मार्के के शे'र इन्होंने कहे हैं। आज स्त्री अबला के थोपे गए रूप को त्याग कर सबला के रूप में हमारे सामने है। कोई ऐसा क्षेत्र नहीं हैं जहाँ महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज न कराई हो। कौन भूल सकता है वह दृश्य जब चंद्रयान का प्रक्षेपण हो रहा था। नियंत्रण-कक्ष में साड़ी पहने हुए महिला वैज्ञानिकों का वह समूह आज भी स्मृतियों में गौरव की अनुभूति कराता है।

था हौसला बुलंद हर इक सूबे में 'कँवल'
अब फ़ौज में भी आ गयीं भारत की औरतें

जींस में जाती हूँ दफ़्तर
रेशमी आँचल नहीं हूँ

एक बात जो हर राष्ट्रवादी को सालती रहती है कि हमारे यहँ बच्चों को इतिहास एकदम ग़लत पढ़ाया जाता है। आज़ादी के बाद एक साज़िश के तहत वामपंथियों को इतिहास लेखन का ज़िम्मा सौंपा गया। इन पक्षपाती इतिहासकारों ने भारतीय शूरवीरों को या तो स्थान ही नहीं दिया और अगर दिया तो उनके शौर्य को कम आँककर। महाराणा प्रताप और वीर शिवाजी के स्थान पर अकबर और औरंगज़ेब को महान बताया जो कि आतताई थे। हमारे अधिकांश साहित्यकार भी 'पॉलिटिकली करेक्ट' होने के चक्कर में सच्चाई से आँख चुराते नज़र आते हैं। रमेश 'कँवल' एक सच्चे और साहसी शायर हैं जो सच को सच कहने से नहीं डरते, देखें-

किये हैं सर क़लम लाखों के फिर भी
पढ़ा है हमने वो 'अकबर' बड़े हैं

जो गुनहगार है इतिहास का लाज़िम है उसे
शाह अकबर को तो अब राणा से बेहतर न लिखे

आज मज़हब के नाम पर दहशत और वैमनस्य का बाज़ार गर्म है। जिन राजनेताओं और क़ौम के रहबरों को आपसी प्रेम का संदेश देना चाहिए था वे भेदभाव की खाई को पाटने के बजाय उसे और चौड़ा कर रहे हैं। ग़रीब बच्चों को जिहाद की भेंट चढ़ाया जा रहा है। हमारे कवि इस बात से दुखी हैं और कह उठते हैं-

कोमल बच्चों के दम पर
दहशत का बाज़ार किया

रहनुमाओं की तक़रीर अब
भाईचारा बढ़ाती नहीं

पेट्रोल कि माचिस की ज़रूरत ही नहीं अब
तक़रीरे-सियासत से ही जल जाओगे बेशक

अक्सर यह कहा जाता है कि कवि को सत्ता के विरुद्ध ही लिखना चाहिए। शासक ग़लत काम करे तो उसके ख़िलाफ़ बेबाक़ी से लिखना कवि का उत्तरदायित्व है लेकिन अगर कोई शासक सही काम कर रहा हो तो उसका समर्थन करना भी उतना ही ज़रूरी है।

रमेश 'कँवल' जी इस बात को मानते हैं तभी तो स्पष्टता से कह रहे हैं-

जिसने इद्दत से, हलाला से दिलाई है नजात
क्या लिखे कोई जो 'मोदी' को पयम्बर न लिखे

जबसे चौकीदार है बदला गया
अम्न की मस्ती में घर है आजकल

आज मानो हर आदमी एक ख़रीदार ही नज़र आता है कंपनियों को। कृत्रिम ज़रूरतें पैदा की जा रही हैं। बाज़ार घरों में प्रवेश कर गया है। तरह-तरह की ऐप, तरह-तरह के सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म, हर कोई आभासी दुनिया का आदी हो गया है। रमेश अपने समय की हर समस्या पर बारीकी से नज़र रखते हैं। समय की नब्ज़ पर हाथ रखने वाला कवि समय के साथ चलने का हुनर रखता है।

मन मुताबिक़ एप डाउनलोड हैं
हूबहू दिखता कहाँ किरदार है

अपनी ज़रूरत हमसे अधिक
टी वी विज्ञापन को पता

मानवीय स्वभाव पर बहुत ही दिल को छूने वाले शे'र रमेश जी ने कहे हैं। कुछ लोग धन-दौलत और माल-असबाब से ही किसी व्यक्ति को आँकते हैं। ऐसे ही व्यक्तिओं के लिए ये कहते हैं-

मुझको निहारते रहे सामान की तरह
कुछ लोग घर पे आए थे मेहमान की तरह

भले ही रमेश 'कँवल' आम जन के शायर हैं लेकिन ग़ज़ल की प्राचीन परंपरा को भी निभाते हुए इन्होंने प्रेमपरक श्रृंगार के पारिवारिक सजीव चित्र प्रस्तुत किये हैं। देखें-

चूड़ी कंगन खनक उठे
जब वो सिरहाने आई

एक पल नहीं लगता उनको रूठ जाने में
हमको पहरों लगते हैं फिर उन्हें मनाने में

प्रेम के विभिन्न आयामों यथा मिलन, विछोह, वफ़ा, बेवफ़ाई को इन्होंने एकदम नये अंदाज़ में प्रस्तुत किया है। कुछ शे'र मुलाहिज़ा फ़रमाएँ-

हिज्र में ज़िन्दा रहना यूँ
बिन पेट्रोल के जैसे कार

जामुन की शाख़ पर कभी झूला न डालिए
उस महजबीं के प्यार को दिल से निकालिए

तुम्हारे लफ़्ज़ों को भावनाओं की पालकी में बिठा रहा हूँ
दिले-हज़ीं में मची है हलचल मैं आँसुओं को छिपा रहा हूँ

एक सच्चे कवि को साहस के साथ सच को बयान करना चाहिए। उर्दू के एक नामी-गिरामी शायर (जो अब इस दुनिया में नहीं हैं) कभी-कभी बहुसंख्यक भारतीयों को चिढ़ाती हुई ग़ज़लें सुनाया करते थे। उनकी एक ग़ज़ल 'किसी के बाप का हिन्दोस्तान थोड़ी है' इसी तरह की एक ग़ज़ल थी। 'कँवल' साहब ने इसका उत्तर बड़े ही सलीक़े से अपनी एक ग़ज़ल में दिया है, उसके कुछ शे'र देखिए-

तुम्हारा ख़ून तो शामिल नहीं गुलिस्तां में
लुटेरों के लिए हिंदोस्तान थोड़ी है

लगाओ आग, चलाओ कहीं भी बम-पत्थर
'किसी के बाप का हिन्दोस्तान थोड़ी है'

शिवाजी, तेग़ के, राणा के हम भी हैं वंशज
तुम्हारे ख़ून में ही ये उफ़ान थोड़ी है

रमेश 'कँवल' जी ने बतौर एक कवि और बतौर एक राष्ट्रवादी भारतीय अपनी ज़िम्मेदारियों को ख़ूब निभाया है।

इस संग्रह की ग़ज़लों की भाषा आम बोलचाल की भाषा है जो ग़ज़ल के लिए कारगर मानी गई है। भाषा सहज, सरल और बोधगम्य हो तो अर्थ-संप्रेषण की समस्या नहीं रहती। क्लिष्ट भाषा में बड़ी बात कहने की बजाय सरल भाषा में बड़ी बात कहना कठिन होता है और यह हुनर सतत अभ्यास से ही हासिल होता है। रमेश 'कँवल' जी ने ग़ज़ल के फ़न को एक उम्र दी है।

छोटी, बड़ी या मझली सभी बह्रों में इन्हें महारत हासिल है। इस संग्रह में कई ग़ज़लें तो एक रुक्नी हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इनकी अन्य पुस्तकों की भाँति यह पुस्तक भी साहित्य-जगत में ख़ूब मान पाएगी। अंत में इन्हीं के इस शे'र से अपनी बात समाप्त करता हूँ।

मेरी ग़ज़ल की ख़ुशबू ने
सबको अपना फ़ैन किया

ऋषिपाल धीमान 'ऋषि'
Rishi507dhiman@gmail.com
मोबाईल 94283 30490

फ़ोन पर खैरियत पूछ ली: रमेश 'कँवल'

2018 को बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना की स्थापना हुई। बिहार उर्दू अकादमी, पटना, बिहार साहित्य सम्मलेन पटना, बिहार प्रशासनिक सेवा संघ भवन और गांधी मैदान के पुस्तक मेला में उस्तादे मरहूम हफ़ीज़ बनारसी को ख़िराजे-अक़ीदत पेश करते हुए तरह तरह के प्रोग्राम आयोजित हुए। उस्ताद के मिसरा-ए-तरह पर पटना और बाहर के दीगर शायरों ने ग़ज़लें भी कहीं।

2019 में हिंदी में मेरे ग़ज़ल संग्रह "स्पर्श की चाँदनी" के बाद मैं ग़ज़लों के संकलन और सम्पादन कार्य में जुट गया। 2020 में "अक़ीदत के फूल", 2021 में "2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें" और इस साल 2022 में "इक्कीसवीं सदी के इक्कीसवें साल की बेहतरीन ग़ज़लें" का प्रकाशन संभव हो सका। 2020-21 तो कोरोना काल था जिसमें

फ़ोन पर खैरियत पूछ ली
दोस्त सब अपने घर में रहे

अदबी महफ़िलें थम सी गईं। ऑनलाइन मुशायरा सेमीनार होने लगे। वैसे भी मैं पत्रिकाओं में प्रकाशनार्थ ग़ज़लें कहाँ भेज पाता हूँ। फ़ेसबुक और WhatsApp पर ग़ज़लें प्रकाशित होती रहीं। तरह तरह के डिजाईन बनते रहे।

3-3 संकलित / सम्पादित पुस्तकें मुझे शोहरत की चाँदनी में स्नान-आनंद दिलाती रहीं। मित्रों, अभिभावकों के मान सम्मान से सरोबार होता रहा। अभी कुछ और संकलन आने हैं।

मित्रों का इसरार था कि मैं अपना मजमुआ नहीं निकलवा रहा हूँ। अस्तु सोशल मीडिया पर प्रकाशित-अप्रकाशित ग़ज़लों को समेटकर ये मजमुआ आपकी फ़न शनास निगाहों की गिरां क़द्र राय के लिए पेश कर रहा हूँ। आपको कैसी लगी ये तो आप ही बताएँगे।

सुर साम्राज्ञी भारत रत्न लता मंगेशकर को समर्पित ग़ज़ल संग्रह 'इतराती

बलखाती ग़ज़लें' राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक और राष्ट्रीय गौरव नरेन्द्र मोदी को सप्रेम भेंट कर रहा हूँ।

डॉ. कृष्ण कुमार नाज़ का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक की पाण्डुलिपि पर नज़रे-सानी कर के जाने अनजाने हुई त्रुटियों का परिमार्जन कर उन पर शुद्धता का आवरण डाला। आदरणीय विज्ञान व्रत जी से प्राप्त स्नेह के लिए जो इस पुस्तक के कुछ पृष्ठों पर उनकी हस्तलिपि के प्रतिबिम्बों का टंकण कर उतारा गया उन्हें प्रणाम करता हूँ। भाई देवेन्द्र मांझी जिन्होंने अपनी अस्वस्थता को दरकिनार कर इस ग़ज़ल संग्रह की ख़ूबियों को उकेरने का प्रयास किया ; ग़ज़ल विधा पर निरंतर क़लम चलाने वाली वेब पत्रिका की संपादक डॉ. भावना और फेसबुक पर स्त्री परामर्श की छवियाँ, पेंटिंग्स और सुरुचिस्निग्ध चित्र पोस्ट करते रहने वाली इलेक्ट्रॉनिक्स में गोल्ड मेडलिस्ट विदुषी श्रीमती शुचि 'भवि' जी का आत्मिक आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने मेरी ग़ज़लों को अपनी लेखनी की प्रशंसा के योग्य समझा।

मैं 44 साल से अपना संग-सौंदर्य प्रदान करने वाली भार्या श्रीमती मंजु प्रसाद के प्रति अपना स्नेह भाव ज्ञापित करता हूँ जो मुझे संकलन-सम्पादन से दूर हट कर मेरी ग़ज़लों को भी ग़ज़ल व्योम में उपस्थापित करने की निरंतर प्रेरणा देती रहीं।

मैं अपने दोनों पुत्रों कुमार अभिषेक एवं कुमार संभव को भी आशीर्वाद देता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को प्रस्तुत करने में सहयोग किया। और मैं अपनी बहु रिहा को भी साधुवाद देता हूँ जिन्होंने मुझे काव्य साधना में लीन होने पर मेरे लैपटॉप टेबल पर समयानुसार चाय नाश्ता रख कर समय का भान कराती रहीं।

आइये 'इतराती बलखाती' ग़ज़लों का किताब के पन्नों पर इतराने का आनंद लीजिये और मुझे मुस्कुराते हुए बताइये कि ये कैसी हैं!

16 मई, 2022 **रमेश 'कँवल'**

बुद्ध पूर्णिमा

ई-मेल rameshkanwal78@gmail.com
वेबसाईट-www.rameshkanwal.com

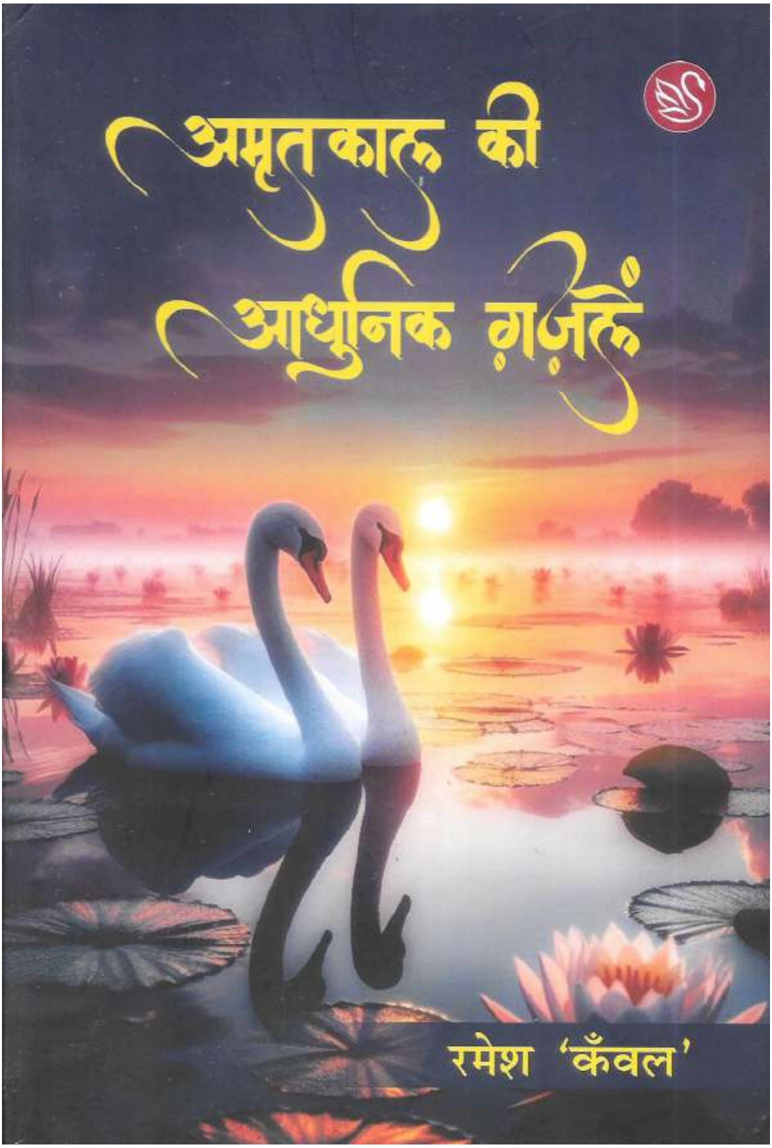
अमृतकाल की
आधुनिक ग़ज़लें
रमेश 'कँवल'

अमृतकाल के सत्य की साक्षी ग़ज़लें: विजय स्वर्णकार

कविता साहित्य की लाडली है। साहित्य के परिवार से जुड़ा शायद ही कोई ऐसा सदस्य होगा जिसने इससे लाड़ न लड़ाया हो। प्रत्येक संवेदनशील मनुष्य ने कभी न कभी कविता में अपना मन रखा और नहीं तो अपने मन में कविता को रखा। इस से मन की गांठे खुलती जाती हैं और वह अपने अनंत से परिचित होता है। कविता में ग़ज़ल अपनी रहस्यमयी ओजस्विस्ता के कारण विशिष्ट स्थान रखती है। ग़ज़ल के बीज शब्द अपने मूल अर्थों की आहुति से ऐसे नए अर्थों और बोध की अनुभूति प्रदान करते हैं जो मन को आंदोलित, आलोकित और आनंदित करने में सक्षम होते हैं। साहित्य प्रेमियों के लिए ग़ज़ल के शे'र मंत्र स्वरूप होते हैं जिनके सुनने भर से उनके अंतस में यथार्थ के विभिन्न आयाम जाग्रत होकर भावबोध के ऐसे कोलाज तैयार करते हैं जिसके प्रभाव प्रायः अनिर्वचनीय होते हैं। इसी के चलते ग़ज़ल विभिन्न भाषाओं में अपनी यात्रा के अनुभव नई भाषाओं से साझा करते हुए उनके साहित्य की मुख्य काव्य विधा बन गई है। हिन्दी एक उदाहरण है। हिन्दी भाषी ग़ज़लकार आज जिस सक्रियता का परिचय दे रहे हैं वह अभूतपूर्व है। रमेश 'कँवल' का नाम भी उन रचनाकारों में से एक है जो ग़ज़ल की चिर समृद्धि के लिए बहुआयामी योगदान दे रहे हैं।

इस संग्रह की ग़ज़लों से गुज़रते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि रमेश 'कँवल' एक सिद्धहस्त ग़ज़लकार हैं और ग़ज़ल जैसी श्रमसाध्य विधा को साधने में उन्होंने अवश्य सतत साधना की है। व्याकरण सम्मत इन ग़ज़लों में उनके विस्तृत जीवनानुभव के रंग सम्मोहन शक्ति से लैस हैं। लंबे प्रशासनिक अनुभव ने उन्हें विशिष्ट सामाजिक और राजनैतिक चेतना से संपन्न किया है और उसी चेतना की बेबाक अभिव्यक्ति ने इस संग्रह में जान फूँकी है।

पिचहत्तर बरस हो गए ऐ वतन
नया देश अपना नया आदमी

'कँवल' देश रफ़्तार में खो गया
पिछड़ता हुआ रह गया आदमी

मंच पर दूल्हे के ख़ेमे में है हलचल
अब लिए जयमाल दुल्हन बढ़ गई है

शहर का ज़हरीला है वातावरण
नागरिक ख़ुशियों से वंचित हो गए

हर ऑफ़िस में एक सा मंज़र
हर कुर्सी पर एक सा अफ़सर

ख़मोश हो के गवाहों के झूठ सुनता रहा
किसी बिके हुए मुंसिफ़ का फ़ैसला था वो

घर के बाशिंदों की अनबन बढ़ गई है
रेशमी पर्दों की उलझन बढ़ गई है

रफ़्तार में खोए आदमी का पिछड़ना और दुल्हन का जयमाल लिए आगे बढ़ जाना, नोटिस करने वाली बातें हैं। पहली बात में मनुष्यता की पीड़ा है और दूसरी में मातृशक्ति के स्वाभिभान के जयघोष का आह्लाद है।' एक सा ऑफ़िस एक सा अफ़सर' हमारी प्रशासनिक व्यवस्था पर करारी चोट कर रहा है। इस संग्रह में आज़ादी के अमृत काल की परछाईं का सच जगह जगह उभर कर आया है। बाशिंदों की अनबन और रेशमी पर्दों की उलझन भी ग़ौर करने लायक़

है। पर्दे तो रेशमी हैं लेकिन अहसास के चींथड़े हो चुके हैं। रमेश ‘कँवल’ के सूक्ष्म निरीक्षण की शक्ति का प्रमाण हैं ये शे’र। संग्रह में गाँव, गगन, मिट्टी, हवा, आग, पानी, नदी, घर, आदमी, औरत, आँसू, धूप, रोटी, कोयला, दफ़्तर आदि रदीफ़ का हिस्सा हैं। इस से ग़ज़लकार के सरोकार स्पष्ट होते हैं। रमेश ‘कँवल’ ने अपने समय को देखा, भोगा और पहचाना है। वे उसे स्वीकारते हुए उसकी आवाज़ को शब्द दे रहे हैं। कोरोना काल की विभीषिका का उद्वेलन भी जगह-जगह दिखाई देता है

देखते ही व्यथा विसर्जन की
झील नदियों पे छा गए आंसू

मुंह पे गमछा बांधने की ठान ली
गांव ने दो गज़ की दूरी मान ली

आपदाओं में भी अवसर खोजना
यह कला भी देश ने पहचान ली

नदियों के किनारे विसर्जन तो पहले भी होते ही थे लेकिन जिस तरह अबकी बार विसर्जन हुए हैं वह अमानवीय और कारुणिक थे। दो गज़ की दूरी का जुमला कब्र के लिए आवश्यक दो गज़ ज़मीन की याद दिला देता है। तीसरा शे’र एक सम्पूर्ण बयान है।

इन ग़ज़लों में बेबाक़ी और निडरता देखते ही बनती है। समाज में व्याप्त विसंगतियाँ, नागरिकों की व्यथाएँ, अभाव, उपलब्धियाँ आदि पर बहुत से शे’र इस संग्रह में हैं। रमेश ‘कँवल’ की जीवन दृष्टि और उनकी पक्षधरता स्पष्ट है। जहाँ बयान देना है वहाँ बयान है और जहाँ प्रश्न करना है वहाँ प्रश्न है।

पंछियों के दल बड़ी हैरत में हैं
कैसे कम पानी बचा तालाब में

रहते हैं सुख चैन से दोनों 'कँवल'
तुलसी और रैदास अपने गांव में

हम पे अमृत काल की मस्ती चढ़ी
हम तरक़्क़ी के हिमाचल हो गए

आँख नम हो गई क्यों तेरी
क्या कोई दर बदर हो गया

बहुत सभ्य सुंदर हैं 'मानस' में बातें
इसे सायनाइड बताने से बचिए

इस संग्रह में प्रेम की अभिव्यक्ति भी है। कुछ बहुत ही सुंदर शे'र हुए हैं। इसी तरह रमेश 'कँवल' की विराट गंभीरता में चुलबुलेपन और संतुलित व्यंग्य के लिए भी जगह है। पुस्तक के अंतिम भाग में कुछ नज़्में हैं।' श्री राम अभिनंदन गीत' खंड में श्री राम और उनके प्रति आस्था के गीत हैं। सबसे अंत में संग्रह की ग़ज़लों में प्रयुक्त वज़्न दिए गए हैं। इस से नवोदित रचनाकार लाभान्वित होंगे।

रमेश 'कँवल' की काव्य भाषा शे'र के मूड और कथ्य के अनुरूप है। एक तरफ़ जहाँ अरबी फ़ारसी के शब्द हैं वहीं दूसरी तरफ़ संस्कृत के शब्द भी हैं। अंग्रेजी के बोलचाल के शब्दों का तड़का भी यथोचित है। सबसे बड़ी बात यह है कि भाषा को बनावटीपन से बचाया गया है। यह संग्रह ग़ज़ल के लिए उपयुक्त आधुनिक बोलचाल की हिंदुस्तानी भाषा को गढ़ने वाली कोशिश का हिस्सा है।जिस निडरता का उल्लेख ऊपर हुआ है वह रमेश 'कँवल' की काव्यभाषा में भी है। वे जब रोजमर्रा के चित्र खींचते हैं तो उसके अनुरूप ही शब्दों का चयन करते हैं। इसी कारण शे'र प्रभावशाली हुए हैं।चप्पल, चैनल, डिब्बा, सनातन, राम मंदिर, स्क्रीन, मोबाइल, पांच जी, वंदे भारत, नेट सोशल मीडिया, शिक्षा नीति, बुलडोजर आदि शब्द सहजता से उनके शे'र में आते हैं। कुछ शे'र देखिए-

इन दिनों है दुकानों पे मनहूसियत
अब अमेज़न पे मस्ती का बाज़ार है

एक बाइक पर सिमटते दोस्त दो
लम्स के ख़ुशरंग बादल हो गए

प्रस्तुत संग्रह "अमृत काल की आधुनिक गजलें "इन अर्थों में अनूठा है कि वह ग़ज़ल के अनुशासन का पालन करते हुए कहीं कहीं उसकी परम्परा के दायरे से लगभग बाहर खड़े होकर नई परम्परा की खोज करता प्रतीत होता है। ग़ज़ल में जब भाषा बदलती है तो शब्द बदलते हैं ; शब्द बदलने से ध्वनि बदलती है और ग़ज़ल प्रेमियों को इस नई ध्वनि से परिचित होने में समय लगता है। यह पहले तरह का परिवर्तन है। दूसरे तरह का परिवर्तन ग़ज़ल के कंटेंट को लेकर होता है। एक ही भाषा में कंटेंट का क्रमिक परिवर्तन होता ही रहता है लेकिन दूसरी भाषा में यह परिवर्तन बहुत अलग गति पकड़ लेता है। तीसरा परिवर्तन ग़ज़ल के मूल सिद्धांतों में आंशिक परिवर्तन से संबंधित होता है। इस संग्रह में कुछ स्थानों पर इस तीसरे तरह के परिवर्तन के दर्शन होते हैं। ग़ज़ल का शे'र सर्वकालिक नहीं तो दीर्घकालिक होता है अर्थात उसे अगर सदियों बाद भी पढ़ा जाए तो सुधी पाठक उस से अर्थ ग्रहण कर लेता है। उसमे किसी घटना विशेष या तात्कालिक संदर्भ का उल्लेख इस तरह नहीं होना चाहिए कि आने वाले समय में वह बात प्रासंगिक न रह जाए और शे'र से अर्थ ग्रहण करना दुष्कर हो जाए। चुनौती यह है कि अपने वर्तमान को स्थान देना भी आवश्यक है लेकिन इस तीव्र गति से परिवर्तन शील समय में वर्तमान को सीधे सीधे व्यक्त करने के ख़तरे हैं। उदाहरण के लिए यह शे'र लीजिए

इन दिनों है दुकानों पे मनहूसियत
अब' अमेज़न' पे मस्ती का बाजार है

ट्रेन मजदूरों की खातिर चल पड़ीं
बच्चों ने घर पर सुखद मुस्कान ली

पहले शे’र में ‘अमेज़न’ शब्द यहाँ जो अर्थ आज संप्रेषित कर रहा है क्या आने वाले समय में भी वही अर्थ देगा। अगर वह भी’ ट्विटर’ की तरह केवल नाम बदल ले तो! दूसरे शे’र में भी कोरोना के दौरान मजदूरों के पलायन के प्रसंग को ध्यान में रखे बग़ैर शे’र के अर्थ तक पहुँचना मुश्किल होगा।

जैसे कि “मुक्तिबोध” ने अन्य संदर्भ ने कहा था कि अब अभिव्यक्ति के ख़तरे उठाने होंगे, उसी तर्ज़ पर इस सदी की ग़ज़ल ये ख़तरे उठाकर अपने वर्तमान को आवाज़ दे रही है। ज़ाहिर है कभी वह सफल होगी कभी नहीं। रमेश ‘कँवल’ ने ये ख़तरे उठाए हैं। ग़ज़ल का विस्तृत फ़लक इसके लिए तैयार हो रहा है। क्या पता कल ग़ज़ल की परम्परा में नया अध्याय जुड़े।

अमृतकाल के सत्य की साक्षी ग़ज़लों का यह संग्रह सुधी पाठकों की आशाओं पर खरा उतरेगा। आधुनिक ग़ज़लों के विकास क्रम में यह एक कड़ी है। इस महत्वपूर्ण संकलन के लिए रमेश ‘कँवल’ जी बधाई के पात्र हैं। ‘अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें’ पुस्तक की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

21 अप्रैल, 2024
महावीर जयंती

विजय कुमार स्वर्णकार
45 कादंबरी अपार्टमेंट,
सेक्टर-9 रोहिणी,
दिल्ली 110085
संपर्क अंक 995 855 6141

आधुनिक भावबोध की ग़ज़लें, नज़्में और गीत: राजमूर्ति 'सौरभ'

रमेश 'कँवल' मौजूदा दौर की शाइरी का एक सुख्यात नाम है। हिन्दी-उर्दू पर समान अधिकार रखने वाले कँवल जी शाइरी के फ़न पर भरपूर पकड़ रखते हैं। मेरा सौभाग्य है कि उनकी अधिकांश किताबें पढ़ने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। वे एक समर्पित और आस्थावान रचनाकार हैं। उनकी ग़ज़लें व्याकरण की कसौटी पर परखी हुई हैं। रचनाएँ भाषाई आग्रह से मुक्त सहज, सरल और रवानी लिए हुए हैं। आम बोलचाल में प्रयोग किये जाने वाले अंग्रेजी शब्दों का भी इन्होंने सटीक इस्तेमाल किया है अपनी ग़ज़लों में। साफ़बयानी और मुहावरेदानी ग़जलों में प्रभावोत्पादकता पैदा करती हैं।

'अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें' पाण्डुलिपि रूप में हस्तगत हुई। विस्तार से पढ़ते हुए संग्रह में सम्मिलित ग़ज़लों, नज़्मों, गीतों में उतरने, समझने और उन्हें आत्मसात करने का सुखद अवसर प्राप्त हुआ। प्रभु श्री राम के बालस्वरूप एवं अयोध्या की रामजन्म भूमि को समर्पित यह पुस्तक रमेश कँवल जी की राम के प्रति अनन्य आस्था की परिचायक है।राष्ट्रप्रेम के साथ ही सनातन एवं भारतीय संस्कृति में अगाध आस्था रखते हैं वे जो उनकी रचनाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

संग्रह में कुल छियासी ग़ज़लें, पाँच नज़्में और प्रभु राम पर केन्द्रित पाँच गीत सम्मिलित किए गये हैं। काव्य-बिम्बों के प्रयोग में आवश्यकतानुसार अधुनातन एवं पारम्परिक दोनों को सम्मिलित किया गया है। तख़य्युलात की परवाज़ के साथ ही शे'रियत का भी पूरा ध्यान रखागया है।

ग़ज़लों की भावभूमि व्यापक है।मानवीय संवेदनाएँ, जीवन की जटिलताएँ, मनुष्य में घर करती विद्रूपताएँ, सामाजिक विषमताएँ आधुनिक ग़ज़लों की

विषयवस्तु तो हैं ही साथ ही शायर अपने धर्म का पालन करते हुए आम आदमी को आगाह करता है, समाधान देता है और दिशाबोध भी कराता है। यही इन ग़ज़लों की सार्थकता है। ग़ज़ल के सुधी पाठकों के लिए कुछ पसन्दीदा शे’र उद्धृत कर रहा हूँ-

बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बड़ा त्याग भी करना पड़ता है। इस भाव को रूपायित करता शे’र देखिए-

छाँव में इक पेड़ की बैठे रहे,
फिर तथागत यश के पीपल होगये।

ज़िन्दगी की मुश्किलों को सहजता से पार करने की सीख देता हुआ बहुत प्यारा शे’र आप भी देखिए-

मत अँधेरे से घबराइए,
गुनगुनाते हुए आइए।

मोबाइल को ही अपना सबकुछ मानने वाले मौजूदा दौर के इंसान को आगाह करते हैं रमेश कँवल जी-

आगाज़ मुबाइल है अंजाम मुबाइल है,
इंसान के हाथों में सुखधाम मुबाइल है।

रेडिएशन भले ही जाँ ले ले,
लत मुबाइल की कब सुधरती है।

मानव मन कभी-कभी बच्चे की तरह ज़िद पर उतर आता है।इसे बहुत ही ख़ूबसूरती से शे’र में पिरोते हैं कँवल जी-

चाँद को थाल में उतारूँ कँवल,
एक बच्चे की ज़िद हूँ! जुरअत हूँ।

अपनी सामर्थ्य से अधिक वादा करने वालों का सच उजागर करता हुआ बेहतरीन शे’र देखिए-

दस्तरस में ज़मीं नहीं जिसकी,
करगया आसमान का वादा।

बेटियों की उपलब्धियों को उजागर करने के साथ उनपर गर्व करता है शायर और अपनी मंगलकामना व्यक्त करता है-

धरा-जल-गगन पर हैं फहराये झंडे,
रहे बेटियों की सलामत जवानी।

सनातन धर्म के प्रति गहरी आस्था रखने वाले कँवल जी के लिए किसी उत्सव से कम नहीं सनातन की यश पताका का फहरना-

सनातन धर्म का झंडा है लहराया,
फ़क़ीरों से मिलो उत्सव मनाओ तो।

सम्बंधों में संदेह दिलों में दूरी पैदा करता है और रिश्ते को खोखला कर देता है।शे'र देखिए-

शक की गुंजाइश बनी जबसे हमारे दरमियाँ,
मुट्ठियों की रेत सी हम तुम फिसलते ही रहे।

तक्नीक हमारे देश की प्रगति में किस तरह सहायक है इस ओर ध्यान आकृष्ट करता हुए बेहतरीन शे'र देखिए-

बायो मेट्रिक हाज़िरी से है इज़ाफ़ा काम में,
टेक्निक से इक नया भारत बना सकता हूँ मैं।

पैरवी और रिश्वत का बोलबाला है हर जगह। ग़रीब और कमज़ोर तबके की सुनवाई कहीं नहीं है।कितना सटीक शे'र हुआ है-

मुफ़लिसों की अर्ज़ियाँ मायूस हैं अब,
पैरवी-रिश्वत की अकड़न बढ़गयी है।

कभी ऐसा भी होता है कि अपने काम में सिद्धहस्त होते हुए भी आदमी बुरे अंजाम को प्राप्त हो जाता है। शे'र देखिए-

डूबने वालों में उसका नाम है,
इक शिनावर का अजब अंजाम है।

वर्तमान परिदृश्य में हमारी उत्कृष्ट संस्कृति का पुनरुत्थान हमारे लिए संतोष एवं गर्व का विषय है-

बुनियाद पड़ रही है प्राचीन सभ्यता की,
ऐसा हज़ारों बरसों तक में हुआ नहीं है।

उद्धृत शे'रों की रोशनी में कँवल साहब की सोच-समझ, उनकी अधुनातन दृष्टि साफ़ नज़र आती है। प्रेम-मुहब्बत जीवन का आधार है ऐसा बारम्बार इंगित किया है उन्होंने।

अमृत काल की आधुनिक ग़ज़लें सदैव की तरह ग़ज़ल प्रेमी पाठकों के बीच मक़बूल होंगी इसी शुभकामना के साथ।

शुभेच्छु-

5 मई, 2024

राजमूर्ति 'सौरभ'
ग्राम एवं पोस्ट-सरायमुरार सिंह,
ज़िला-प्रतापगढ़, उ.प्र., पिनकोड-230402
मोबाइल नम्बर-7007930595

सामाजिक सरोकारों की पहरेदारी: डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'

आदरणीय रमेश कँवल जी अपने सेवाकाल में विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन रहे हैं। उन्होंने शासन को भी और समाज को भी बड़े नज़दीक से देखा है। मैंने उनमें एक विशेष बात देखी है कि वह जो भी करते हैं, बड़े मनोयोग से करते हैं। किसी भी कार्य के प्रति उनकी निष्ठा और लगन प्रणम्य है। वह सिर्फ़ अपनी पुस्तकें ही नहीं, बल्कि ग़ज़लों के कई संकलन संपादित कर प्रकाशित करा चुके हैं। आयु की सत्तर सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद भी उनका उत्साह थका नहीं है। यही कारण है कि वह आज भी युवाओं की तरह ऊर्जावान रहकर अपने साहित्यिक कार्य कुशलतापूर्वक कर रहे हैं।

उनकी कई पुस्तकें-लम्स का सूरज (उर्दू), सावन का कँवल (हिंदी) 1997 में, शोहरत की धूप (हिंदी) 2013 में, रंगे-हुनर (उर्दू) 2016 में तथा स्पर्श की चाँदनी (ग़ज़लें एवं नज़्में) 2019 में प्रकाशित होकर साहित्यिक समाज में चर्चा का केंद्र बन चुकी हैं। इसके अलावा उनके संपादन में-'अक़ीदत के फूल' (ग़ज़ल-नज़्म) 2020 में, '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' (600 ग़ज़लों का संकलन) 2021 में, '21वीं सदी के 21वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें' और एक रुक्नी अनूठी ग़ज़लें 2022 में, 'अमृत महोत्सव की ग़ज़लें' (75 रदीफ़ों पर ग़ज़लें) 2023 में-आदि संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अलावा 'वंदन! शुभ अभिवंदन!' शीर्षक से सनातन धर्म के विभिन्न देवी-देवताओं पर आधारित वंदनाओं / कविताओं का संग्रह वर्ष 2023 में प्रकाशित हो चुका है, जिसमें देशभर के रचनाकार सम्मिलित हैं। इतना ही नहीं, अपने काव्यगुरु हफ़ीज़ बनारसी साहब के प्रति उनके दिल में अगाध श्रद्धा है। वह कहीं भी हों, हफ़ीज़ साहब के गुणों का बखान करने का अवसर नहीं चूकते। गुरु के प्रति यह सम्मान बहुत कम रचनाकारों में देखने को मिलता है। मेरा मानना है कि गुरु का आशीर्वाद ही

शिष्य को नित नई ऊँचाइयाँ छूने को प्रेरित करता है। कँवल जी ने हफ़ीज़ साहब की ग़ज़लों का भी संकलन और संपादन कर उन्हें 'क्या सुनाएँ हाले-दिल' और 'आज फूलों में ताज़गी कम है' शीर्षक से प्रकाशित कराया है। अपने मृदु व्यवहार और परिश्रम के बल पर कँवल जी आज बिन थके साहित्यिक आकाश के ज़ीने निरंतर चढ़ रहे हैं।

मैं पहले भी निवेदन कर चुका हूँ कि रमेश कँवल जी सेवाकाल में विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं और बड़े निकट से समाज का अवलोकन किया है। इसलिए उनके शे'रों में समाज प्रतिबिंबित होता है। गाँवों में आज भी सभी धर्मों और जातियों के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। वहाँ न धर्मवाद है, न जातिवाद। न कोई अगड़ा है, न कोई पिछड़ा। सब लोग एक-दूसरे की सहायता करते हैं। शहरों में तो लोगों को पड़ोसी की भी जानकारी नहीं है, जबकि गाँवों में छप्पर भी मुहल्ले के सभी लोग मिलकर उठाते हैं। जाति व्यवस्था का तो कोई प्रश्न ही नहीं। एक सुंदर शे'र देखें-

रहते हैं सुख-चैन से दोनों 'कँवल'
तुलसी और रैदास अपने गाँव में

प्रारब्ध बहुत महत्वपूर्ण है। इंसान की मेहनत अपनी जगह और उसकी क़िस्मत अपनी जगह। एक युवा ने अपनी माँ से पूछा-माँ तदबीर बड़ी है या तक़दीर? माँ ने कहा-बेटा तदबीर बड़ी है, बशर्ते कि तक़दीर साथ दे। अर्थात् मुक़द्दर के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। मनीषियों का कहना है कि किसी भी प्राणी का प्रारब्ध उसके पूर्व जनम के कर्मों के आधार पर ही बनता है। वरना क्यों एक बच्चा फ़ुटपाथ पर पैदा होता है और एक महलों में, जहाँ उसे सारी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। झील के पत्थरों की क़िस्मत भी कुछ ऐसी ही है कि ले-देकर उनको एक ही जल में रहना है, जबकि नदी के पत्थरों की मुलाक़ात नित नई लहरों से होती रहती है-

मुझको धारे नदी के मिल न सके
झील के पत्थरों की क़िस्मत हूँ

बहुत सुखद महसूस होता है, जब रमेश जी सनातन का ध्वज लेकर अन्य रचनाकारों का मार्गदर्शन करते हैं। वह जानते हैं कि सनातनी व्यक्ति ही राष्ट्रधर्म की रक्षा कर सकता है। इसीलिए वह देश के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, श्री अमित शाह और योगी आदित्य नाथ जी के प्रशंसक हैं। वह जानते हैं कि इन महानुभावों का हर कार्य देशहित में होता है, क्योंकि ये सनातन की मशाल लेकर राष्ट्र को विकास के मार्ग पर ले जा रहे हैं। पाँच शताब्दी बाद राममंदिर का निर्माण इस बात का सुबूत है कि अब देश में रामराज्य आने को है-

ध्वंस हो पाएगा कैसे
ये सनातन का क़िला है
राष्ट्रहित में कार्यरत कुछ
रहबरों का क़ाफ़िला है
सदियों के उत्सर्ग का फल
राममंदिर का सिला है

सनातन धर्म का झंडा है लहराया
फ़क़ीरों से मिलो उत्सव मनाओ तो

प्रस्तुत शे'र हर उस व्यक्ति के जीवन से जुड़ा है, जो नौकरी पेशा है। कवि ने अपने अंदाज़ में सार्वभौमिक सत्य कहा है। वास्तव में जब कार्यालय की फ़ाइलें शाम को घर तक आने लगें, तो परिवार के सदस्यों का विचलन स्वाभाविक है। साथ ही कार्य के बोझ से दबा व्यक्ति परिवार के दायित्वों का निर्वहन ठीक से नहीं कर पाता-

जब मैं दफ़्तर उठा के लाता हूँ
मुझको लगता है अनमना-सा घर

सकारात्मकता रमेश जी के शे'रों का मूल स्वर है। वह अपने शे'रों में युवावर्ग के प्रेरणास्रोत के रूप में भी नज़र आते हैं। तभी तो वह कह उठते हैं-

ग़म के दस्तरख़्वान पर ख़ुशियाँ सजा सकता हूँ मैं
छाँव में काँटों की फूलों को खिला सकता हूँ मैं

पाश्चात्य संस्कृति ने भारतीय समाज के युवाओं पर कुप्रभाव डाला है। वर्तमान इंटरनेट के युग में तो व्यभिचार का कारण जहाँ सोशल मीडिया है, वहीं अश्लील फ़िल्मों ने इस आग में घी का काम किया है। ऐसी घटनाएँ रोज़ समाचार पत्रों की सुर्खियाँ बनती हैं-

आई मिस यू, आई लव यू वायरस के जाल में
फँसने वाली लड़कियों को कब बचा सकता हूँ मैं

संस्कार कहीं बाज़ार में नहीं मिलते। यह तो वह भावना है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आती है। जब हम अपने बुज़ुर्गों का सम्मान करते हैं, तो हमारी संतानें हमें देखती हैं और हमसे उसी प्रकार का व्यवहार करती हैं। इसमें दो राय नहीं कि बुज़ुर्गों के आशीर्वाद से व्यक्ति का भाग्य सँवरता है-

पाँव बुज़ुर्गों के दाबे
भाग्य हमारे तब जागे

कवि ने अधोलिखित शे'र यानी मात्र दो पंक्तियों में ग़ज़ल के इतिहास का संक्षिप्त वर्णन कर दिया है। ग़ज़ल कभी तवायफ़ों के घुँघरुओं में क़ैद थी, लेकिन आज वह समाज के हर वर्ग की चहेती है। ख़ासतौर से निर्धन वर्ग की प्रबल पक्षधर बनकर खड़ी है और अपनी साहित्यिक ज़िम्मेदारियों का निर्वहन कर रही है-

शहरों के महँगे कोठों पर गुमसुम थी
चैन मिला निर्धन के घर जब आई ग़ज़ल

'अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें' ग़ज़ल-संग्रह में 92 ग़ज़लें, पाँच नज़्में और पाँच राम अभिनंदन गीत सम्मिलित हैं।

आदरणीय रमेश 'कँवल' जी को पुस्तक के प्रकाशन के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई।

माँ सरस्वती जी से प्रार्थना है कि वह इस पुस्तक के माध्यम से इनकी साहित्यिक ऊँचाइयों को और उन्नत करें।

दिनांक: 05.5.2024

डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'
9/3, लक्ष्मीविहार, हिमगिरि कालोनी
काँठ रोड, मुरादाबाद-244001
मोबाइल: 99273-76877

बुनियाद पड़ रही है प्राचीन सभ्यता की: रमेश कँवल

ग़ज़लों से मेरा जुड़ाव विगत 50 वर्षों से रहा है। साहिर लुधियानवी मेरे प्रिय कवि रहे हैं और आज भी हैं। मैं फ़िल्मी गाने सुन सुन कर ग़ज़लों की दुनिया की ओर आकर्षित हुआ। शकील बदायूनी, जाँनिसार अख्तर, इंदीवर, प्रदीप, नीरज, कैफ़ी आजमी, राजा मेंहदी अली खां आज भी मेरे दिलो-दिमाग़ पर छाए हुए रहते हैं।

शुरुआती दिनों में मेरे उस्ताद वफ़ा सिकंदरपुरी रहे जो तड़क भड़क से दूर रहने वाले बेहद सादा दिल इंसान की मिसाल हैं। वे काँकीनारा, पश्चिम बंगाल में रहते हैं और उनसे मेरा संपर्क मेरे ग़ैर शायराना क़स्बा जगदल में रहने के समय ही हुआ। अब तो सोच कर हँसी भी आती है कि मैं उस समय क्या लिखता था और क्या शायरी की समझ रखता था। उन्होंने मेरा हाथ पकडा और शायरी का क ख ग सिखाना शुरू किया। मैं वहाँ से शहर आरा आ गया। प्रशासनिक सेवा से सेवनिवृत होने के बाद जब मैंने उनकी सुधि ली तो पता चला कि उन्होंने अभी तक अपना कोई मजमुआ ही शाया नहीं करवाया है। उन्होंने अपना शे'री मजमुआ छपवाने पर कभी ध्यान ही नहीं दिया हालांकि वे आला दर्जे की शायरी करते हैं। बहुत इसरार के बाद उन्होंने अपनी ग़ज़लें मुझे भेजीं और मजमुआ शाया करवाने की इजाज़त दी। लहू का सफ़र के नाम से उनका मजमुआ एजुकेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली से 2021 में उर्दू में प्रकाशित हुआ और काफ़ी मक़बूल भी हुआ।

आरा आने के बाद मैं प्रो. हफ़ीज़ बनारसी साहब (अब स्वर्गीय) से इसलाह लेता रहा। उर्दू में उनके कई मजमुए हैं लेकिन हिन्दी में उनका ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित करवाने का पुण्य मेरे नाम रहा। ग़ज़लों का संकलन तो वैसे उनके दामाद स्वर्गीय डॉ. ओबैदुर रहमान ने अपने जीवन काल में ही कर लिया

था लेकिन उन्हें मूर्त रूप देने का सवाब मेरे हिस्से आया। उनके 2 मजमुए आज फूलों में ताज़गी कम है और क्या सुनाएं हाले-दिल एनी बुक प्रकाशन, नोएडा से 2023 में प्रकाशित हुए।

अक़ीदत के फूल (ग़ज़ल नज़्म) 2020 में, 2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें: 600 ग़ज़लों का संकलन 2021 में, 21 वीं सदी के 21 वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें और एक रुक्नी अनूठी ग़ज़लें 2022में और 2023 में अमृत महोत्सव की ग़ज़लें-75 रदीफ़ों पर ग़ज़लें और वंदन! शुभ अभिवंदन ! देव स्तुति की कविताओं का संग्रह का सम्पादन किया।

क्या सुनाएँ हाले-दिल, और **आज फूलों में ताज़गी कम है**-हफ़ीज़ बनारसी की ग़ज़लों का संग्रह संपादित करने की कशमकश में मुझे अपनी शायरी पर ध्यान देने का मौका ही नहीं मिला कि मैं अपनी शायरी और अपने शे'री मजमुआ के बारे में सोच सकूँ। लिहाजा सावन का कँवल, और

लम्स का सूरज 1997 में, शोहरत की धूप (हिंदी) 2013 में, रंग-ए –हुनर (उर्दू) 2016 में, स्पर्श की चांदनी काव्य संग्रह (ग़ज़ल नज़्म) 2019 में प्रकाशित होने के बाद काफी समय व्यतीत हो गया। खुशी की बात है कि श्वेतवर्णा प्रकाशन, दिल्ली से मेरे 2-2 ग़ज़ल संग्रह इतराती बलखाती ग़ज़लें और अमृत काल की आधुनिक ग़ज़लें इसी वर्ष प्रकाशित हो रहे हैं और मैं 24 बह्रों में 2024की दिलकश ग़ज़लें का सम्पादन भी कर रहा हूँ।

अमृत काल की आधुनिक ग़ज़लें का विस्तृत विश्लेषण मेरे मित्र और ग़ज़ल के असलूब में महारत रखने वाले श्री विजय स्वर्णकार ने बखूबी किया है। उन्होंने वे जाविये भी तलाश कर लिए जिनसे मैं नावाक़िफ़ था। मेरे मित्र और आज के दौर के मेरे सर्वाधिक लोकप्रिय शायर श्री राजमूर्ति सौरभ ने मेरी शायरी के विविध आयाम पर कृपा दृष्टि डाली है। ईश्वर उन्हें स्वस्थ और दीर्घायु रखें। डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़' ने मेरी शायरी की प्रशंसा करते करते मेरे प्रति जो आदर निवेदित किया है मैं उसका ऋणी हो गया। इस अकिंचन को जो स्नेह और प्रेम साहित्य जगत ने दिया है वह अकल्पनीय है।

अमृत काल की आधुनिक ग़ज़लें में मैंने सनातन धर्मी आस्थाओं और विश्वास से जुड़ी परिकल्पनाओं को साकार करने की कोशिश की है। डिजिटल युग में तकनीक के बढ़ते प्रभाव ने सामाजिक तानेबाने को कितना प्रभावित किया है इसे भी मैंने अपनी शायरी का कलेवर बनाने का प्रयास किया है।कहाँ तक मैं सफल हो सका हूँ यह आपकी प्रतिक्रियाएं मुझे बतायेंगी

बुनियाद पड़ रही है प्राचीन सभ्यता की,
ऐसा हज़ारों बरसों तक में हुआ नहीं है।

स्नेहाकांक्षी
रमेश कँवल

अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें-समीक्षा: डॉ. सीमा विजयवर्गीय

‘अमृत-वर्षा करती हुई ग़ज़लें

भारतीय संस्कृति के अद्भुत संवाहक रमेश ‘कँवल’ साहब का ग़ज़ल-संग्रह-‘अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें’ अपने आप में नायाब ग़ज़ल-संग्रह है। समय बेशक लगा पर जब पढ़ने लगी तो इतना रोचक लगा कि कोई भी शे’र आँखों से ओझल नहीं हो सका और पूरा पढ़कर अत्यंत आत्म सुकून मिला। किसी कृति को पढ़ जाने का मतलब कृतिकार को पढ़ जाना, उसके दृष्टिकोण को पढ़ जाना, उसके व्यक्तित्व को पढ़ जाना साथ ही उसके नज़रिए से समाज को पढ़ जाना। फिर ये भी महसूस करना कि वैचारिक दृष्टि से, भावों की दृष्टि से कितना मिलता है हमसे कृतिकार, फिर कृतिकार की कृति उसके सम्पूर्ण जीवन अनुभवों का निचोड़ होती है। जो हमें उपहार स्वरूप आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं।

इस दृष्टि से इस ग़ज़ल-संग्रह को देखें तो ‘अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें’ में 92 ग़ज़लें, 5 नज़्म और 5 ही राम अभिनन्दित गीत हैं। देखा जाए तो यह ग़ज़ल-संग्रह परम्परा के धरातल पर हिंदी ग़ज़ल की नई लहलहाती फ़स्ल है जिसमें विषय की विविधता, नवीन समसामयिक विषयों की प्रधानता, भाषायी शब्द-विस्तार, नवीन अत्याधुनिक शब्दावली का प्रयोग, शिल्पगत अनुशासन, क्षेत्रीय लहज़े का प्रयोग हुआ है। इन सभी विशेषताओं का मिला-जुला रूप है-’अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें’-ग़ज़ल-संग्रह।

इस तरह भारतीय संस्कृति के प्रति गहन आस्था रखने वाले रमेश ‘कँवल’ साहब की हर ग़ज़ल का अपना एक मे’यार है। जिन्हें उनके कुछ शे’रों के माध्यम से समझा जा सकता है। जैसा कि शायर अपने मन की बात साझा करते हुए कहते हैं-

‘यही तारीख़ से सीखा है हमने
नहीं भूलें कभी अपनी विरासत’

इसी तरह कितनी सुंदर बात इस शे’र के माध्यम से कही है-

‘पाँव बुज़ुर्गों के दाबे
भाग्य हमारे तब जागे’

और प्रेम की इतनी सुंदर परिभाषा तो वही दे सकता है जो सच्चा प्रेमी हो। देखिएगा ये शे’र-

‘जो राजी हों माबूद की ही रज़ा में
बताते हैं वे बंदगी है मुहब्बत’

सृष्टि की सृजन-शक्ति के बारे में इतने सम्मानजनक सुंदर विचार, शायर के व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देते हैं-

‘देश की आधी ताक़त है ये
सोई नहीं बेदार है औरत’

सच तो यही है जिसने दर्द को जितना सहा है, उसकी संवेदनशीलता उतनी ही अधिक होगी। देखिएगा ये शे’र-

‘दर्द की भाषा पढ़ो
भावनाओं में बहो’

एक पिता को अपनी बेटी के विदा होने पर कैसा महसूस होता ये एक पिता ही बेहतर जान पाते हैं। देखिएगा ये शे’र-

‘बेटी को जब ब्याह दिया
रहता है कुछ खोया दिल’

जीवन की असलियत बताता ये शे’र देखिए-

‘भटके तब अहसास हुआ
सीधा-साधा रस्ता दिल’

आज के समय के मानवीय आवश्यकताओं के सत्य की अभिव्यक्ति करता ये शे'र देखिएगा-

सीखिए जल बचाना वर्ना 'कँवल
ढूँढिएगा किधर गया पानी

कोरोनाकाल में ग्रामीण-परिवेश में कैसे बचाव के उपाय अपनाए गए। उसी की सच्चाई बताता देखिए ये शे'र-

'मुँह पे गमछा बाँधने की ठान ली
गाँव ने दो ग़ज़ की दूरी मान ली'

आज जब संस्कृति में तेज़ी से बदलाव आ रहा है तो ग्रामीण परिवेश कैसे दूर रहे-

'अब कहाँ मधुमास अपने गाँव में
खो गया परिहास अपने गाँव में'

परिवेश कैसे बदलता जा रहा है।बची हैं तो बस यादें बाक़ी कुछ नहीं-

याद आती है घर की ढोलक पर
माँ के हाथों की थाप की ख़ुशबू

पर जहाँ दिल सच्चे हों, वहाँ प्रेम में गहराई आज भी देखने को मिलेगी। देखिएगा ये शे'र-

'राधा को जब याद किया मनमोहन ने
दर्द 'कँवल' वंशी की धुन के गहरे हैं'

प्रेम की सच्चाई बयाँ करता ये शे'र भी देखिए-

'आप आए तो सुख के सौ मौसम
मेरे जीवन में गुनगुनाने लगे'

प्राचीन उपमानों के माध्यम से शायर महोदय प्रेम को कितनी शुचिता, कितनी गहराई प्रदान करते हैं देखिएगा ये शे'र-

‘पवनसुत ने सुनाई राम धुन क्या
लगा सीता को उनके राम आए’

साहित्यकार समाज के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उसका मक़सद समाज को तोड़ना नहीं, जोड़ना है। घरोहर को संरक्षित रखने की प्रेरणा देना, शायर के ज़िम्मेदार व्यक्तित्व को दर्शाता है। जैसा कि ये शे’र-

‘बहुत सभ्य सुंदर हैं ‘मानस’ में बातें
इसे साइनाइड बताने से बचिए’

इसी तरह ये शे’र परिपक्व व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति है-

‘सागर मंथन करते रहती है हरदम
अमृतघट जो मिला हँसी, मुस्काई ग़ज़ल’

जीवन की यथार्थता की अभिव्यक्ति करता ये शे’र देखिएगा, जिसमें भावों का कितना सुंदर महल खड़ा दिखाई देता है-

‘शहर में होते हैं मकाँवाले
ख़ुशनसीबों ने सिर्फ़ पाया घर’

भारतीय जीवन-दर्शन की गूढ़ अभिव्यक्ति ‘कँवल’ साहब जैसे व्यक्तित्व वाले ही कर सकते हैं-

कोई राजा हो या भिखारी हो
सबने क़िस्मत से पाई है रोटी

इस सदी का अभूतपूर्व कार्य शायर की क़लम से कैसे छूट सकता है। यथा-

‘राम मंदिर बना
गर्व कुछ कीजिए’

इसीतरह-

‘सदियों के उत्सर्ग का फल
राम मंदिर का सिला है’

एक सच्चा देशभसक्त ही इस तरह के विचार रख सकता है। देखिएगा ये शे'र-

'देश सर्वोपरि
देश हित सोचिए'

ग़ुलामी काल में विदेशियों के हाथ से लिखा इतिहास कितना विश्वस्त हो सकता है। विचारणीय है। इसलिए देशवासियों की भावनाओं की अभिव्यक्ति करता ये शे'र देखिए-

'नष्ट करेंगे नामो-निशाँ ग़ुलामी के सब
'कँवल' सनातन रुचियाँ होंगी स्वाभिमान में'

हमारी संस्कृति के उपासक, हमारी धरती के उपासक, हमारे जीवन को प्रेरणा देने वाले वीरों के इतिहास को, आने वाली पीढ़ी को हस्तान्तरित करने की ज़िम्मेदारी भी हमारी ही है। जागरूक शायर इसी बात को अपने शे'र के माध्यम से कहकर अपनी ज़िम्मेदारी पूर्ण करते हैं। यथा-

अब महान होंगे नहीं ढाए ज़ुल्म जिन्होंने
वीर शिवाजी, राणा होंगे अब महान में

इसी तरह देखिए ये सम-सामयिक शे'र-

योग से निरोग का कमाल देखते रहे
चैनलों पे योगी का धमाल देखते रहे

सदी की सबसे बड़ी घटना की अभिव्यक्ति करता ये शे'र देखिएगा-

'लौट आया है श्रीनगर में 'कँवल'
अम्न और ज़ाफ़रान का वादा'

भारत की वैज्ञानिक प्रगति को दर्शाता ये शे'र-

'वन्दे भारत ट्रेन कँवल
देश में अब चढ़ता इंसान'

इस अमृतकाल में कुछ समस्याएँ तो सुलझी ही हैं। देश प्रगति के पथ पर अग्रसर है। ऐसे में शायर मन का ख़ुश होना लाज़िमी है। यथा-

'हम पे अमृतकाल की मस्ती चढ़ी
हम तरक़्क़ी के हिमालय हो गए'

अपनी धरोहर, अपनी संपदा को बचाने के लिए भानुमति के पिटारे जैसा संविधान में परिवर्तन करना बहुत ज़रूरी है। यथा-

करना है कुछ-कुछ परिवर्तन संविधान में
लहराना है धर्म ध्वजा अब आसमान में

अब पिचहत्तर वर्ष बाद कितना कुछ नया दिखाई देने लगा है देश भी और देशवासी भी। देखिएगा ये शे'र-

'पिचहत्तर बरस हो गए ऐ वतन
नया देश अपना नया आदमी'

आज की नई तकनीक भी शे'रों की अभिव्यक्ति बन गई है मतलब ग़ज़ल जीवन के बहुत क़रीब आ गई है। इसी बात की पुष्टि करता ये शे'र देखिएगा-

'बायोमेट्रिक हाज़िरी से है इज़ाफ़ा काम में
टेक्निक से इक नया भारत बना सकता हूँ मैं'

देश के भविष्य युवा पीढ़ी की बात न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। देखिएगा ये शे'र-

'नहीं कोई डर नौजवानों के रहते
वतन की है हिम्मत, जसारत जवानी'

पर सही दिशा-निर्देश में संचालित हो तब। यथा-

'शराफ़त से पेश आए तो सब है उम्दा
नशे में 'कँवल' सबकी आफ़त जवानी'

आज सारे विश्व को अपनी बातों में घुमाने वाला मोबाइल की बात कैसे छूट सकती है। देखिएगा ये शे'र-

'उज्जैन, अवध, मथुरा, काशी हो कि संगम हो
बजता है 'कँवल' अब तो हर धाम मुबाइल है'

ख़तरे होने के बावजूद मोबाइल की उपस्थिति हर हाथ में बनी रहती है। शायर मन की अभिव्यक्ति देता ये शे'र देखिए-

'रेडिएशन भले ही जाँ ले ले
लत मोबाइल की कब सुधरती है'

इसी तरह-

'डेल्टा पर जिसे गया बाँधा
वो नदी आज भी बिफरती है'

विषय वैविध्यता शायर की ज्ञान वैविध्यता को दर्शाता है। देखिएगा ये शे'र-

'सदियों धरती में था दबा कुचला
हीरा हो कर लुभा गया कोयला'

समय ने तरक़्क़ी भी देखी है पर अवसाद भी बहुत देखे हैं। विश्व युद्ध तरक़्क़ी के नहीं अपितु विनाश के कारक हैं। यथा-

'क्या तरक़्क़ी सदी में हुई
युद्ध दुनिया के बतला गए'

सच्ची बात तो ये है देश के विनाश के कारक देश के वो नेता लोग हैं जो अपना उल्लू सीधा करने लिए देश का भी बुरा करने से नहीं चूकते-

'मुल्क में लीडरान हैं ऐसे
जिनकी आँखों का मर गया पानी'

इसी तरह-

'आज सियासी लोग कहें
होता कहाँ है अच्छा सच'

सच तो यही है जिसे शायर ने कितनी सच्चाई के साथ अभिव्यक्ति दी है-

'हैं 'कँवल' कुछ दुष्ट जिनसे
दुश्मनों को बल मिला है'

धरती को लूटने के बाद अब चाँद की बारी है। यथा-

'लूट के अपनी धरती को
चाँद पे जा पहुँचा इंसान'

आज की शहरी हवाएँ शायर की पैनी नज़र से छिप थोड़े न रह सकती हैं। देखिएगा ये शे'र-

'आज माहौल पर सोचिए कुछ 'कँवल'
शहर ज़हरीली वादी में लाचार है'

आज की हवाओं ने रिश्तों को भी बहुत प्रभावित किया है, जिससे देश के सामाजिक ढाँचे में ही आमूलचूल परिवर्तन होने लगा है। देखिएगा ये शे'र-

'रिश्तों की दुल्हन रूठी
घर भर में कोहराम हुए'

आज की आभासी दुनिया ने समस्याओं को कम नहीं किया बल्कि और अधिक बढ़ा दिया है। यथा-

'आभासी सब महफ़िल थे
एकाकीपन पास रहा'

जब देश का पूरा तंत्र ही बिगड़ा हो तो न्याय व्यवस्था के सुधरने की आशा कैसे की जा सकती है। शायर महोदय कहते हैं-

'न्यायालय के चक्कर में
जीवन भर संत्रास रहा'

हवा पूरी ही प्रदूषित हो तो फिर क्या किया जाए। यथा-

'सड़क पर है प्रदूषण शोरगुल का
मैं कानों से इन्हें कब तक दुलारूँ'

धरती के उपासकों की कमी शायर को कितना कचोटती है। देखिएगा ये शे'र-

'है ये अमृतकाल कैसे दिन फिरे
मुल्क के रहबर विलोपित हो गए'

सम-सामयिक ग़ज़ल की वस्तुस्थिति को बयाँ करता ये शे'र-

'तुकबन्दी की गलियों में हैं भटक रहे
पर दुष्यंत-सी प्यारी कब हो पाई ग़ज़ल'

मुहब्बत को हँसी खेल समझने वालों पर कितनी ख़ूबसूरती से तंज कसा है-

'किसी और का हो गया हूँ
किसी के लिए बेवफ़ा हूँ'

इसी तरह ये शे'र-

'सीख माँ दादी को अब
दे रही हैं बेटियाँ'

प्रकृति का चित्रण भी बड़ी कुशलता के साथ करते हैं 'कँवल' साहब-

'भोर का तारा चलने को तैयार है
हर हथेली पे सूरज का उपहार है'

इसी तरह प्रकृति का सहारा लेकर कितनी सुंदरता के साथ अपनी बात रखते हैं 'कँवल' साहब-

‘ज़िंदगी को सँवारने के लिए
चाक पर लड़खड़ा गई मिट्टी’

इस तरह इस ग़ज़ल-संग्रह को पढ़ते समय समाज की सभी परिस्थितियों को बहुत सूक्ष्मता के साथ अवलोकन करने को मिला। विषय विविधता ऐसी कि कोई पक्ष छूटा ही नहीं, साथ ही आधुनिक 5जी परिवेश को भी बहुत सच्चाई के साथ अभिव्यक्त किया है। जिससे लगता है कि आज का परिवेश ग़ज़ल के बहुत क़रीब आ गया है। अपने परिवेश से व्यक्ति कैसे अछूता रह सकता है। इसीलिए क्षेत्रियता का असर शायर की भाषा पर पड़ना स्वाभाविक है जिसकी झलक भी ग़ज़ल-संग्रह में देखने को मिलती है। भारतीय संस्कृति के प्रति गहरा लगाव ग़ज़ल-संग्रह को और अधिक विश्वसनीय बनाता है। शिल्प की कसावट पर भी शायर का पूरा ध्यान रहा है। हिंदी के साथ उर्दू शब्दावली का प्रयोग शब्द-ज्ञान में वृद्धि करता है। कुल मिलाकर सभी विशेषताओं का सुंदर समुच्चय है यह ग़ज़ल-संग्रह। जो सुपाठ्य है, संग्रह योग्य है। जिसे अवश्य पढ़ना चाहिए। अब विषय को यही विराम देना चाहूँगी रमेश ‘कँवल’ साहब के इस शे’र के साथ-

‘ये इल्तिज़ा है ‘कँवल’ वतन की
रहो जो मिलजुल तो नूर है ये’

डॉ. सीमा विजयवर्गीय

अलवर, राजस्थान

मोबाईल 707 371 3013

ग़ज़ल-संग्रह-‘अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें’

शाइर-रमेश ‘कँवल’

प्रकाशक-श्वेतवर्णा प्रकाशन, नोएडा

संपर्क: +91 844 754 0078

मूल्य-299/-

दृष्टिसम्पन्नता व सकारात्मक सोच की द्योतक ग़ज़लें: भगवती प्रसाद द्विवेदी

बंधुवर 'कँवल' जी,

सादर अभिवादन!

आपकी नवीनतम कृति 'अमृतकाल की आधुनिक ग़ज़लें' की प्रति प्राप्त कर अतीव प्रसन्नता हुई। स्नेह-स्मरण के लिए आभारी हूँ।

कुल बानबे ग़ज़लों, पाँच नज़्मों और पाँच श्रीराम अभिनंदन गीतों से लैस यह अनूठा एकल संग्रह आपकी दृष्टिसम्पन्नता व सकारात्मक सोच का द्योतक है। आपकी भावाभिव्यक्ति गौरवशाली विरासत और आधुनिकता के बीच सेतुबद्धता क़ायम करती है। अत्यंत सहजता से कहे गए कई गम्भीर चिन्तनपरक सवाल अंतर्मंथन को विवश करते हैं। ग़ज़ल की मूलभूत शास्त्रीयता को आत्मसात कर आपने नई पीढ़ी को संस्कारित करने का जो ज़रूरी अभियान छेड़ा है, वह स्वागत-योग्य है। मौजूदा दौर की विसंगतियों-विद्रूपताओं के मद्देनज़र जन-जन में राष्ट्रीयता का भाव भरने और सामाजिक चेतना जगाने की इस पहलकदमी के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ!

भगवती प्रसाद द्विवेदी

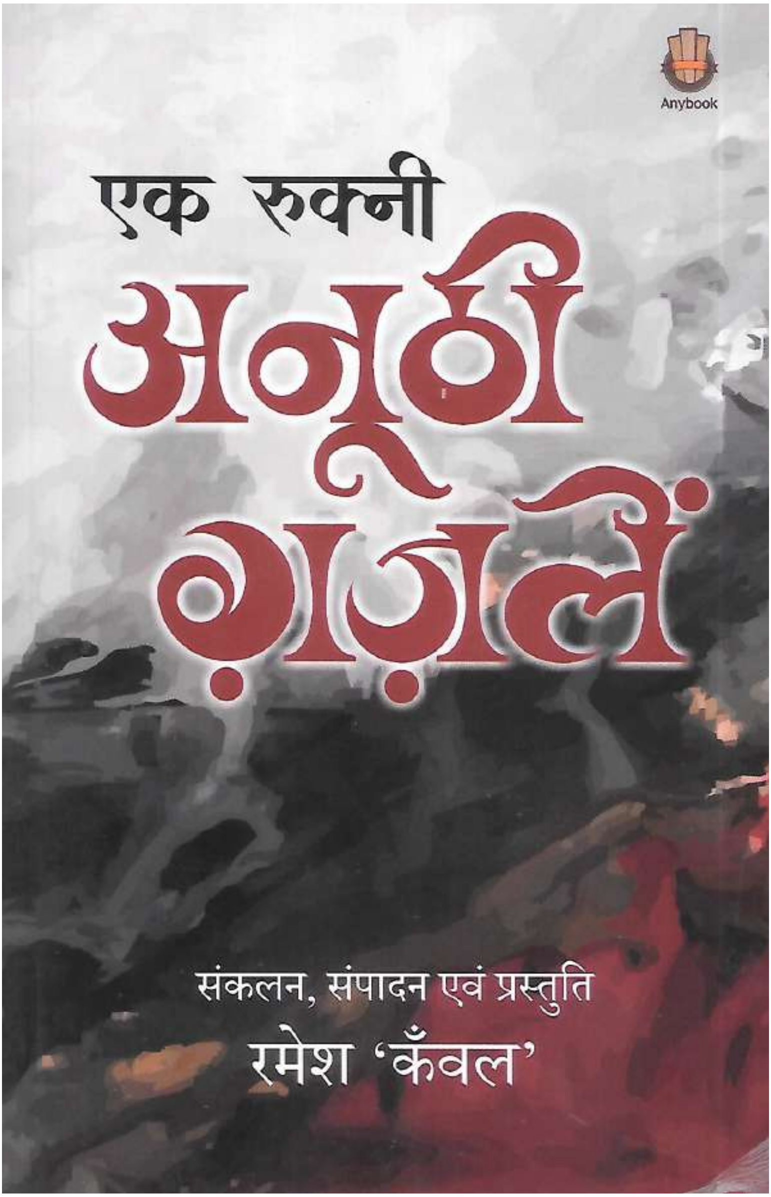
Anybook
एक रुक्नी
अनूठी ग़ज़लें
संकलन, संपादन एवं प्रस्तुति
रमेश 'कँवल'

एक रुक्नी अनूठी ग़ज़लें: डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

बज़्म-ए-हफ़ीज़ बनारसी, पटना के चेयर पर्सन श्री रमेश 'कँवल' एक ऐसी शख़्सियत का नाम है, जिसे दीवानगी की हद तक ग़ज़ल से मह़ब्बत है। ग़ज़ल की सेहत और शोहरत के लिए वे दिलो-जान से व्यस्त रहते हैं और हर समय कुछ न कुछ नया तथा ऐतिहासिक महत्त्व का काम करने की योजना बनाते रहते हैं। ग़ज़ल के प्रति उनकी इसी निष्ठा और लगाव के कारण विगत तीन वर्षों से मैं उनसे जुड़ा हुआ हूँ। दो वर्ष पहले वे 'सन् 2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' लेकर मंज़रे-आम पर आये थे। 342 पृष्ठों के इस संकलन में देश के 124 ग़ज़लकारों की ग़ज़लों को स्थानमिला, जिसे अद़ब की दुनिया में बेहद पसंद किया गया। गत वर्ष उन्होंने एक क़दम और आगे बढ़ाया, जब वे 'इक्कीसवीं सदी के इक्कीसवें साल की बेहतरीन ग़ज़लें' लेकर उपस्थित हुए। 536 पृष्ठों के इस संकलन में ग़ज़ल और उसके अरूज़ पर केंद्रित कुछ ज्ञानवर्धक आलेख और ग़ज़ल की चार सालिम बह्रों पर बेहतरीन गज़लें तो हैं ही, सम्मिलित ग़ज़लकारों के रंगीन छायाचित्र, वैवाहिक तिथि अंकित करते हुए उनके जीवन-साथी के अलग से चित्र, जीवन-साथी को समर्पित एक-दो रूमानी शे'र, यादें' के रूप में विगत दिनों बिछुड़े हुए कुछ साथियों की ग़ज़लें, 'धरोहर' के रूप में कुछ पुराने ग़ज़लकारों की ग़ज़लें और मशहूर फ़िल्मी गानों के मुखड़े भी दिये गये हैं, जो संकलन में समाहित सालिम बह्रों पर केंद्रित हैं। अंत में सभी शाइरों की जन्मतिथि-सूची तथा आभार-प्रदर्शन की सूची अंकित है।

और इस बार अर्थात् सन् 2022 में तो उन्होंने ऐसा करिश्मा किया है, जिसके बारे में कल्पना करना कठिन है। एक ही रुकन पर ग़ज़ल कहने के विषय में हम कभी-कभी सुनते तो रहे हैं, कभी कोई ग़ज़ल पढ़ने में भी आयी होगी,

किन्तु ग़ज़ल के सात मूल रुक्नों पर ग़ज़ल-संकलन निकालना निस्संदेह किसी विस्मय से कम नहीं।

एक रुकनी अनूठी ग़ज़लें शीर्षक से प्रकाशित इस संकलन में रमल (फ़ाइलातुन-SISS), मुतदारिक (फ़ाइलुन-SIS), हजज़ (मुफ़ाईलुन-]ISSS), मुतक़ारिब (फ़ऊलुन-ISS), कामिल (मुतफ़ाइलुन-IISIS), रजज़ (मुस्तफ़इलुन-SSIS) तथा वाफ़िर (मुफ़ाइलतुन-ISIIS) इन सात रुक्नों पर ग़ज़लें कही गयी हैं। संकलन में कुल उन्तीस ग़ज़लकारों ने हिस्सा लिया है, जिनकी लगभग डेढ़ सौ ग़ज़लें इस पुस्तक में संकलित हैं। आधे से अधिक ने सातों रुकनों पर एक-एक ग़ज़ल कही है तो कुछ ने अपनी पसंद के अनुसार एक-दो रुकनों पर ही ग़ज़लें कहकर सहयोग दिया है।

श्री रमेश कँवल ने अपने प्राक्कथन में कहा है कि एक-रुकनी ग़ज़लें कहना आसान नहीं है। एक रुक्न के दो मिसरों (शे'र) में पूरी बात कहना बहुत मुश्किल फ़न है। लगता है, बात आधी-अधूरी रह गयी। कुछ शाइर अपनी बात पूरी करने के लिए दो शे'र का सहारा लेते हैं, जो शे'र के लिहाज से ख़ूबसूरत नहीं कहा जा सकता। श्री कँवल के इन विचारों से असहमत होने का कोई कारण नहीं है। एक शे'र में सबसे ख़ूबसूरत चीज़ उसकी कहन ही तो है। अगर वही प्रभावित हो जाये, तो शे'र अपेक्षित प्रभाव नहीं छोड़ पाता। और यदि एक ही रुक्न में बात कहने की सीमा होती है तो उसमें न तो कथ्य पूरा आ पाता है और न पूरे क्रियापद आ पाते हैं। फलस्वरूप बात भी पूरी तरह संप्रेषित नहीं हो पाती। इन सीमाओं के बावजूद अधिकांश शाइरों ने बेहतरीन कारीगरी दिखाने की कोशिश की है।

ग़ज़ल को फ़िक्र और फ़न की विधा कहा गया है। शे'र का कथ्य ही उसकी फ़िक्र है, उसकी जान है। कहा जाता है कि जितने अशआर उतने ही कथ्य या विषय। चूँकि हर शे'र स्वतंत्र होता है, उनका कोई पूर्वापर संबंध नहीं होता, इस कारण हर शे'र में एक नया विषय / एक नई बात होती है। जैसे जिसके अनुभव, जैसा जिसका चिंतन, जैसे जिसके ख़याल, वैसे ही उसके विषय।

लेकिन उसे अरूज़ की सीमाओं में रहते हुए कलात्मक ढंग से ऐसी अभिव्यक्ति देना कि वह श्रोता या पाठक को सम्मोहित कर दे, यही ग़ज़ल का फ़न है। इस फ़न में वह ख़ासियत होती है, कि एक मामूली सी बात भी इसका संस्पर्श पाकर अविस्मरणीय बन जाती है। आइये, इसी संग्रह के कुछ अशआर देखते हैं-

अस्मा सुब्हानी सीप आँखें /अश्क गौहर
ए.एफ़ नज़र ज़ीस्त क्या है / यात्रा है
ओंकार सिंह विवेक ज़ीस्त क्या है / बुलबुला है

एक मिसरे में फ़ाइलातुन (SISS) अर्थात् कुल सात मात्राओं के इन अशआर को अगर हम देखें तो पायेगे कि अस्मा जी ने अपनी बात आलंकारिक ढंग से कही है। उन्होंने आँखों को सीप माना है। प्रसिद्ध है कि मोती सीप में ही पनपते हैं, अत:आँखों से ढलने वाले आँसू मोती से कम नहीं। बहुत पारंपरिक कहन है, किन्तु असर पैदा करती है। यही शे'र का काम है। दूसरी ओर श्री नज़र और श्री विवेक के अशआर ज़िंदगी से वाबस्ता हैं। एक ने ज़िंदगी को एक यात्रा, एक सफ़र का नाम दिया है, जिसमें अनेक मोड, अनेक आरोह-अवरोह और दु:ख-दर्द आते हैं। हम गिरते हैं, ठोकर खाकर सँभलते हैं, और अपनी मंज़िल की ओर बढ़ते जाते हैं। यह मंज़िल भौतिक भी हो सकती है और आध्यात्मिक भी। जीवन के ये सब रंग उसे एक यात्रा कहने-भर से संकेतित हो जाते हैं। इसके विपरीत श्री विवेक ने ज़िंदगी के एक अलग सत्य का उद्घाटन किया है। वह यह कि ज़िंदगी तो पानी का एक बुलबुला मात्र है। बुलबुले को फूटने में कितनी देर लगती है? फिर उससे मोह क्यों? इस प्रकार हम देखते हैं कि दोनों शाइरों ने ज़िंदगी की सच्चाई बयान की है। एक ने ज़िंदगी के भौतिक सत्य का उद्घाटन किया है तो दूसरे ने उसकी नश्वरता का चित्र प्रस्तुत किया है। दोनों के नज़रिये में भौतिकता भी है और आध्यात्मिकता भी। दृष्टिकोण अपना-अपना है, सच्चाई दोनों में है, किन्तु कहने का सलीक़ा अलग-अलग है। इसी सलीक़े के लिए ग़ज़ल जानी जाती है।

कुछ अन्य अशआर भी अपनी ऐसी ही कहन के कारण हमारा ध्यान

आकर्षित करते हैं, कुछ उद्धरण देखिये-

अरविन्द असर गाँव भी / अब नगर
डॉ. आनन्द किशोर थे कई शरर / जहाँ राख थी
प्रेम रंजन अनिमेष होकर भी सब/ फ़ानी रहे
रवि खण्डेलवाल जियेंगे सनम / ख़ुशी हो कि ग़म

अशआर और भी बहुत-से हैं, किन्तु सबको उद्धृत करना संभव नहीं है। यह भी नहीं कि सारे अशआर एक ही स्तर के हैं या सबके सब ग़ज़लीयत से ओत-प्रोत हैं। कुछ केवल तुकबंदी-जैसे भी लग सकते हैं। कहीं-कहीं क़ाफ़िये और रुकन के निर्वाह में भी कमी दिख सकती है। किन्तु यह सब ढूँढ़ते समय यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि ये एक ही रुक्न में निबद्ध ग़ज़लें हैं। यहाँ किसी बात को बहुत अधिक सांकेतिक ढंग से, प्रतीकों और अलामतों के माध्यम से कहने का अवसर नहीं होता। यह किसी नट द्वारा एक पतली और चिकनी रस्सी पर चलने जैसा दुष्कर कार्य है, जिसे साथने की सभी शाइरों ने पुरज़ोर कोशिश की है। हम आशा करते हैं कि अपनी तरह का यह अनूठा और मौलिक कार्य ग़ज़ल के इतिहास में मील का पत्थर साबित होगा।

बज़्म-ए-हफ़ीज़ बनारसी, पटना के चेयर पर्सन श्री रमेश 'कँवल' और सभी शाइरों को उनके इस प्रयास के लिए हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

युक्का-303, पैरामाउण्ट सिंफनी

क्रॉसिंग रिपब्लिक, ग़ाज़ियाबाद-201016

चलभाष: 9760007838

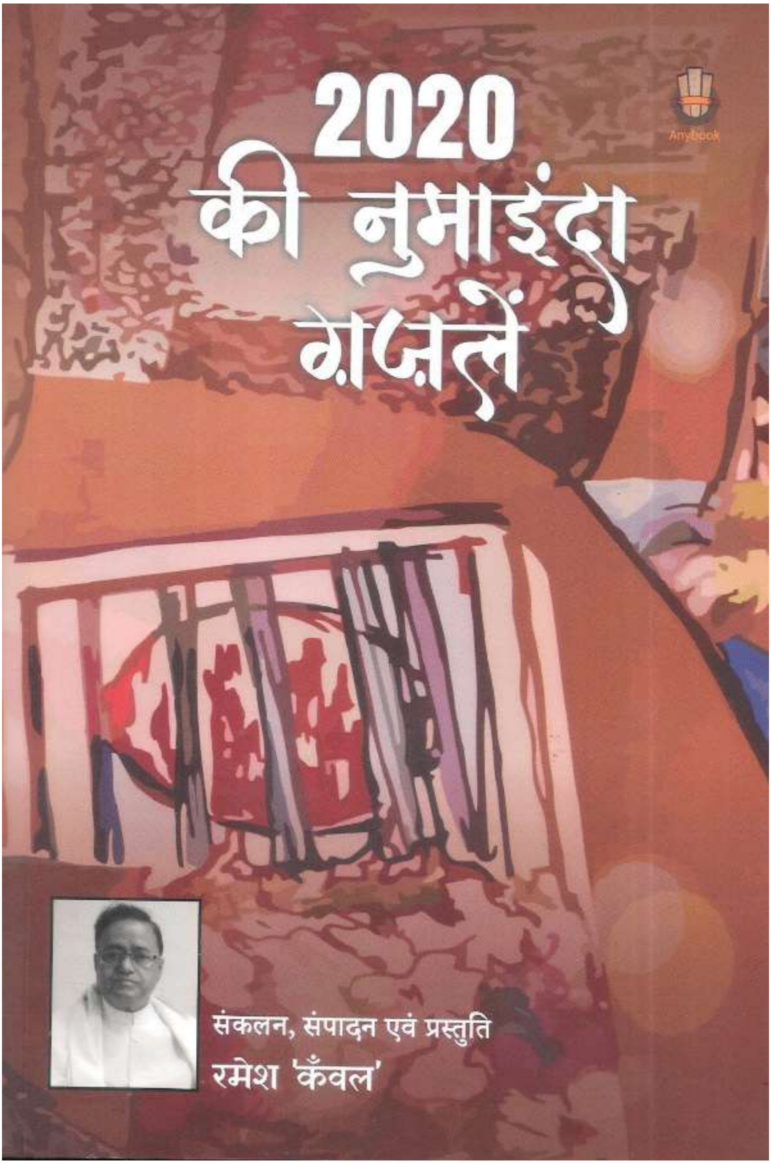
2020
की नुमाइंदा
ग़ज़लें
Anybook
संकलन, संपादन एवं प्रस्तुति
रमेश 'कँवल'

‘2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें’ यानी हमने तो दिल जलाकर सरेआम रख दिया: नीरज गोस्वामी

दोस्तो!

जनाब रमेश कँवल साहब, जो अदब की दुनिया में एक जाना पहचाना नाम है, जो शोहरतों का मोहताज़ नहीं बल्कि अपने काम से रंगे सुख़न है जो पिछले एक तवील अरसे से बज़्मे हफ़ीज़ बनारसी पटना, मरकजे-रंगे-हुनर के सदर हैं जो बिहार प्रशासनिक सेवा में संयुक्त सचिव स्तर के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद मुकम्मल तौर से अदबसाज़ी में मशरूफ़ हैं, ने ‘2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें’ की शक्ल में एक लाजवाब दस्तावेज़ तैयार किया है।

‘2020 की नुमाइंदा गजलें’ रमेश कँवल जी की ही अद्भुत सोच का परिणाम है। रमेश जी जिस काम को करने की ठान लेते हैं उसे पूरा किए बिना चैन नहीं लेते। मेरी ख़ुशक़िस्मती है उन्होंने मुझे इस काम में अपने साथ जोड़ा। ये काम जितना लगता है उतना आसान नहीं था। सारे हिंदुस्तान से शायरों और शायरात से उनका कलाम और परिचय मंगवाना उन्हें एक जगह इकट्ठा करना और फिर तरतीब से छपवाना बहुत मेहनत मांगता है। रमेश जी ने जिस तरह से इस काम को अंजाम दिया है उसके लिए मैं उन्हें और उनकी पूरी टीम को दिली मुबारकबाद पेश करता हूँ।

इस सांझा संकलन में लगभग 119 शायर और शायरात (मोहतरमा) समाहित किये गये है। इतनी बड़ी संख्या में लोगों को इस मिशन से जोड़ना अपने आप में किसी अजूबे से कम नहीं। ख़ुशी की बात है कि सभी ने रमेश जी को अपना पूरा सहयोग दिया।

मैं चाहता था कि मैं इस किताब में संकलित कुछ अपनी पसंद के शे'र यहाँ कोट करूँ और जब मैं शे'र पसंद करने बैठा तो उनकी तादाद इतनी ही ज़्यादा हो गई कि न उन सबको यहाँ देना मुमकिन था न उनमें से एक भी शे'र कम करना। लिहाज़ा मुझे इस विचार को ख़ारिज कर देना पड़ा। मैं ये काम अब पाठकों को सौंप देता हूँ।

शायरी चार प्रकार की तस्लीम की गई है दाख़िली, ख़ारिजी, इश्क़ मज़ाज़ी और इश्क़ ए हक़ीक़ी। जब मैं इन ग़ज़लों को पढ़ रहा था तो मुझे शायरी के ये तमाम रंग दिखाई दिए। ग़ज़लों में फ़साहत, लताफ़त और हुस्न के बहुत रंग मिले।तमाम असनाफ़ में शायरी एक ऐसी सिन्फ़ है जिसमें ज़िन्दगी की वुसअतों को पिरोया और संजोया जा सकता है।

जितने भी शायरों और शाइरात ने इस मुश्तरका ग़ज़ल संग्रह में अपना अपना क़लाम दर्ज़ करवाया है वो एक से बढ़कर एक हैं। मैं यहाँ पर किसी भी शायर या शाइरा को किसी ख़ास मुक़ाम से नहीं नवाज़ सकता क्योंकि हर शख़्स अपने आप में बेमिसाल है, अलग और कमाल है। कोई भी शख़्स छोटा या बड़ा नहीं होता उसका शाहकार बड़ा होता है।

तमाम सीनियर शोहरा हज़रात की ग़ज़लों के बहुत से मुख्तलिफ़ रंग हैं लेकिन जो नए कहने वाले हैं उनमें भी बहुत से लोगों ने बहुत अच्छा कलाम पेश किया है। आख़िर में मैं यही कहूँगा कि बड़े से बड़ा शायर भी फ़िक्री तौर पर कुछ नया नहीं कह सकता क्योंकि ख़ुदा की इस कायनात में तमाम ख़यालात पहले से ही मौजूद हैं।शायर सिर्फ़ और सिर्फ़ उन्हीं ख़्यालात को अपने अलग ढंग से पेश करता है और इसी में उसका हुनर होता है।

ये ख़ूबसूरत किताब अब आपके सामने हैं। बकौल क़तील शिफ़ाई

'हमने तो दिल जलाकर सरेआम रख दिया'

मैं अपनी बात 'टोनी मॉरीसन' के इन शब्दों से समाप्त करना चाहूँगा: वो कहती हैं 'जीविका के लिए लिखना और जीवन के लिए लिखना इन दोनों बातों में अंतर है। यदि आप जीविका के लिए लिखते हैं तो आपको समझौते

करने पड़ते हैं, यदि आप जीवन के लिए लिखते हैं तो आपको कठोर परिश्रम करना पड़ता है।'

मैं एक बार फिर इस किताब में आए तमाम शोअरा को सलाम करते हुए रमेश जी को ढेरों मुबारकबाद देते हुए इस किताब की कामयाबी की दुआ करता हूँ।

श्री बलभद्र जयंती **नीरज गोस्वामी**
24 अगस्त, 2020

‘2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें’: डॉ. ब्रह्मजीत गौतम

आरम्भ में ग़ज़ल ‘तश्बीब’ के नाम से जानी जाती थी, लेकिन बाद में इस विधा में ‘मुल्काआमीन कमाल’ ने गेयता एवं संगीत का पुट देकर इसे ग़ज़ल नाम दिया। पहले यह विधा हुस्नो इश्क़ के समन्वय के धरातल पर प्रसिद्ध हुई, जो सांसारिक रही, फिर हुस्नो इश्क़ की सौन्दर्य-गाथाएँ लौकिकता से अलौकिकता की तरफ़ मुड़ गयीं। फ़ारसी की ग़ज़ल-गायकी नग़मे के रूप में ईरान में परवान चढ़ी, बाद में ख़य्याम, शेख़सादी, हाफ़िज़ शीराज़ी जैसे ग़ज़लकारों की गायकी-शैली अस्तित्व में आयी। संगीत के कलाकारों ने भी ग़ज़ल को गेयता की लहरियों में सराबोर कर दिया। उर्दू एवं हिन्दी की गंगा-जमुनी सभ्यता की अद्यतन उपलब्धि ख़ूबसूरत ग़ज़ल बन गयी। जिसने भी उसे पढ़ा-लिखा, उसका दीवाना हो गया और ग़ज़ल गौरवान्वित हुई। आज काव्य की समस्त विधाओं में ग़ज़ल सर्वाधिक लोकप्रिय विधा का स्थान प्राप्त कर चुकी है। यही कारण है कि आजकल छंदधर्मी अधिकांश पत्रिकाएँ अपनी काव्य सामग्री में लगभग आधे पृष्ठ ग़ज़ल को देती हैं। इतना ही नहीं, छंद से दूरी बनाकर चलने वाली पत्रिकाएँ भी ग़ज़ल को प्रकाशित करने से परहेज़ नहीं करतीं। लगभग सभी पत्रिकाएँ एक-दो साल के अंतराल से ग़ज़ल-विशेषांक भी अवश्य प्रकाशित करती हैं। इतना ही नहीं, प्रतिवर्ष व्यक्तिगत और सहयोगात्मक स्तर पर अनेक ग़ज़ल-संकलन भी प्रकाशित हो रहे हैं। ये ग़ज़ल की लोकप्रियता के प्रमाण हैं। ये ग़ज़लें कैसी होती हैं, यह अलग बात है!

बज़्मे हफ़ीज़ बनारसी, पटना के तहत श्री रमेश कँवल के संपादकत्व में प्रकाशित ग़ज़ल-संकलन ‘2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें’ इसी श्रृंखला की अगली कड़ी है। जैसा कि शीर्षक से ध्वनित है, इस संकलन में वे ही गज़लें सम्मिलित

हैं, जो इसी वर्ष लिखी गयी हैं तथा जो अब तक कहीं अन्यत्र प्रकाशित नहीं हुई हैं। ऐसे लगभग एक सौ बीस ग़ज़लकारों को इस संकलन में शामिल किया गया है। यह संकलन इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि आज हिन्दी में लिखी जा रही ग़ज़लें न केवल कथ्य के स्तर पर, अपितु शिल्प की दृष्टि से भी पर्याप्त समृद्ध हैं। फ़िक्र और फ़न दोनों की चिंता इन ग़ज़लों में दृष्टिगोचर होती है। श्री अकील रोमानी की ग़ज़ल का एक मत्ला देखिये जिसमें इस दुनिया के चिरंतन सत्य को बहुत ही आलंकारिक ढंग से, फिर भी बड़ी नफ़ासत और सादगी के साथ अभिव्यक्त किया गया है –

बाक़ी है बू गुलों के बिखरने के बाद भी
ज़िंदा बहुत से लोग हैं मरने के बाद भी

ऐसा ही एक शे'र श्री अनिरुद्ध सिन्हा का द्रष्टव्य है, जो चापलूसी और ठकुरसुहाती के इस दौर में सत्य और झूठ के अंतर को समझने की प्रेरणा देता है, यह बात अलग है कि मनुष्य में अगर इतना साहस आ जाये तो दुनिया की सूरत ही बदल जायेगी –

झूठ और सच में फ़र्क़ कर पायें
कम से कम इतना हौसला तो रहे

सब जानते हैं कि ग़ज़ल का हर शे'र पूर्वापर संबंध से रहित होता है। हर शे'र में एक स्वतंत्र खयाल होता है। अत: कथ्य की दृष्टि से ग़ज़ल का क्षेत्र इतना व्यापक है कि दुनिया-जहान का कोई विषय ऐसा नहीं, जो उसके दाइरे से बाहर हो। इस संग्रह की गज़लों में भी यह विविधता देखी जा सकती है। जितने अश्आर, उतने खयाल। ज़िदगी और उसके बाहर के सारे मुद्दे आज की ग़ज़ल में शामिल हैं। ऐसे में हर शे'र उद्धरणीय प्रतीत होता है। श्री रमेश कँवल का संवेदना के घनत्व से पूरित एक मत्ला देखिए, जिसमें बेटी और बेटे के बीच आज के समाज के नज़रिए को रेखांकित किया गया है-

बेटी पर सख्ती, बेटे को मस्ती के अधिकार मिले
नगर-नगर, कस्बों, गाँवों को सीख में ये उपहार मिले

चर्चित ग़ज़लकार अशोक रावत का कहना है कि ‘ग़ज़ल कभी भी ‘कंटेंट’ के लिए याद नहीं की गयी। ग़ज़ल की ताक़त उसके कहन का अंदाज़ है। वरना नई कविता के कथ्य में क्या नहीं, मगर कोई उसे फूटी आँख से भी नहीं देखता’ (नई ग़ज़ल-अक्टू.-दिस. 07, पृ. 59)। श्री रावत के कथन से असहमत होने का कोई कारण नहीं है। यह कहने का सलीक़ा ही है, जो एक मामूली सी बात को भी असरदार बना देता है। इस दृष्टि से इस संकलन में कितने ही अश्आर ऐसे हैं, जो अपने प्रतीकात्मक और सांकेतिक अंदाज़े बयाँ के लिए उद्धृत किये जा सकते हैं। समाज से लेकर अध्यात्म तक के अनेक बिम्ब इनमें उभरकर आते हैं। कुछ अश्आर देखिये –

सज़ा मुझको ही मिलनी थी हमेशा
मेरे चेहरे पे जो चेहरा नहीं था

हस्तीमल हस्ती

दफ़्तर से तो छुट्टी मिल ही जाती है
महिलाओं के चौके में इतवार नहीं

अशोक मिज़ाज बद्र

कभी बिगड़ता कभी सँवरता रहता हूँ
कभी नहीं पूरा बन पाया कौन हूँ मैं

लोकेशकुमार सिंह ‘साहिल’

सय्याद कर रहे हैं चमनवालों से सवाल
शाखों से उड़ के सारे कबूतर कहाँ गये

नवीन सी. चतुर्वेदी

घबरा के उसने कर लिया अपना भी मोल तोल
जब भूखे बच्चे उससे रुलाए नहीं गए

ज़मीर दरवेश

बदन चीरता आदमी तो ज़मीं का
वो तब भी बताती कि हीरा यहाँ है

जया गोस्वामी

वजूद ग़म ने मेरा ऐसा बचाकर रक्खा
कि जैसे अम्न को हथियार सलामत रक्खे

के.पी. अनमोल

ग़ज़लों के इन इंद्रधनुषी रंगों के अतिरिक्त इस संकलन की कुछ अन्य विशेषताएँ भी हैं। एक तो यह कि संपादक जी द्वारा शाइरों से माँ, पिता और गुरु पर एक-एक मत्ला और एक-एक शे'र देने की माँग की गयी थी। यह हर्ष की बात है कि अधिकांश शाइरों ने इस फ़र्ज़ को बहुत उत्साह से निभाया। 'माँ' के प्रति तो उनके प्रेम और श्रद्धा की अभिव्यक्ति देखते ही बनती है। कुछ ने तो पूरी ग़ज़लें ही भेज दी हैं। माँ का व्यक्तित्व ही ऐसा है। उसमें माँ तो है ही, पिता और गुरु का किरदार भी समाया हुआ है। प्रारंभ से ही वह अपने बच्चों के लिए इन तीनों की भूमिका निभाती रही है। किन्तु वे ही बच्चे बड़े होकर क्या करते हैं, चाहकर भी अपने ये दोहे उद्धृत करने का लोभ संवरण नहीं पा रहा हूँ –

चिड़िया रचती घोंसला, चुनकर तिनके-घास।
पंख उगे, बच्चे उड़े, चिड़िया हुई उदास॥
बूढ़ी माँ से भी अधिक, है डॉलर से प्यार।
पुत्र तभी तो उड़ चला, सात समुन्दर पार॥

माँ, पिता और गुरु के अतिरिक्त एक-एक नुमाइंदा शे'र अपना स्वयं का, एक अपने पसंदीदा किसी अन्य शाइर का तथा एक शे'र किसी शाइरा का भी माँगा गया था। ऐसे शे'र भी पर्याप्त संख्या में प्राप्त हुए, जो इस संकलन में समाविष्ट हैं।

2020 का यह वर्ष इतिहास के पन्नों में कोरोना महामारी के नाम अंकित होगा, जिसने समाज को झकझोर कर रख दिया है। उम्मीद थी कि हर शाइर 2020 की पाँच नुमाइंदा ग़ज़लों में कम से कम एक ग़ज़ल नहीं तो एक शे'र में तो इस पीड़ा का इज़हार करेगा ही। कुछ ने किया भी है। इस संवेदनशीलता के लिए वे सभी धन्यवाद और बधाई के पात्र हैं। अस्तु, यह कहना कोई रस्म-अदायगी नहीं है कि यह संकलन अपने आप में एक उल्लेखनीय दस्तावेज़

है, जो आगे चलकर एक परंपरा का रूप ले सकता है। इस उत्तम साहित्यिक आयोजन के लिए बज़्मे हफ़ीज़, पटना, चेयर पर्सन और संपादक श्री रमेश कँवल तथा उनकी पूरी टीम, एवं सभी रचनाकारों को उनके अमूल्य रचनात्मक सहयोग के लिए आत्मिक धन्यवाद और आभार!

डॉ. ब्रह्मजीत गौतम
युक्का-206, पैरामाउण्ट सिंफनी
क्रॉसिंग रिपब्लिक, ग़ाज़ियाबाद – 201016
चलभाष: 9760007838, 9425102154

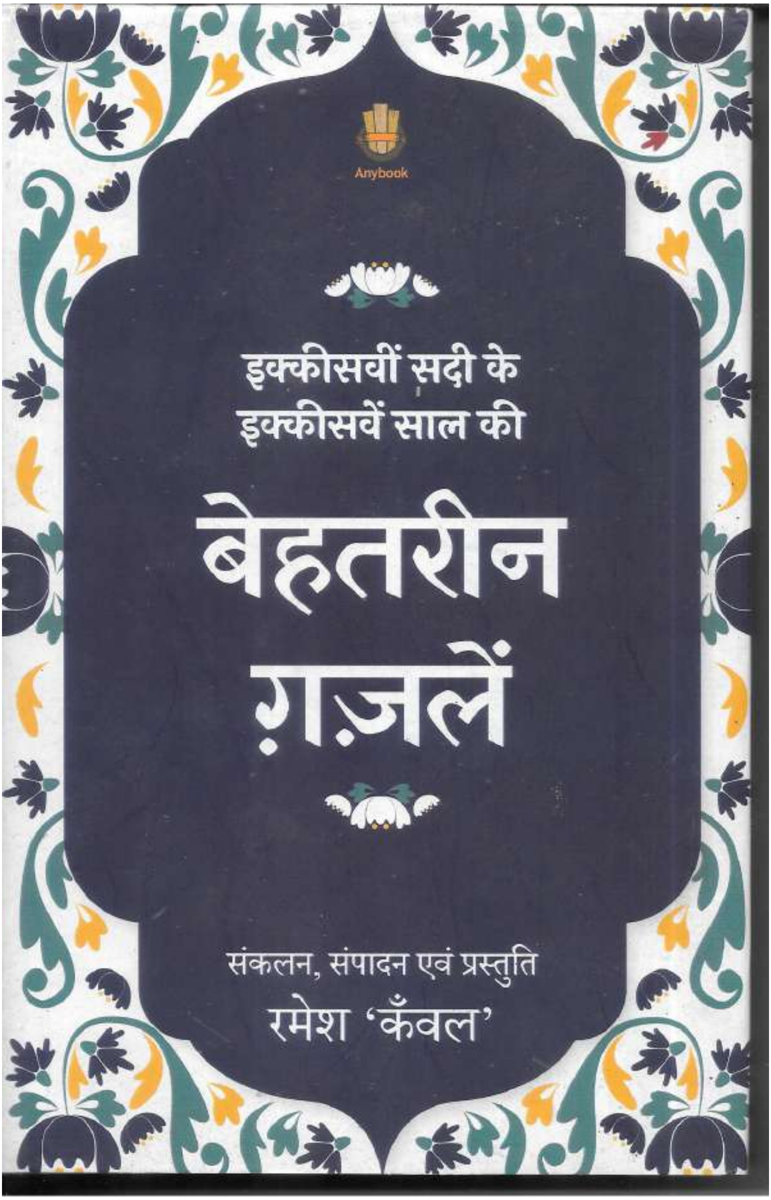
Anybook
इक्कीसवीं सदी के
इक्कीसवें साल की
बेहतरीन
ग़ज़लें
संकलन, संपादन एवं प्रस्तुति
रमेश 'कँवल'

21वीं सदी के 21वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें मनोयोग से परिपूर्ण ग़ज़लों का संकलन: डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'

अभी पिछले वर्ष की ही तो बात है, आदरणीय रमेश कँवल जी द्वारा संकलित व संपादित ग़ज़ल-संकलन '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' प्रकाशित हुआ। 342 पृष्ठीय इस पुस्तक में सम्मिलित 124 रचनाकारों की ग़ज़लें सम्मिलित हैं। यह संग्रह जब मुझे प्राप्त हुआ तो मैं यह देखकर हैरान रह गया कि कँवल जी ने उसे बड़े मनोयोग से सजाया-सँवारा है। प्रत्येक रचनाकार का सचित्र परिचय और पाँच-पाँच ग़ज़लें उसमें सम्मिलित की गई थीं। मेरी दृष्टि में यह पहली पुस्तक थी, जिसमें किसी संपादक द्वारा रचनाकारों का प्रदेशवार, निवास-स्थानवार, जन्मतिथिवार और शैक्षिक योग्यतावार शीर्षक देते हुए अलग से विवरण दिया गया था। यानी किसी शोधार्थी को रचनाकारों का विवरण जानने के लिए पूरी पुस्तक उलटने-पलटने की आवश्यकता नहीं है। संपादक के रूप में कँवल जी का यह परिश्रम अनुकरणीय है।

कँवल जी '2021 की ग़ज़लें' नाम से एक व्हाट्सऐप ग्रुप भी चलाते हैं, जिसमें 228 सदस्य हैं। ग़ज़ल में उनकी विशेष रुचि है और इस विधा के लिए वह कुछ न कुछ करते ही रहते हैं। '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' के बाद वह '21वीं सदी के 21वें साल की बेहतरीन ग़ज़लें' नाम से फिर पुस्तक प्रकाशित करा रहे हैं। लेकिन यह पुस्तक पहली से अधिक विशिष्ट है। इसमें उन्होंने चार सालिम बह्रों-मुतदारिक मुसम्मन, मुतक़ारिब मुसम्मन, कामिल मुसम्मन, हज़ज मुसम्मन पर ही ग़ज़लें आमंत्रित की हैं। इन्हीं चार बह्रों पर मिसरा-ए-तरह दिए गए हैं, जो इस प्रकार हैं-

1. फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन
   आपकी आँख में क्यों नमी आ गई
   रोज़ उभरते रहे रोज़ ढलते रहे
2. फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन
   नज़र और कुछ दे रही है गवाही
3. मफ़ाईलुन, मफ़ाईलुन, मफ़ाईलुन, मफ़ाईलुन
   बस इतनी बात का यारों ने अफ़साना बना डाला
4. मु-त-फ़ाइलुन, मु-त-फ़ाइलुन, मु-त-फ़ाइलुन, मु-त-फ़ाइलुन
   अभी दो क़दम भी चला न था, मेरे साथ-साथ कि थक गया
   अभी कल की बात है सब मगर तुम्हें याद हो कि न याद हो

उक्त चारों मिसरों पर कही गई ग़ज़लें इस पुस्तक में शामिल हैं। चूँकि कुछ रचनाकार तरही ग़ज़लें कहने से परहेज़ करते हैं, इसलिए उक्त बह्रों में ग़ैर-तरही ग़ज़लें भी आमंत्रित की गई थीं, जो इसमें सम्मिलित हैं।

इसके अलावा कँवल जी ने अपने उस्तादे-मुहतरम क़िब्ला हफ़ीज़ बनारसी साहब की याद में गठित संस्था 'बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना' के बैनर तले 16 जून 2021 को ज़ूम पर एक ऑन लाइन मुशायरे का भी आयोजन किया। हफ़ीज़ बनारसी साहब की 13वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में आयोजित इस कार्यक्रम में 23 रचनाकारों द्वारा ग़ज़लें पढ़ी गईं। इन ग़ज़लों में से भी कुछ ग़ज़लें इस पुस्तक में सम्मिलित हैं। पुस्तक के आरंभ में उक्त बह्रों से संबंधित आलेख भी दिए गए हैं। इसी के साथ गतवर्ष प्रकाशित पुस्तक '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' पर रचनाकारों द्वारा की गई समीक्षाएँ और टिप्पणियाँ भी इस पुस्तक का हिस्सा बनी हैं।

कँवल जी ईश्वरीय व्यवस्था में विश्वास करने वाले व्यक्ति हैं। धार्मिक पूर्वजों का हृदय से सम्मान करते हैं। उनकी भारतीय संस्कृति में अटूट आस्था है। यही

सबब है कि पुस्तक के आरंभ में उन्होंने गायत्री मंत्र और अंत में महामृज्युंजय मंत्र अर्थ सहित दिया है।

इधर मैंने यह महसूस किया है कि ग़ज़लों, गीतों, दोहों पर बहुत-से संपादित और आलोचनात्मक ग्रंथ आ रहे हैं। उन्हें देखकर तो प्रसन्नता होती है, लेकिन पढ़कर निराशा हाथ लगती है। कारण यह है कि कतिपय संपादकगण और आलोचक संबंधित विधा के शिल्प-विधान से परिचित नहीं हैं। ऐसी स्थिति में क्या तो संपादन होगा और क्या स्वस्थ आलोचना होगी।

मेरा मानना है कि संपादक को निरंकुश होना चाहिए। वह मात्र संकलनकर्ता बनकर न रह जाए। और, यह कार्य वही कर सकता है, जो उस विधा का जानकार हो। कँवल जी ने वही किया है। उन्होंने सबसे ग़ज़लें तो आमंत्रित की हैं, लेकिन प्रत्येक ग़ज़ल का उन्होंने बारीकी से निरीक्षण भी किया है। कतिपय रचनाकारों की ग़ज़लों में दृष्टिगत हो रही शिल्पविषयक त्रुटियों का निराकरण भी किया है। मैंने यह महसूस किया है कि वह जिस भी कार्य का बीड़ा उठाते हैं, उसे पूरे मनोयोग से करते हैं।

मैंने कभी एक मक़्ता कहा था-

''सबको साथ में लेकर चलना कितना मुश्किल है ऐ 'नाज़'
एक क़दम आगे रखता हूँ, इक पीछे रह जाता है''

वास्तव में सबको साथ लेकर चलना बड़ा मुश्किल काम है। सबकी अपनी ईगो है। सोशल मीडिया पर कोई समूह निर्बाध रूप से निरंतर चला पाना आसान नहीं है, क्योंकि वहाँ अलग-अलग मनःस्थितियों के लोग होते हैं, सभी में सामंजस्य बैठा पाना बड़ा कठिन है। लेकिन, कँवल जी अपने ग्रुप '2021 की ग़ज़लें' को सफलता के साथ चला रहे हैं।

पुस्तकें किसी भी रचनाकार को सिर्फ़ प्रसिद्ध ही नहीं करतीं, बल्कि उसे यशस्वी भी बनाती हैं। और, यश जीवन के साथ भी रहता है और जीवन के बाद भी। इस पुस्तक के प्रकाशन के शुभ अवसर पर मैं आदरणीय रमेश कँवल जी

को बधाई देता हूँ और माँ सरस्वती से प्रार्थना करता हूँ कि वे इनकी साहित्यिक यात्रा की निरंतरता इसी उत्साह के साथ बनाए रखें।

हार्दिक शुभकामनाएँ।

दिनांक: 19.6.2021

डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'
9/3, लक्ष्मीविहार, हिमगिरि कालोनी
काँठ रोड, मुरादाबाद-244001
मो. 99273-76877; 98083-15744
Email: kknaaz1@gmail.com

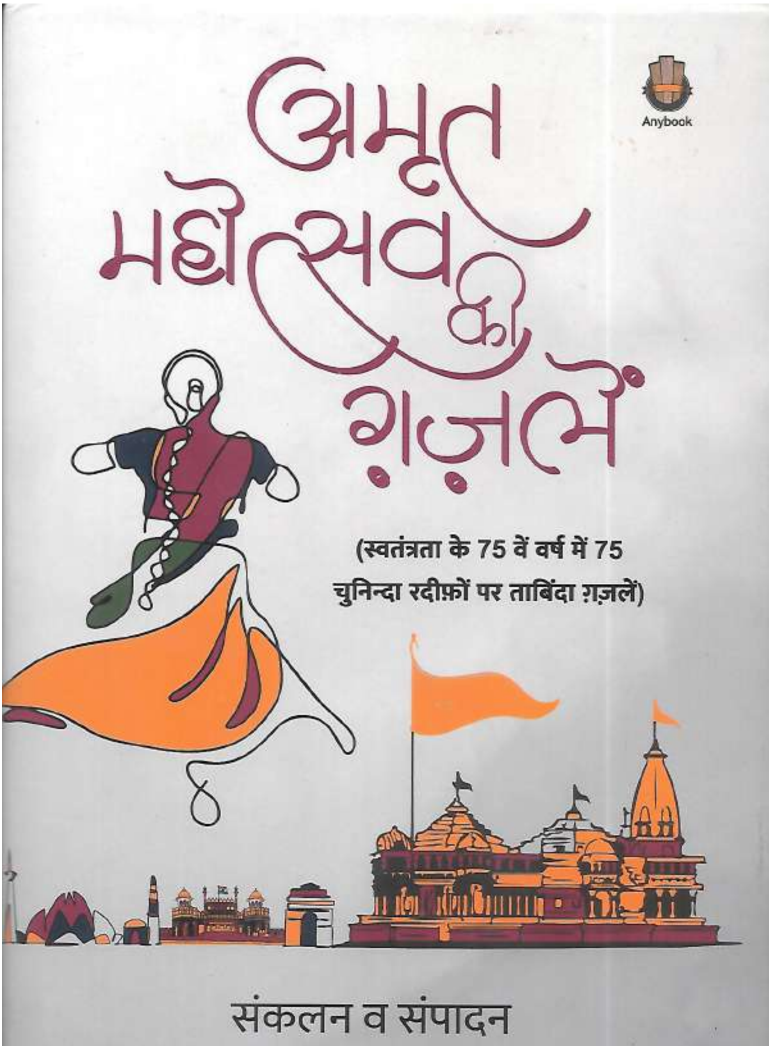
Anybook
अमृत महोत्सव की ग़ज़लें
(स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष में 75
चुनिन्दा रदीफ़ों पर ताबिंदा ग़ज़लें)
संकलन व संपादन
रमेश 'कँवल'

कुछ नया कर दिखाने का सफल प्रयास: डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियाँ हमें हर क्षण अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने की प्रेरणा देती हैं-

जिसको न निज गौरव तथा निज देश पर अभिमान है
वह नर नहीं, नर पशु निरा है और मृतक समान है

वास्तव में जो लोग अपने गौरवशाली अतीत को भूल जाते हैं, वे अपना सुसंस्कृत वर्तमान भी गँवा बैठते हैं। भारत देवताओं की भूमि है। हमारा गौरवशाली इतिहास रहा है। सनातन संस्कृति संरक्षण के बाद ही उपभोग की प्रेरणा देती है।

इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि आज़ादी के बाद भी भारत में जयचंद बड़ी संख्या में मौजूद हैं, जो देश को चूहों की तरह कुतर रहे हैं, कभी किसी पंथ के नाम पर, तो कभी किसी राजनीतिक दल के नाम पर। देश को इसकी क़ीमत भी चुकानी पड़ रही है। वामपंथियों द्वारा लिखे गए इतिहास ने भारतीय संस्कृति को बहुत हानि पहुँचाई। सनातन धर्म व संस्कृति पर सीधे प्रहार किए। यही नहीं, सनातन धर्म के महापुरुषों और धार्मिक पुस्तकों व उनके लेखकों पर उल्टे-सीधे आरोप लगाकर दुष्प्रचारित भी किया गया। वोट की राजनीति में राजनीतिज्ञ भी पीछे नहीं रहे। स्वयं को अन्य धर्मावलंबियों के समक्ष महान दर्शाने की चाह ने उन्हें हिंदू धर्म और उसके पवित्र प्रतीकों पर विभिन्न प्रकार के हमले करने के लिए बाध्य कर दिया। इन लोगों ने हिंदू धर्म और उसके पवित्र स्थलों को गाली की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया।

कहा जाता है कि समय सदा एक जैसा नहीं रहता। समय ने करवट बदली और राष्ट्रनायक तथा सनातन संस्कृति के मार्गदर्शक के रूप में नरेंद्र मोदी जी, अमित शाह जी और योगी आदित्यनाथ जी प्रस्तुत हुए, जिन्हें भारतीय जनता

ने सहर्ष देश का नेतृत्व सौंपा। इन्होंने भी अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए भारत के जनमानस में अपना सम्मानित स्थान बनाया।

आँखों में अगर मोतियाबिंद हो जाए तो ख़ूबसूरत मंज़र भी धुँधले दिखाई देने लगते हैं। यही कारण है कि विभिन्न राजनीतिक दलों और कलुषित विचारधाराओं से जुड़े कुछ अकुलाये लोग कहते हैं कि मोदी जी ने अपने कहे अनुसार पंद्रह लाख रुपये उनके ख़ाते में नहीं भिजवाए। मैं तो कहना चाहता हूँ कि जिस दिन कश्मीर से धारा-370 समाप्त हुई, उसी दिन प्रत्येक भारतप्रेमी को अक्षय धन की प्राप्ति हो गई। अयोध्या में रामजन्मभूमि पर मंदिर का निर्माण प्रत्येक भारतवासी के लिए गौरव की बात है। काशी विश्वनाथ मंदिर और उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर का परिसर निर्माण देश के सांस्कृतिक गौरव की पहचान बना। ऐसे बहुत-से कार्य हमारे वर्तमान राष्ट्रनायकों ने कराये, जिनसे भारत गौरवान्वित हुआ। परिणामस्वरूप आज विश्व में भारत को सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा है। विश्व की बड़ी-बड़ी समस्याओं के समाधान हेतु मध्यस्थता के लिए भारत से अपेक्षा की जाती है। पूरा विश्व भारत की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहा है। यदि इसी प्रकार सब कुछ चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब भारत अपनी खोई हुई विश्वगुरु की उपाधि निकट भविष्य में ही फिर से प्राप्त कर सकेगा।

आज हम आज़ादी के 75वें वर्ष को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे हैं। हमेशा सकारात्मक सोच रखने वाले रमेश कँवल जी फिर से अपने नवीन विचार के साथ 'अमृत महोत्सव की ग़ज़लें' शीर्षक पुस्तक लेकर सहित्यिक समाज के समक्ष उपस्थित हो रहे हैं। इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें ज़िंदगी से जुड़ी 75 चुनिंदा रदीफ़ों पर कही गई ग़ज़लें और नज़्में शामिल हैं। यह पुस्तक स्वतंत्र भारत का जयघोष करने वाले प्रथम प्रधानमंत्री नेताजी सुभाषचंद्र बोस को समर्पित है। पुस्तक में लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल की गुज़रात के साधूबेट नामक स्थान पर स्थित 182 मीटर ऊँची मूर्ति का रंगीन चित्र दिया गया है। विश्व की सबसे ऊँची इस प्रतिमा को 'स्टेच्यु ऑफ़ यूनिटी' नाम दिया

गया है। इस प्रतिमा का शिलान्यास सरदार पटेल की जन्मतिथि 31 अक्टूबर 2013 को गुज़रात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया था। यह 25 अक्टूबर 2018 को बनकर तैयार हुई। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने 31 अक्टूबर 2018 को इस प्रतिमा का उद्घाटन कर इसे राष्ट्र को समर्पित किया। इसके अलावा अयोध्या के राममंदिर, श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर, उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर, अमृतसर के स्वर्णमंदिर, कर्णाटक के होयसला मंदिर व गुरुदेश्वर शिवमंदिर, तमिलनाडु में स्थित मंदिर, नया संसद भवन, वंदे भारत ट्रेन आदि के रंगीन चित्र दिये गए हैं। ये सभी चित्र इसलिए दिए गए हैं कि लोग नये शक्तिशाली भारत की गरिमा को जान सकें। पुस्तक में सम्मिलित सभी रचनाकारों के चित्र भी रंगीन ही दिए गए हैं।

पुस्तक में श्री देवमणि पांडेय का आलेख 'औरों की ज़मीन पर ग़ज़लों की खेती' बहुत सारगर्भित है। चूँकि रमेश कँवल जी का जन्म वर्ष 1953 में हुआ, इसलिए संकलन में 53 रचनाकारों की 431 ग़ज़लों व नज़्मों को सम्मिलित किया गया है।

हर बार नई दृष्टि के साथ किसी न किसी रूप में साहित्य की सेवा करने वाले आदरणीय रमेश कँवल जी को हार्दिक बधाई और अनंत शुभकामनाएँ।

कृष्णकुमार 'नाज़'
9/3, लक्ष्मीविहार, हिमगिरि कालोनी
काँठ रोड, मुरादाबाद-244001
मोबाइल: 99273-76877
email: kknaaz1@gmail.com

अमृत महोत्सव का ऐतिहासिक दस्तावेज़:
डॉ. कृष्ण कुमार 'बेदिल'

जब कोई साहित्यकार विचारों और सोच की ऊंचाइयों पर पँहुच जाता है तब सर्जक और सृजन दोनो एक हो जाते हैं और उनका अंतर कर पाना कठिन हो जाता है। जब सभी साहित्यकार एक ही धरातल पर खड़े हों तो कुछ अलग करने की भावना रखने वाले व्यक्ति को, महानता और विशिष्टता की पहचान दिला कर उसे अलग पंक्ति में खड़ा कर देती है और उसकी कृति कालजयी हो जाती है।ऐसे ही एक साहित्यकार हैं श्री रमेश कँवल। जिन्होंने आज़ादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर 75 भिन्न भिन्न चुनिन्दा रदीफ़ों पर कही हुई ग़ज़लों की मनोहारी झांकी को भव्यता के साथ पुस्तक में चित्रित किया है। 513 पृष्ठ की इस पुस्तक में 53 ग़ज़लकारों की 431 ग़ज़लें हैं।प्रत्येक रचनाकार के अंतर्जगत को बहिर्जगत से जोड़ने का प्रयास ही नहीं बल्कि एक व्यापक आयाम प्रदान करते हुए सुधी पाठकों से साक्षात्कार करने का अवसर भी दिया है। श्री देवमणि पाण्डे का आलेख "ग़ज़ल, दूसरों की ज़मीन पर अपनी खेती "बहुत से विवादों को सुलझाने में सक्षम है।

पुस्तक की विशेषता ये भी है कि इसके फ़लक में हमें दो स्तर दिखाई देते हैं एक सम्पादक का, दूसरा रचनाकारों का। दोनो ही स्तर पर ये काफ़ी व्यापक है। श्री रमेश कँवल ने इस आकाश को कुछ इस तरह रचा है कि कोई भी ग़ज़लकार उसमे अपने अपने आसमान को पहचान सकता है। इसीलिए वो न सिर्फ हर ग़ज़लकार के साथ खड़े नज़र आते हैं बल्कि हर ग़ज़ल में उनका चेहरा उभरता है।

ग़ज़ल फ़ारसी से उर्दू में और उर्दू से हिन्दी मे आयी है। ग़ज़ल ने अमीर खुसरो से लेकर क़ुली क़ुतुब शाह, वली दक्कनी, मीर, ग़ालिब, और फ़िराक़

गोरखपुरी से होते हुए दुष्यत कुमार तक आते आते लगभग 700 साल का लम्बा सफ़र तय किया है।जहाँ रवायती ग़ज़ल इश्क़, मुहब्बत, गुलो-बुलबुल और सुर्ख़ रुख़सारों की मोहताज थी, वहीं आज ग़ज़ल ने अपने दामन को विस्तृत किया है और दुनिया के हर विषय के सितारे आज की हिन्दी कही जाने वाली ग़ज़ल ने अपने दामन में टाँक लिए हैं। हिंदी ग़ज़ल ने उर्दू की प्रचलित बह्रों को तो आत्मसात किया है लेकिन क़दीमी रवायत से, एक सीमित विषय के दायरे की क़ैद से निकाल कर आज़ाद किया है। ग़ज़ल में हर शे'र अपने आप मे पूर्ण अर्थ लिए होता है। दो पंक्तियों में अपनी बात कही जा सकती है।यही ग़ज़ल की मक़बूलियत का कारण है।

प्रस्तुत पुस्तक केवल ग़ज़लों की ही पुस्तक नहीं है बल्कि एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है जिसकी भूमिका में लेखक श्री रमेश 'कँवल' का दर्द छलकता है। वो दर्द जो आज प्रत्येक भारतवासी का है जिसे लेखक के कलम ने बयान करने की हिम्मत की है।200 साल तक भारत को लूटने वाले मुग़ल शासकों का महिमामण्डन और हज़ारों वर्षों तक भारत पर राज्य करने वाले हिन्दू राजाओं की शौर्य गाथाओं का इतिहास के पन्नो से विलुप्त किये जाने का दर्द। वामपंथी इतिहासकारों द्वारा इतिहास को एक साजिश के तहत बदल देने का दर्द कलमकार के देशप्रेम की भावना को दर्शाता है।

स्वतन्त्र भारत का जयघोष करने वाले प्रथम प्रधान मंत्री नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को समर्पित इस पुस्तक में सभी कवि/ग़ज़लकारों के रंगीन चित्रों के साथ साथ भारत की अस्मिता, राष्ट्रीयता, आध्यात्मिकता, संस्कृति और गौरव के प्रतीक राष्ट्रीय स्मारकों और मंदिरों के भी रंगीन चित्र हैं। इंडिया गेट पर नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का गौरवशाली चित्र, लौहपुरूष सरदार बल्लभभाई पटेल की एकता की प्रतिमा, अयोध्या का श्री राम मंदिर, बनारस का काशी विश्वनाथ धाम, उज्जैन का महाकालेश्वर मंदिर, अमृतसर का स्वर्णमंदिर, कर्नाटक का होयसला मंदिर, कर्नाटक का ही मुरुदेश्वर शिव मंदिर, द्वारिकाधीश का मंदिर, राष्ट्रीय समर स्मारक नयी दिल्ली, नया संसद भवन, नेता जी सुभाष चन्द्र बोस

और मोदी जी का चित्र और अमृत महोत्सव की शान वन्दे भारत ट्रेन के रंगीन चित्रों की झांकियों ने पुस्तक में चार चांद लगा दिए हैं।

मुझे आशा ही नहीं विश्वास है कि ये पुस्तक साहित्य की दुनिया मे एक नया कीर्तिमान स्थापित करेगी। इति शुभम

मेरठ
12 नवम्बर, 2022

शुभकामनाओं सहित
डॉ. कृष्ण कुमार 'बेदिल'
मेरठ (उत्तरप्रदेश) 250002
मोबाइल 9410093943

शायरी के फ़न पर मुहब्बत के बूटे: अनिरुद्ध सिन्हा

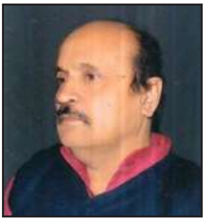

साहित्य में कुछ ऐसे नाम होते हैं जो अपने बेबाक़ी तूफ़ान से दरिया का रुख़ बदलने का हौसला रखते हैं। हौसला सिर्फ़ दौलत और ताक़त से प्राप्त नहीं होता। अपने जुनून की हद तक जाना होता है। धीरे-धीरे शोहरत की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए सितारों को छू लेने की करिश्माई हिम्मत भी पैदा होती है जिसके आँचल तले जीवन और यथार्थ के गीत लिखे जाते हैं। उसी का एक दिलचस्प पहलू है उन सितारों की रौशनी में सिर्फ़ जीवन और मुहब्बत की किताब ही पढ़ी जा सकती है। यही जीवन-यथार्थ सामाजिक प्रगतिशीलता के तत्वों को अपनाकर चलता है और अन्य प्रवृतियों के विरोध में उपस्थित होता है। सामाजिक संवेदना के अतिरिक्त अगर कोई कुछ रचता है तो वह फंटाशी और मनोरंजन है जिनका यथार्थ और जीवन से कोई संबंध नहीं होता। वैयक्तिक अनुभूति किसी भी स्थिति में साहित्यिक प्रतिमान नहीं मानी जा सकती।

रमेश 'कँवल' ने कुछ ऐसा ही करिश्मा कर दिखाया है। रमेश 'कँवल' सिर्फ़ शायरी करते ही नहीं बल्कि शायरी के साथ जीते भी हैं। समाज की राजनीतिक और आर्थिक महत्वाकांक्षाएँ प्रकट करके अपने चारों ओर फैली विसंगतियों और अवस्था पर क्षोभ प्रदर्शित करते हुए अपनी शायरी में नवीन कल्पना का समावेश करते हैं। आज जिन शक्तियों ने हमारे जीवन को स्पंदित कर रखा है, इनकी शायरी निदान के साथ उनकी व्याख्या करती है। इस अर्थ में इनकी शख़्सियत पर कलम उठाने से पहले बहुत देर तक सोचना पड़ता है आख़िर क्या लिखा जाए? इनकी मौलिक और संपादित कृतियों के अवलोकन के बाद यह निःसंकोच ही कहा जा सकता है। इनका साहित्यिक परिदृश्य काफ़ी विस्तृत है।आधुनिक ग़ज़लकारों में इनके लाखों प्रशंसक और समर्थक हैं।

वर्तमान समय में यह ज़ोर-शोर से प्रश्न उछाला जा रहा है जो बिल्कुल साहित्य निरपेक्ष है.... मसलन कविता की यथार्थता भिन्न है, और ग़ज़ल की यथार्थता भिन्न है। मेरे ख़याल से ऐसा समझने और कहने वालों को हिन्दी ग़ज़लों की ओर रुख़ करना चाहिए। दुष्यंत कुमार के साथ कई ऐसे ग़ज़लकार ग़ज़ल के क्षेत्र में आए, जिन्होंने अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार हिन्दी ग़ज़ल का प्रसार किया। जिनका अभी गंभीर मूल्याँकन बाक़ी है। इसी कड़ी में रमेश 'कँवल' द्वारा संपादित ग़ज़लों और तस्वीरों का संग्रह 'अमृत महोत्सव की ग़ज़लें' कई मायनों में अपना एक अलग महत्व रखता है। संग्रह में कुछ ऐसी भी महत्वपूर्ण और अचर्चित तस्वीरें हैं जिन्हें इतिहास की नाइंसाफ़ी का वर्षों-बरस दुख झेलना पड़ा है। स्वतन्त्रता के 75 वें वर्ष में 75 चुनिन्दा रदीफ़ों पर केन्द्रित 431 ग़ज़लें हैं। संग्रह स्वतंत्र भारत का जयघोष करनेवाले प्रथम प्रधानमंत्री (1943) नेता जी सुभाष चंद्र बोस को समर्पित है। स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान नेता जी देश के सर्वाधिक लोकप्रिय नेताओं में से एक थे लेकिन उन्हें उनका सम्मान देने/दिलाने में हमें 75 वर्ष लग गए। इंडिया गेट पर वह स्थान जहाँ अंग्रेज़ सम्राटों की मूर्तियाँ लगी होती थीं वहीं देश ने अपनी ग़लतियों को सुधारते हुए इस वर्ष नेता जी की प्रतिमा को स्थापित किया। प्रथम पृष्ठ पर नेता जी के सम्मान में कही गयी डॉ. नलिनी विभा 'नाज़ली' की नज़्म संग्रह को गंभीर मूल्याँकन करने के लिए प्रेरित करती है-

मादरे-हिंदोस्ताँ तुझको मेरे सज्दे हज़ार
तू ने बख़्शा क़ौम को नेता सुभाष इक जॉनिसार
हर ख़ुशी क़ुर्बान कर दी अपनी भारत के लिए
'नाज़ली' तक़्दीर दी उस ने ग़ुलामों की सँवार

इस नज़्म से ही संग्रह का रख रखाव और संपादक की सोच के सारे पृष्ठ खुल जाते हैं। ऐसी भी बात नहीं है कि संग्रह को सिर्फ़ एक रस में समेट दिया गया है। संग्रह को पढ़कर तरह-तरह के भावों की अन्य ग़ज़लों को देखकर जीवन की सोंधी महक से मन प्रसन्न हो जाता है। सारी ग़ज़लों में भाव, यथार्थ,

रूप-रस और लयात्मक ध्वनि का जो ख़ज़ाना बिखरा हुआ है इससे संपादक की दक्षता आश्चर्यजनक ढंग से प्रभावित करती है। ग़ज़ल जैसी नाज़ुक विधा के लिए वस्तुस्थिति का वर्णन करना या प्रतिबिम्बित करना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि शब्द संयोजन की अत्यंत मौलिक तकनीक और विधियाँ, जो वर्षों कठोर परिश्रम के बाद प्राप्त होती हैं। ग़ज़ल में तुक, छंद, अनुप्रास, शैली-भेद, रस, उपांग आदि की महत्वपूर्ण भूमिका भी आवश्यक हैं। अधिकांश ग़ज़लें नये शब्दों में रचित अर्थपूर्ण और पठनीय हैं। संभवतः ऐसी कृति मेरी नज़रों से आज तक नहीं गुज़री है। सचमुच में रमेश 'कँवल' इस दृष्टि से बधाई के पात्र हैं। प्रस्तुत संग्रह उच्चतम संवेदनशीलता, क्षमताओं और गुणों से युक्त है। सौंदर्यात्मक रंगों तथा अलंकारों का चमकीला पक्ष इसके सापेक्ष गुण हैं। लय अथवा अर्थ में किसी तरह की अस्पष्टता की गुंजाइश नहीं बनती है। इस संग्रह की आवश्यकता उन रचनाकारों के लिए महत्वपूर्ण हो जाती हो जो छंद की विधिवत जानकारी के साथ ग़ज़ल की बारीकियों की जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। संग्रह के पाठ से एक काव्यात्मक वातावरण तैयार तो होता ही है। संग्रह को पठनीयता की परम सीमा तक पहुँचना चाहिए।

अनिरुद्ध सिन्हा
गुलज़ार पोखर, (बिहार)-811201
mobile-7488542351

अमृत महोत्सव की ग़ज़लें:
भूपेंद्र सिंह 'होश'

भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने को "अमृत-महोत्सव" की संज्ञा प्रदान करना एक उत्कृष्ट प्रतीकात्मक चिन्तन सिद्ध हो रहा है। जिस प्रकार समुद्र-मंथन से "अमृत" की प्राप्ति हुई थी उसी प्रकार इतिहास-मंथन से अमृत-सम तथ्य उद्घाटित होते रहे हैं जिन्होंने हमें विदेश-प्रेरित व आरोपित, हीन-भावना तथा ग़ुलामी की मानसिकता के गहन अंधकार से बाहर निकालकर स्वाभिमान एवं आत्म-गौरव के प्रकाश से आलोकित किया है। तथाकथित इतिहासकारों ने हमारे उन्नत अतीत की सर्वांगीण उपलब्धियों-मूलतः विकसित सभ्यता व संस्कृति, आध्यात्मिक चिन्तन, वैज्ञानिक, गणितीय, भौगोलिक व स्थापत्य कला के क्षेत्र में अर्जित ज्ञान-की उपेक्षा करते हुए सिद्धांतहीन आक्रांताओं का जो महिमा-मण्डन किया है वह ऐतिहासिक भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा तथा अक्षम्य अपराध है। यहाँ तक कि उनके द्वारा हमारे शूरवीर एवं महान शासकों की तुलना में बर्बर लुटेरों को महानता का ख़िताब दिया गया है।

किन्तु अब इस परिवर्तित वातावरण में विदेशियों के स्थान पर हमारे राष्ट्र-नायकों का सम्मान व उनकी मूर्तियों की स्थापना तथा देव-स्थलों का सौंदर्यीकरण व विस्तार जैसे कार्य भारत की गरिमा को पुनर्स्थापित तथा समाज के स्वाभिमान को पुनर्जागृत करते प्रतीत हो रहे हैं।

इन बदली हुई परिस्थितियों में राष्ट्र-नायक सुभाष चंद्र बोस जी को समर्पित "अमृत महोत्सव की ग़ज़लें" में जीवन से जुड़े सहज शब्द मिटटी, पानी, आग, गगन व हवा [यानी पंचतत्व] जैसे 75 शब्दों का रदीफ़ के रूप में प्रयोग एक अभिनव प्रयास है। साधुवाद इस चिन्तन को।

मैं बधाई देते हुए इसकी अभूतपूर्व सफलता हेतु शुभकामनाएँ अर्पित करता हूँ।

जयहिंद... वन्दे मातरम्।

भूपेन्द्र सिंह 'होश'

लखनऊ

मोबाइल: 7355716884 / 9415002346.

एक संग्रहणीय दस्तावेज़: शरद तैलंग

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आज के युग में 'ग़ज़ल' की लोकप्रियता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है। पत्र–पत्रिकाओं में ग़ज़लों की बहुतायत इस बात को बल प्रदान करती है। आज हर दूसरा रचनाकार, चाहे वह किसी भी विधा का हो, ग़ज़ल कहने का प्रयास अवश्य करता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है और प्रत्येक क्षेत्र में निरंतर बदलाव की प्रक्रिया जारी है। ग़ज़ल भी जब अपने पारंपरिक रूप से परिवर्तित होकर आम आदमी की समस्याओं का प्रतिनिधित्व करने वाली उसकी सहायक बनी, तबसे इसे अपनाने वालों ने इसे शीर्ष पर बैठा दिया है। आज भले ही इस विधा के प्रमुख अंगों को बिना समझे बूझे भी ग़ज़ल कहने वालों की कमी नहीं है और गुरु शिष्य परंपरा लुप्त होती नज़र आ रही है, लेकिन इसके बावजूद ग़ज़ल के चाहने वालों में निरंतर बढ़ोत्तरी हो रही है।

देश की स्वतन्त्रता के अमृत महोत्सव के अवसर पर साहित्यकार रमेश कँवल जी द्वारा 75 चुनिन्दा रदीफ़ों पर देश के विभिन्न ग़ज़लकारों की ग़ज़लों के इस संकलन की विशेषता मुझे यह दिखाई देती है कि ग़ज़लकार को अक्सर ग़ज़ल कहने में पहले रदीफ़ और क़ाफ़िये का निर्धारण करने में कुछ कठिनाई महसूस होती है। रमेश कँवल जी ने उनकी यह समस्या कुछ अर्थों में हल कर दी है। रदीफ़ का चयन जिस तरह मानव की जीवन यात्रा से संबन्धित है, वह एक अनूठा और नया प्रयोग है। संभवत: इसीलिए रचनाकारों ने अनेक रदीफ़ों पर अपनी कलम चलाई है और इनका उपयोग एक लंबे समय तक अनेक रचनाकार करते रहेंगे। रमेश कँवल जी की रचनाकारों के लिए यह अनुपम भेंट है।

यह संकलन मात्र एक ग़ज़ल संग्रह न होकर हमारी विरासत, देश के इतिहास, स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु हमारे राष्ट्र प्रेमियों के योगदान, विज्ञान, धर्म,

भक्तिरस और कुछ अनछुए तथ्यों की जानकारी भी प्रदान करता है, जो एक संग्रहणीय दस्तावेज़ है और गागर में सागर दृष्टिगोचर होता है।

देश के इतने अधिक नए और पुराने रचनाकारों को एक जगह एकत्रित करने वाले इस अद्भुत संकलन के लिए आदरणीय रमेश कँवल जी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

शरद तैलंग

गायक, व्यंग्यकार और ग़ज़लकार

240 माला रोड (हाट रोड)

कोटा जं 324 002 राजस्थान

मोबाइल: 9829903244

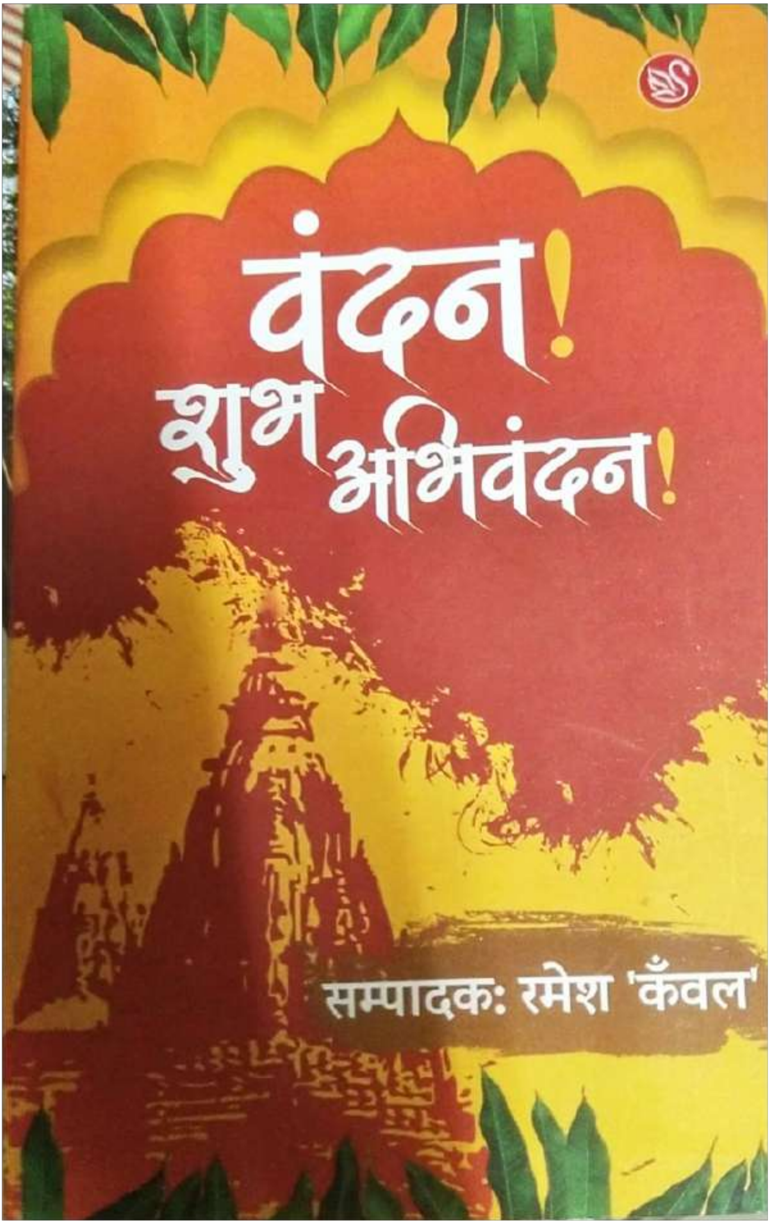
वंदन!
शुभ अभिवंदन!
सम्पादक: रमेश 'कँवल'

सनातन संस्कृति के आधार देवी-देवताओं को नमन: डॉ. कृष्णकुमार 'नाज़'

आज भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म पर चारों ओर से हमले हो रहे हैं। ऐसे घटाटोप अँधेरों में अगर कोई मशाल जलती है, तो मशाल थामने वाले हाथ चूम लेने को जी चाहता है। काव्य-साहित्य के क्षेत्र में सांस्कृतिक और धार्मिक जागरण की इस मशाल को थामा है आदरणीय रमेश कँवल जी ने। मैंने कभी एक शे'र कहा था-

सबको साथ में लेकर चलना कितना मुश्किल है ऐ 'नाज़'
एक क़दम आगे रखता हूँ इक पीछे रह जाता है

लेकिन, कँवल जी ने इस मुश्किल को भी अपने परिश्रम और लगन से आसान कर दिखाया। वह कोई न कोई नया काम करने के आदी हैं। अकेले चलते हैं और फिर लोग उनके साथ स्वयं ही जुड़ते चले जाते हैं और क़ाफ़िला बन जाता है।

'हिंदुस्तानी अंग्रेज़ों' और 'आधुनिक जयचंदों' ने जिस प्रकार भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म के इतिहास को गुमराह किया है, वह किसी से छिपा नहीं है। ऐसे लोगों के कुत्सित प्रयास आज भी जारी हैं। यह अलग बात है कि अब उनकी पोल खुल रही है और उन्हें निरंतर निरादर का सामना भी करना पड़ रहा है।

मैं देखता हूँ कि कई लोग भारतीय संस्कृति के आधार महापुरुषों-भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण, भगवान श्रीशंकर और सनातन धर्म के पवित्र ग्रंथों-रामायण, रामचरितमानस, श्रीमद्भगवद्गीता की आलोचना करते-करते महाकवि वाल्मीकि, आचार्य तुलसीदास जी और महर्षि व्यास जी की निंदा पर उतर आते हैं। जबकि इन्हें यह भी मालूम है कि इनकी भी अर्थी के पीछे चलने वाले लोग पवित्र शब्द 'राम नाम सत्य है' ही उच्चारित करेंगे। ये इतना भी समझने को

तैयार नहीं हैं कि आज हज़ारों वर्ष बाद भी इन महापुरुषों में श्रद्धा व्यक्त करते हुए लोग इनके आचरण को स्वयं में उतारने का प्रयास करते हैं।

अब समय आ गया है कि इन 'घर के भेदियों' से सतर्क रहा जाए और इनको इन्हीं की भाषा में जवाब दिया जाए।

सनातन संस्कृति 'वसुधैव कुटुंबकम्' की धारणा को आत्मसात कर सबको साथ लेकर चलती है। लगता है, उसकी यह अच्छाई ही आज उसकी शत्रु बन बैठी है। चंद बेज़मीर लोग आज देवी-देवताओं पर कीचड़ उछालकर स्वयं को विश्व का सर्वश्रेष्ठ विचारक साबित करने की होड़ में लगे हैं। ऐसे लोगों को समाज तो क्या, ख़ुद उनकी संतानें भी याद नहीं रखेंगी। समाज तो दुत्कार कर उन्हें विस्मृत कर ही देगा। मैंने 'अधम-निकम्मे लोग' शीर्षक से कभी एक गीत लिखा था-

संस्कृति की भर्त्सना कर रहे अधम-निकम्मे लोग
पूर्वजों की निंदा करना है जिनका उद्योग

कभी राम की करें बुराई, कभी कृष्ण को कोसें
दूषित मन में दुर्भावों को पल-पल पालें-पोसें
कभी राष्ट्र को मिला न इनसे रत्तीभर सहयोग
संस्कृति की भर्त्सना कर रहे अधम-निकम्मे लोग

वाल्मीकि हों या हों तुलसी, इनको कभी न भाते
रामायण में, रामचरितमानस में दोष बताते
ऊपर से तो स्वस्थ दिख रहे, भीतर लाखों रोग
संस्कृति की भर्त्सना कर रहे अधम-निकम्मे लोग

सकल विश्व ने कर्मयोग की शिक्षा जिससे पाई
उस भगवद्गीता में कीड़े ढूँढें ये अन्यायी
उसी डाल को काटें, जिसका करते हैं उपयोग
संस्कृति की भर्त्सना कर रहे अधम-निकम्मे लोग

राम, कृष्ण, गौतम, नानक की संतानो अब आओ
अपने दिव्य महापुरुषों का इनसे मान बचाओ
साम-दाम का, दंड-भेद का, तुम भी करो प्रयोग
संस्कृति की भर्त्सना कर रहे अधम-निकम्मे लोग

मुझे इस मौक़े पर ज़फ़र गोरखपुरी साहब का बड़ा ख़ूबसूरत शे'र याद आ रहा है-

कितनी आसानी से मशहूर किया है ख़ुद को
मैंने अपने से बड़े शख़्स को गाली देकर

कँवल जी ने अपने इस संकलन 'वंदन! शुभ अभिवंदन!!' में माँ सरस्वती जी, भगवान श्रीगणेश, भगवान श्रीशिव, भगवान श्रीराम, श्रीहनुमान, भगवान श्रीकृष्ण, भगवान श्रीबलराम, ईश्वर महिमा, माँ आदि की स्तुतियों को स्थान दिया है। सभी कवियों ने अपने-अपने ढंग से उन पूर्वजों का स्मरण किया है, जो सनातन संस्कृति के आधार हैं। पुस्तक सनातन संस्कृति के वर्तमान संरक्षकों-प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, देश के गृहमंत्री श्री अमित शाह जी और उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश की राह पर चलाने वाले मुख्यमंत्री योगी श्री आदित्यनाथ जी को समर्पित की गई है।

पुस्तक प्रकाशन के शुभ अवसर पर मैं आदरणीय रमेश कँवल जी को बधाई भी देता हूँ और शुभकामनाएँ भी प्रस्तुत करता हूँ। साथ ही माँ सरस्वती से प्रार्थना करता हूँ कि वह इनकी साहित्यिक-यात्रा और सनातन संस्कृति में आस्था की प्रबलता को इसी प्रकार बनाए रखें।

डॉ. कृष्ण कुमार 'नाज़'
9/3, लक्ष्मीविहार, हिमगिरि कालोनी
काँठ रोड, मुरादाबाद-244001
मो. 99273-76877
email: kknaaz1@gmail.com

अटल अविचल आस्था की अनन्य अभिव्यक्तियाँ: द्विजेन्द्र द्विज

आदर्श रूप में प्रतिष्ठित श्रेष्ठ जीवन मूल्यों व सद्गुणों की रचनात्मक अभिव्यक्ति ही संस्कृति है। ये जीवन मूल्य मानव जीवन में पग-पग पर एक संबल की भूमिका निभाते हैं, हमारी अस्मिता आशा और आत्मविश्वास को निरंतर बल देते हैं। वैश्वीकरण के सम्मुख विभिन्न संस्कृतियों के प्रभाव में सतत सनातन सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन भी एक चुनौती की तरह हमारे सामने है। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए जाने माने शायर एवं यशस्वी संपादक श्री रमेश कँवल साहिब ने हमारे समय के बहुत से गुणी रचनाकारों से इस आशय की रचनाओं के लिए आग्रह किया जिसका सुखद परिणाम प्रस्तुत संकलन वंदन! शुभ अभिवंदन!! है। गंगा-जमुनी सांस्कृतिक विरासत के सानिध्य में रमेश 'कँवल' साहिब लगभग 50 वर्षों से हैं और इन्होंने इस परम्परा से बहुत कुछ ग्रहण किया है। इसी पृष्ठभूमि में यह संकलन सनातन सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन का अभिनव प्रयास है।

यह विशाल संकलन आस्था व प्रार्थना के रूप में शुभ्र भावनाओं की अप्रतिम पुष्पांजलि है। 'सनातन सांस्कृतिक परिवेश के संरक्षण, संवर्धन एवं यशकीर्तन के इस अभिनव काव्यमय प्रयास वंदन! शुभ अभिवंदन!! में संकलित समस्त मनभावन रचनाएँ सनातन संस्कृति व हिन्दू धर्म के समस्त आराध्य देवी-देवताओं के यशोगान को समर्पित, आस्था, विश्वास एवं श्रद्धा की विनम्र अभिव्यक्तियाँ हैं।

यह संकलन हमारे समकालीन भक्ति साहित्य का महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है जिसमें गीत, ग़ज़ल, दोहा, कवित्त, भजन और माहिया जैसी विभिन्न छांदसिक विधाओं में निरंतर सृजनरत डॉ. कृष्णकुमार नाज़, डॉ. देवेंद्र मांझी, रमेश

‘कँवल’, डॉ. ब्रह्मजीत गौतम, अशोक अंजुम, विज्ञान व्रत, डॉ.नालिनी विभा ‘नाज़ली’, नवीन सी चतुर्वेदी, राजमूर्ति सौरभ, हिमकर श्याम, रवि खंडेलवाल, डॉ. महेन्द्र कुमार अग्रवाल, प्रेम रंजन अनिमेष, हरबंस सिंह सेठी, मीना भट्ट सिद्धार्थ व आनंद पाण्डेय तन्हा जैसे अन्य बहुत से उत्कृष्ट हस्ताक्षरों की श्रेष्ठ रचनाएँ संकलित हैं। अटल, अविचल आस्था की अनन्य अभिव्यक्तियों के अभूतपूर्व संकलन के इस पावन प्रयास के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक साधुवाद के पात्र हैं।

पंच चामर छंद में रावणकृत “शिव-ताण्डव स्तोत्र” का उसी बह्‌-वज़न (छन्द/मात्रा-क्रम) में ज़ाहिद अबरोल साहिब द्वारा उर्दू काव्यानुवाद भी अप्रतिम बन पड़ा है। ज़ाहिद अबरोल साहिब उर्दू साहित्य के जाने माने हस्ताक्षर हैं और ग़ज़ल नज़्म ड्रामा, तनक़ीद और अनुवाद जैसी विधाओं को समर्पित हैं। इसी श्रेणी में विकास सोलंकी द्वारा श्री शिवपंचाक्षर स्त्रोत्रम् के अनुवाद भी उल्लेखनीय है।

द्वेष व वैमनस्य के घटाटोप अँधेरे को शांति, समन्वय सामंजस्य और सौहार्द की उज्ज्वल किरणों से चीरने की शुभ्र भावना से ओतप्रोत यह सशक्त संकलन भक्ति साहित्य की श्रेष्ठ रचनावलियों में अपना एक अलग मुक़ाम हासिल करेगा। ये रचनाएँ अपनी सम्पूर्ण नव्यता के साथ जन-जन के चेतन, अवचेतन, मस्तिष्क हृदय एवं वाणी में वास करने में समर्थ रचनाएँ हैं, जिनका विशाल जनमानस द्वारा निश्चय ही स्वागत होगा।

परमात्मा (ईश्वर), विभिन्न देवी देवताओं, और ‘माँ’ के प्रति अगाध श्रद्धा व असीम भावप्रवणता की अप्रतिम झलक भी इस संकलन का वैशिष्ट्य है। उर्दू ज़ुबान में अपनी चिरंतन संस्कृति की प्रचुर झलकियाँ भी यहाँ देखने को मिलेंगी।

मुझे इस विशाल संकलन की अद्वित्तीय रचनाओं को पढ़ने का सुअवसर प्रदान करने के लिए यशस्वी रचनाकार व संपादक आदरणीय रमेश कँवल साहिब का मैं हृदय की अतल गहराइयों से आभार प्रकट करता हूँ।

कुमार अभिषेक

अनंत कोटि मंगलकामनाओं सहित,

सादर,

दशहरा (विजय दशमी)
दिनांक: 5 अक्तूबर, 2022

द्विजेन्द्र द्विज
धर्मशाला (हि.प्र.)
संपर्क:94184 65008

एक अनोखा अद्भुत कार्य: कृष्ण कुमार प्रजापति

"वंदन! शुभ अभिवंदन!! का प्रकाशन कर बड़े भैया "रमेश कँवल जी "ने एक अनोखे, अदभुत कार्य को ख़ूबसूरत अंजाम दिया है।

इक घोर नास्तिकता के अंधकार में भटकते मानव जीवन को कुछ देर के लिए रोककर मंत्र मुग्ध कर देने वाली गीतों, ग़ज़लों से अभिभूत कर देने को आतुर "वन्दन! शुभ अभिवंदन!!" का योगदान अतुलनीय है। ऐसे सत्प्रयास के लिए अदम्य साहस की आवश्यकता पड़ती है, जो कि "भाई कँवल जी "में कूट कूट कर भरी पड़ी है। इसके लिए उन्हें किसी प्रकार की अलग से कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं है, खेल खेल में वो ऐसा ऐसा कार्य कर जाते हैं जो कि एक साहित्यकार अपने जीवन में सोचता रह जाता है। "कँवल जी" अपने सपनों को मूर्त रूप देने में क़तई देर नहीं लगाते, ये सब उनपर प्रभुकृपा नहीं तो और क्या है।

और तो और एक कार्य अभी सम्पन्न हुआ चाहता है कि कँवल जी फिर एक मील का पत्थर लगाने चल पड़ते हैं।

"इंसानियत ही सारे मजाहिब का है निचोड़,
जो भी हो आपका, ये 'कँवल' का ख़याल है"

भाई कँवल आप, वंदनीय हो, अभिनंदनीय हो, सदा यशस्वी रहें,

इसी शुभकामना के साथ

आपका

कृष्ण कुमार प्रजापति

943704468

वंदन! शुभ अभिवंदन!! प्राक्कथन

लगभग 50 वर्षो से उर्दू की सोहबत में हूँ। कहा जाता है उर्दू गंगो-जमुनी तहज़ीब की ज़बान है। अगर कोई ये कहता है कि ये मसलमानों की ज़ुबान है; एक क़ौम की भाषा है तो यह उचित नहीं-ऐसा ही कहा जाता है। उर्दू अदब और शायरी में फ़िराक़ गोरखपुरी, आनंद नारायण मुल्ला, चकबस्त, गोपी चन्द नारंग, जोश मलसियानी, अर्श मलसियानी, नरेश कमार शाद, प्रेम वार बर्टनी, कृष्ण बिहारी नूर, कृष्ण चंदर, मनचंदा बानी, हैरत फ़र्रुखाबादी, इत्यादि अनेक शायर-अदीब हुए हैं जो उर्दू के महबूब शायर रहे हैं। इन्हीं सब बातों को सुनते समझते मैं भी हिन्दू-मुस्लिम न करने वालों शायरों/शाइरात के साथ शे'री नशिस्तों और मुशायरों में शिरकत करता रहा। मझे अच्छा लगता जब मेरे उर्दू (की लिपि) लिखने पढ़ने की सलाहियत के कारण उनकी नज़रों में मेरे लिए एक आदर का भाव दिखता था। यह सही है कि उर्दू सिर्फ़ मुसलमानों की भाषा नहीं है लेकिन मैंने इस्लाम के अनूयायियों से बहत कछ सीखा।

उर्दू को इस्लाम की ज़ुबान नहीं होने का दावा करने वाले साथी जब आदाब न कहकर अस्सलामवालेकुम कह कर जलसों को मुखातिब करते तो इस्लाम के प्रति उनका आदर भाव झलकता था। नशिस्तों/ मुशायरों का आगाज़ क़ुरान ख़्वानी, नात या हम्द से करने में उनकी इस पंथ के प्रति प्रतिबद्धता झलकती थी। अज़ान होने पर अपनी वाणी को विराम देने एवं नमाज़ के वक़्त एक वक़्फ़ा (अंतराल देना) इस्लाम के प्रति उनकी श्रद्धा और प्रेम को दर्शाता था। ये सब बातें उनसे मैंने सीखी। मैंने उर्दू को इस्लामिक रिवाज़ों के दायरे में समेटते रहने का जज़्बा उनसे सीखा। उर्दू अकादमी में नमाज़ के लिए विशेष स्थान निर्धारण बताता है कि इस्लाम का उर्दू में कितना दख़्ल है।

लेकिन मैं सोचता हूँ हम हिन्दू लोग उर्दू ज़ुबान में अपनी संस्कृति की कुछ

झलकियाँ क्यों नहीं दिखा सके। उन जलसों/ नशिस्तों में हम वन्दे मातरम् या भारत माता की जय बोलने का साहस क्यों नहीं जुटा सके। क्यों परहेज़ करते रहे वाणी वंदना या श्री गणेश वंदना से उन साहित्यिक गोष्ठियों का शुभारम्भ करने में।

उर्दू की ख़िदमत में लगे रहने वाले इस्लाम के अनुयायियों की अपने धर्म के प्रति यही असीमित प्रतिबद्धता इस किताब की आधारशिला बनी। हम्द और नाःत की बजाय ईश्वर और देवी-देवता वंदना से काव्य गोष्ठियों का शुभारंभ करने की ललक ने मझे कवि साथियों से इन्हीं सांस्कतिक मूल्यों के संवर्धन के लिए देवी-देवताओं का गुणगान करने वाले गीत/ ग़ज़ल/भजन/कविता इत्यादि भेजने का आग्रह किया और इसका सुखद परिणाम आपके सामने है। माँ सरस्वती (वाणी वंदना), श्री गणेश, श्री शिवजी, श्री राम, श्री हनुमान, श्री कृष्ण, श्री बलराम, देवी दुर्गा, ईश्वर और माँ पर 50 से ज़्यादा कवि मित्रों की रचनाएँ प्रस्तुत करने में मैं गर्व और प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। जन्माष्टमी के अवसर पर मित्रों ने फेसबुक पर श्री कृष्ण से सम्बंधित अनेक रचनाएँ पोस्ट कर इस अभिनव संकलन में मनोवांक्षित सामग्री का समावेश करने में मेरा सहयोग किया। हरबंस सिंह सेठी, स्वधा रविन्द्र उत्कर्षिता, सुनीता लूला, राजमूर्ति सौरभ, उमंग सरीन, अनुराज विभा देवी, डॉ. जगदीश नारायण गुप्त इत्यादि कवि / कवयित्रियों की श्रीकृष्ण पर सुन्दर कवितायें शामिल करने में मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। मैं उनके प्रति आभार निवेदित करता हूँ।

मदर्स डे पर सोशल मीडिया पर प्राप्त माँ से सम्बंधित कविताओं को मैंने ईश्वर के बाद विशेष स्थान दिया है। सभी देवी देवताओं का वास माँ में होता है और माँ ही ईश्वर का प्रतिरूप है। प्रमोद रामावत ‘‘प्रमोद’, कुंदन आनन्द, रमेश ‘प्रसून’, जसप्रीत कौर फ़लक, महेश जोशी ‘‘अनल’, डॉ. नलिनी विभा ‘‘नाज़ली’, इंदु भूषण कोचगवे, आरती आलोक वर्मा, विज्ञान व्रत, गोरख प्रसाद मस्ताना, सोनी सुगंधा इत्यादि की रचनाओं ने माँ के प्रति भरपूर श्रद्धा और प्रेम निवेदित किया है।

इस काव्य संकलन के प्रकाशन से अगर हमें अपने सनातन मूल्यों को पुन:आत्मसात करने और सांस्कृतिक परिवेश के संवर्धन की प्रेरणा मिलती है तो मैं “वंदन शुभ अभिवंदन’ के प्रकाशन को सार्थक समझूँगा। आपकी बहुमूल्य राय की प्रतीक्षा रहेगी।

पटना

दिनांक: 26 सितम्बर, 2022

(शारदीय नवरात्र प्रारंभ)

स्नेहाकांक्षी

रमेश ‘कँवल’

संपर्क-878 976 1287

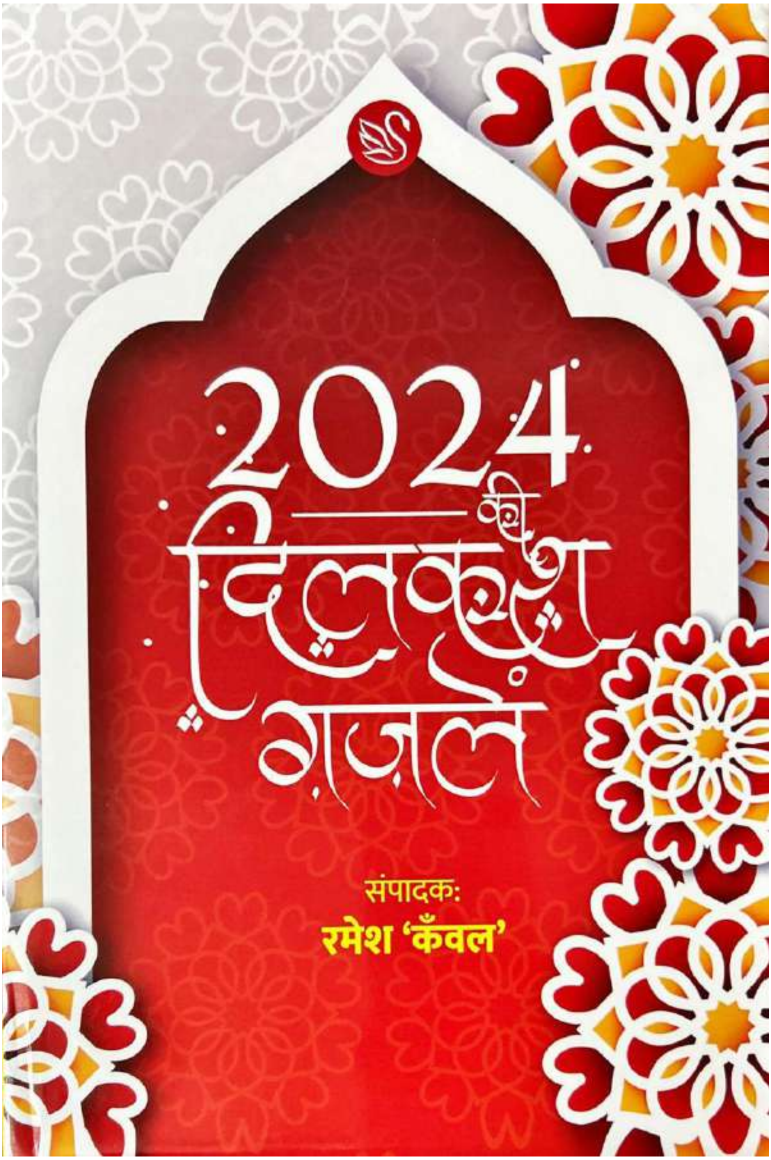
2024 की दिलकश ग़ज़लें
संपादक:
रमेश 'कँवल'

दिलकश ग़ज़लों का अनुपम संकलन: हिमकर श्याम

'2024 की दिलकश ग़ज़लें' बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी, पटना के चेयरपर्सन रमेश कँवल द्वारा संकलित एवं संपादित एक अनुपम ग़ज़ल संकलन है। रमेश कँवल एक समर्थ ग़ज़लकार ही नहीं, शायरी के प्रति निष्ठा रखनेवाले कुशल संपादक भी हैं। इनके द्वारा संपादित कई किताबें चर्चित रही हैं। जिनमें 'अमृत महोत्सव की ग़ज़लें', 'एक रुक्नी अनूठी ग़ज़लें', 'इक्कीसवीं सदी के इक्कीसवें साल की बेहतरीन ग़ज़लें' और '2020 की नुमाइंदा ग़ज़लें' उल्लेखनीय हैं।

नवीनतम किताब '2024 की दिलकश ग़ज़लें' हर दृष्टि से एक उम्दा संकलन है। बेहतरीन संपादन है। उत्कृष्ट शायरी है। कुल 710 पृष्ठों की इस किताब में 95 ख्यातिलब्ध ग़ज़लकारों की 876 ग़ज़लें संकलित हैं। श्वेतवर्णा प्रकाशन से छपी इस किताब का डिजाइन, पृष्ठसज्जा, रंग-रूप और छपाई आकर्षक है। पुस्तक पर की गयी अथक मेहनत का आभास इसे हाथ में लेते ही हो जाता है। ग़ज़लों की अनुक्रमणिका दो प्रकार से बनाई गई है। पहली अनुक्रमणिका में ग़ज़लों के मतला के मिसरा-ए-उला को वर्णक्रमानुसार सजाया गया है तथा दूसरी अनुक्रमणिका में ग़ज़लकारों के नाम वर्णक्रम में व्यवस्थित कर रखे गए हैं।

बह्र ग़ज़ल की एक अनिवार्य विशेषता है। इसे ग़ज़ल की रूह भी कहा जा सकता है। जिस लय पर गज़ल कही जाती है या जिस अरकान पर गज़ल लिखी जाती है उसे बह्र कहते हैं। इस किताब में 2024 को दृष्टि में रखकर 24 लय समृद्ध बह्रों में ग़ज़लें कहीं गई हैं। यशस्वी ग़ज़लकार ओम प्रकाश खींची दिल सीकरी ने उन 24 बह्रों का विस्तार से वर्णन किया है। साथ ही उन बह्रों में कही गई ग़ज़लों और फ़िल्मी तरानों का उदाहरण देकर समझाया गया है। संकलन की ग़ज़लें विविधताओं से परिपूर्ण हैं। ग़ज़लों का इंद्रधनुषी रंग प्रभावित करता है। इन ग़ज़लों में प्रेम, समाज, मानवीय वेदना, राजनीति-सब कुछ हैं। इनमें

यथार्थ बोधक तत्वों की प्रचुरता है, जिसे पढ़ कर अनुभूति की गहराई के साथ अभिव्यक्ति की ताज़गी का अहसास होता है।

यह संकलन कई मायनों में अनूठा भी है। इसमें सम्मिलित शायरों और शाइरात के रंगीन फ़ोटो प्रकाशित हैं। साथ ही उनके जीवन साथी के साथ रंगीन युगल फ़ोटो और पत्नी/पति को समर्पित शे'र भी दिए गए हैं। संकलन के अन्त में ग़ज़लकारों का परिचय-विवरण दिया गया है। सभी ग़ज़लकार एक से बढ़कर एक हैं। कोई किसी से कमतर नहीं हैं। गज़ल कहने का सब का अंदाज़ और तेवर जुदा है। कुल मिला कर यह एक संग्रहणीय ग़ज़ल संग्रह है जिसे पढ़ कर गज़ल प्रेमियों को आनंद की अनुभूति होगी।

दिलकश ग़ज़लों से लैस यह संग्रह संपादक के कठिन श्रम, श्रद्धा एवं समर्पण का प्रतिफल है। इस अनूठे संकलन प्रकाशन लिए रमेश कँवल बधाई के पात्र हैं। 1299/-रुपये मूल्य की यह किताब ग़ज़ल-प्रेमियों के लिए एक अनमोल उपहार है।

ग़ज़ल संग्रह: 2024 की दिलकश ग़ज़लें
संकलन एवं संपादन: **रमेश कँवल**
प्रकाशक: श्वेतवर्णा प्रकाशन
पृष्ठ: 710
मूल्य: 1299/-